राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

जून - 2025

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

बिकती है दुनिया , खरीदार होना चाहिए!

अमेरिकी इतिहास की सबसे बड़ी रिश्वत!

विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा

आगामी २७ जून को...

पहली बार भारतीय के नाम!

अमेरिका में अकादमिक शोध संस्थान...

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 10 • अंकः 03 • मुंबई • जून-2025

मुद्रक-प्रकाशक, संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing, Near Shahad Station, Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

कुंभ मेले में शाही स्नान नहीं, अमृत स्नान? 05
महाराष्ट्र, केरल अलर्ट पर... 06
गपशप... 08
सबसे बड़ी रिश्वत! 12
पकवान 18
शादी में म्यूजिकल फेरे का ट्रैंड 20
'हज' और 'ईद-उल-अजहा' का महत्व... 22
राशिफल 24
भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा : 26
सिनेमा 29
हैप्पी हार्मोन्स को कैसे बढ़ाये... 30
CUNY, न्यूयॉर्क ने महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत के... 32
'आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस का १२वां संस्करण पूरी दुनिया में मनाया गया 34
कीट ने भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल के साथ किया... 35
मन्दी 38
मेला 42
देश-विदेश 54
हींग की खेती... 56

सुविचारः

कभी-कभी लोग मीठी बातें करके आपको सम्मान नहीं, धोखा दे रहे होते हैं।

बदलता मौसम और बिगड़ता संतुलन

वर्तमान समय में पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की गंभीर समस्या से जूझ रही है। मौसम का अचानक बदलना, वर्षा का असामयिक होना, अत्यधिक गर्मी या सर्दी, तूफान, बाढ़ और सूखे की घटनाएँ अब सामान्य बात होती जा रही हैं। यह सब प्राकृतिक संतुलन के बिगड़ने का परिणाम है, जिसके लिए मुख्य रूप से मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। प्राकृतिक संतुलन का अर्थ है–प्रकृति के विभिन्न घटकों जैसे वायु, जल, मृदा, वनस्पति, पशु-पक्षी और जलवायु के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन। जब यह संतुलन बना रहता है, तो जीवन चक्र सामान्य रूप से चलता है। किंतु जब मानव स्वार्थवश अंधाधुंध विकास करता है, वनों की कटाई करता है, कारखानों से प्रदूषण फैलाता है और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करता है, तो यह संतुलन टूट जाता है। प्रचंड मौसमीय तांडव ने न केवल जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया बल्कि एक बार फिर यह संकेत दे दिया कि अब मौसम चक्रों में स्थायित्व नहीं रहा और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से हमारे सिर पर मंडरा रहा है। एक ओर जहां लोगों को चिल चिलाती गर्मी से थोड़ी राहत मिली, वहीं दूसरी ओर भीषण बारिश और तेज हवाओं ने जनजीवन को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया। मई महीने में जब उत्तर भारत ४४-४५ डिग्री सेल्सियस की झुलसाने वाली गर्मी के लिए जाना जाता है, ऐसे समय में अचानक ऐसे तूफान, तेज बारिश और ओलावृष्टि जैसे दृश्य आमतौर पर मानसून के चरम काल में भी दुर्लभ होते हैं। कि नोएडा में एक निर्माणाधीन बिल्डिंग की क्रेन गिरने से दो लोग घायल हो गए। उत्तर भारत के अन्य भागों, जम्मू, पंजाब, हिमाचल, उत्तराखंड, राजस्थान में भी यह तूफान तबाही लेकर आया। जगह-जगह सैंकड़ों पेड़ उखड़ गए, जिससे कई जगहों पर सड़कों का संपर्क टूट गया। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में बादल फटने की घटना भी सामने आई, जहां सात वाहन बह गए और कई अन्य क्षतिग्रस्त हो गए। पंजाब में वर्षाजनित हादसों में कुछ लोगों की मौत की भी पुष्टि हुई। खेतों में काम कर रहे किसान तेज आंधी की चपेट में आ गए। इससे पहले २१ मई को भी शाम के समय अचानक दिल्ली-एनसीआर का मौसम बदल गया था और अचानक बदले मौसम के बीच भीषण आंधी-तूफान और ओलावृष्टि ने जमकर तबाही मचाई थी। तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि नोएडा, गाजियाबाद सहित देश के कई राज्यों में लोगों के लिए मुसीबत बन गया था।

इस साल मई महीने की शुरुआत ही इसी प्रकार के अप्रत्याशित मौसमी बदलावों के साथ हुई थी। २ मई की सुबह दिल्ली-एनसीआर सहित उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में तेज आंधी, बारिश और तूफान जैसी स्थिति बनी थी। दिल्ली में उस दिन ७८ किमी प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चली थी और बारिश के साथ भारी नुकसान हुआ था। पेड़ उखड़ गए थे, बिजली की आपूर्ति बाधित हुई थी और तापमान में अचानक गिरावट दर्ज की गई थी। हालांकि उस समय भी लोगों को थोड़ी राहत महसूस हुई थी लेकिन इस बार मई के अंत में आया यह तूफान कहीं अधिक गंभीर और व्यापक प्रभाव वाला था। विशेषज्ञों का मानना है कि यह सब केवल सामान्य मौसमी उतार-चढ़ाव नहीं हैं बल्कि जलवायु परिवर्तन के गहरे संकेत हैं। तेजी से बढ़ता शहरीकरण, औद्योगीकरण और पर्यावरणीय असंतुलन अब मौसम चक्रों को अस्थिर कर रहा है। 'शहरी हीट आइलैंड' प्रभाव के चलते रात के तापमान में गिरावट नहीं होती और वातावरण की ऊष्मा बढ़ती जाती है। कंक्रीट, एस्फाल्ट और अन्य मानव निर्मित सतहें सूरज की ऊष्मा को अवशोषित कर लेती हैं और धीरे-धीरे उसे छोड़ती हैं, जिससे रात में भी वातावरण गर्म बना रहता है। २ मई की सुबह दिल्ली का न्यूनतम तापमान २२.४ डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जबकि सामान्यतः ऐसी बारिश के बाद तापमान १८-२० डिग्री तक गिर जाता है। वर्तमान स्थिति में सरकार, वैज्ञानिक समुदाय और आम नागरिकों के लिए यह एक गंभीर चेतावनी है।

बदलते मौसम और बिगड़ते संतुलन की समस्या केवल किसी एक देश या समुदाय की नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति की है। यदि अभी भी हमने सचेत कदम नहीं उठाए, तो आने वाली पीढ़ियों को इसका गंभीर खामियाज़ा भुगतना पड़ेगा। अतः हमें आज ही से प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना होगा और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देनी होगी। अब समय आ गया है कि हम जलवायु परिवर्तन को केवल वैज्ञानिक बहस का विषय न मानें बल्कि इसे सार्वजनिक नीति और व्यक्तिगत जीवनशैली में भी प्राथमिकता दें। भारत को अब मौसम विज्ञान, कृषि, जल संरक्षण, ऊर्जा नीति और शहरी नियोजन को आपस में जोड़ते हुए एक समग्र रणनीति बनानी होगी। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भी अपनी रणनीतियों को अद्यतन करना होगा। अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों की जलवायु विशेषताओं के अनुसार अलग योजनाएं बनानी होंगी। यदि आने वाले समय में ऐसी घटनाएं बढ़ती हैं तो इससे न केवल हमारी जीवनशैली प्रभावित होगी बल्कि भारत की कृषि, अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय संतुलन भी खतरे में पड़ सकता है। इसलिए हमें सतर्क रहना होगा, तैयारी करनी होगी और प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलना होगा, तभी हम सुरक्षित और टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं। ■

कुंभ मेले में शाही स्नान नहीं, अमृत स्नान? मुख्यमंत्री करेंगे तारीखों की घोषणा...

प्रयागराज के बाद अगला कुंभ नासिक (२०२७) में गोदावरी नदी के तट पर

नासिक में होने वाले कुंभ मेले के लिए आज (१ जून-२५) बैठक हो रही है। इस बैठक में कुंभ मेले के अमृत स्नान की तारीखों का ऐलान किया जाएगा. बैठक में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और १३ अखाड़ों के प्रमुख साधु महंत मौजूद रहेंगे।

नासिक कुंभ मेलाः मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस सिंहस्थ कुंभ मेले से पहले नासिक का दौरा करेंगे। मुख्यमंत्री १३ अखाड़ों के मुखिया साधु महंतों की बैठक में शामिल होंगे। यह बैठक दोपहर १२ बजे नासिक जिला कलेक्टर कार्यालय में होगी। इसी बैठक में मुख्यमंत्री आगामी सिंहस्थ कुंभ मेले के अमृत स्नान की तिथियों की घोषणा करेंगे। महंत राजेंद्र दास महाराज ने मांग की है कि कुंभ मेले के शाही स्नान को अब अमृत स्नान के रूप में संबोधित किया जाना चाहिए।

'अमृत स्नान' की तारीखों का होगा ऐलान

कुंभ मेले को लेकर मुख्यमंत्री की मौजूदगी में आज नासिक में साधु महंतों की पहली बैठक हो रही है। इस बैठक में १३ अखाड़ों के मुखिया साधु महंत सीधे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से बातचीत करेंगे. बैठक में साधु महंतों के बैठने की व्यवस्था की घोषणा की गई है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के दाहिनी ओर सात शैव अखाड़ों के १४ महंत विराजमान होंगे। साथ ही ३ वैष्णव अखाड़ों के छह महंत बाईं ओर बैठेंगे। उनके बगल में तीन शैव अखाड़ों के छह महंत बैठेंगे।

महंत राजेंद्र दास महाराज ने यह भी कहा कि कुंभ मेले में मुख्य स्नान को शाही स्नान के बजाय अमृत स्नान कहा जाना चाहिए। कारण बताते हुए उन्होंने कहा, 'शाही स्नान शब्द मुगलों से जुड़ा हुआ है। हम यह भी मांग करेंगे कि इस स्नान को अब अमृत स्नान कहा जाए। उन्होंने यह भी मांग की कि सरकार को गोदावरी नदी के प्रदूषण के मुद्दे पर कड़े कदम उठाने चाहिए और कुंभ मेला प्राधिकरण घोषित करना चाहिए। नासिक और त्र्यंबकेश्वर पुरोहित संघ के अध्यक्ष वैष्णव अखाड़ों के महंतों के बगल में बैठेंगे। साधु महंतों के पीछे पांच आला अधिकारी और जनप्रतिनिधि बैठेंगे। साधु महंतों के लिए कलेक्टर कार्यालय में लाल कालीन बिछाया गया है। इस बार मुख्यमंत्री 'अमृत स्नान' की तारीखों की घोषणा करेंगे।

बैठक के संदर्भ में महंत राजेंद्र दास महाराज ने भी विभिन्न मांगें उठाई हैं। उन्होंने कहा कि सिंहस्थ के लिए कम से कम १,००० से १,५०० एकड़ भूमि आरक्षित की जानी चाहिए। पिछली बार सीट आरक्षित करने का वादा पूरा नहीं किया गया था। इस बार बड़ी संख्या में कुंभों का हुजूम उमड़ेगा। इसलिए, हमारी मुख्य मांग सीटें आरक्षित करने की है।

नासिक कुंभ मेला गोदावरी नदी के तट पर लगता है। इसे भारत की सबसे पवित्र नदियों में से एक माना जाता है। नासिक कुंभ मेले का पहला रिकॉर्ड १७वीं शताब्दी में दर्ज किया गया था और तब से यह लोकप्रियता में बढ़ गया है। हर १२ साल में लाखों लोग इस आयोजन में शामिल होते हैं। नासिक कलेक्टर ने नासिक नगर निगम (एनएमसी) के अधिकारियों को २०२७ में नासिक में आयोजित होने वाले सिंहस्थ कुंभ मेले से संबंधित योजनाओं की पुष्टि करने का सुझाव दिया है। नगर निगम ने कुंभ मेले पर अपने विचार बताए और भविष्य में कई गतिविधियों के लिए आंतरिक और बाहरी पार्किंग स्थल विकसित करने की योजना बनाई है। इसके अलावा एनएमसी ३०० किलोमीटर से अधिक लंबी नई सड़कें बनाने की भी योजना बना रही है। एनएमसी में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) का बजट करीब ६,००० करोड़ रुपये है। इस राशि में भूमि अधिग्रहण लागत भी शामिल है, जिसके लिए राज्य सरकार को धन मुहैया कराना होगा।

देश में कोरोना वायरस के मामलों में वृद्धि

महाराष्ट्र, केरल अलर्ट पर,

कर्नाटक सरकार ने भी मास्क लगाने को कहा

देश भर में कोरोना सक्रिय मामलों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पिछले सात दिनों में देशभर में एक्टिव मामलों की संख्या ३००० के पार पहुंच गई है। केरल में सबसे अधिक १,३३६ मामले दर्ज किए गए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, शनिवार को कोरोनोवायरस के मामलों की संख्या ३,००० को पार कर गई। अब यह संख्या ३,३९५ हो गई है। केरल के बाद महाराष्ट्र और दिल्ली का स्थान है। पिछले दो साल में यह पहली बार है जब मरीजों की संख्या इतनी बढ़ी है। महाराष्ट्र में ४६७ मामले, दिल्ली में ३७५ मामले मंत्रालय की ओर से शनिवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, पिछले २४ घंटे में कोरोना के कारण चार लोगों की मौत हुई। दिल्ली, केरल, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में एक-एक व्यक्ति की मौत हुई है। महाराष्ट्र में ४६७ मामले, दिल्ली में ३७५, गुजरात में २६५, कर्नाटक में २३४, पश्चिम बंगाल में २०५, तमिलनाडु में १८५ और उत्तर प्रदेश में ११७ मामले हैं।

२२ मई को देश में २५७ एक्टिव केस थे। २६ मई को यह संख्या बढ़कर १,०१० हो गई। शनिवार को यह संख्या बढ़कर ३,३९५ हो गई। आंकड़ों के अनुसार, पिछले २४ घंटों में ६८५ नए मामले सामने आए। चार लोग मारे गए थे। कोविड-१९ पर नजर रखने वाले वर्ल्डोमीटर इंडेक्स के अनुसार, देश में पहली बार ३,००० सक्रिय मामले थे। पिछली बार ऐसा आंकड़ा १ अप्रैल, २०२३ को आया था। उस समय, देश भर में ३,०८४ सक्रिय मामले थे।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं जीवन राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने शुक्रवार को कहा था कि केंद्र किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार है। एक समाचार एजेंसी से बात करते हुए उन्होंने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और जीवन मंत्रालय पूरी तरह से सतर्क है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार स्थिति की निगरानी कर रही है।

देश के कई राज्यों में कोरोना मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। शनिवार को कोरोना मरीजों की संख्या ३००० से ज्यादा पहुंच गई। केरल में सबसे ज्यादा १,३३६ मामले सामने आए हैं।

यह वेरिएंट इस राज्य में सक्रिय है

ओमिक्रॉन का JN.1 वेरिएंट और इसके सभी वेरिएंट LF.7 और NB.1.8 नई कोरोनावायरस लहर के लिए जिम्मेदार हैं. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने दिसंबर २०२३ में JN.1 को ब्याज का एक प्रकार घोषित किया। इस वेरिएंट के ज्यादा संक्रामक होने का दावा किया जा रहा है। बेशक, यह अन्य वेरिएंट की तुलना में अधिक खतरनाक नहीं है। लक्षणों में बुखार, सर्दी, खांसी, गले में खराश और शारीरिक दर्द शामिल हैं।

१० राज्यों में अब तक २८ की मौत

महाराष्ट्र में ९ हजार से ज्यादा कोविड टेस्ट

महाराष्ट्र सरकार ने बताया कि शनिवार को कोविड के ६८ नए मामले सामने आए। जबकि मुंबई में जनवरी २०२५ से अब तक कुल ७४९ केस मिले हैं। जनवरी से अब तक राज्य में ९५९२ कोविड-१९ टेस्ट किए गए।

वहीं, जम्मू-कश्मीर में गुरुवार को कोविड-१९ के दो मामले सामने आए थे। दोनों मरीज केरल के रहने वाले हैं और श्रीनगर के गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश का इटावा सफारी पार्क कोविड के बढ़ते मामलों की वजह से १४ मई को बंद कर दिया गया था। इसे २९ मई को कोविड प्रोटोकॉल के साथ खोल दिया गया।

उत्तर प्रदेश का इटावा सफारी पार्क कोविड के बढ़ते मामलों की वजह से १४ मई को बंद कर दिया गया था। इसे २९ मई को कोविड प्रोटोकॉल के साथ खोल दिया गया।

भारत में मिले कोविड-१९ के ४ नए वैरिएंट

भारत के कई राज्यों में कोविड-१९ के मामलों में बढ़ोतरी के बीच देश में चार नए वैरिएंट मिले हैं। छ्ण्ईं के डायरेक्टर डॉ. राजीव बहल ने बताया कि दक्षिण और पश्चिम भारत से जिन वैरिएंट की सीक्वेंसिंग की गई है, वे LF.7, XFG , JN.1 और NB.1.8.1 सीरीज के हैं।

बाकी जगहों से नमूने लेकर सीक्वेंसिंग की जा रही है, ताकि नए वैरिएंट की जांच की जा सके। मामले बहुत गंभीर नहीं हैं और लोगों को चिंता नहीं करनी चाहिए, बस सतर्क रहना चाहिए।

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन (WHO) ने भी इन्हें चिंताजनक नहीं माना है। हाल ांकि, निगरानी में रखे गए वैरिएंट के रूप में कैटेगराइज किया है। चीन सहित एशिया के दूसरे देशों में कोविड के बढ़ते मामलों में यही वैरिएंट दिख रहा है। ■

कर्नाटक सरकार ने शनिवार को पब्लिक एडवाइजरी जारी की। इसमें लोगों से भीड़-भाड़ वाली जगहों पर मास्क लगाने, शारीरिक दूरी बनाए रखने और स्वच्छता का खास ध्यान रखने की अपील की। बुखार, खांसी, सीने में दर्द या सांस लेने दिक्कत होने पर तुरंत जांच करने को कहा है।

राज्य के नेता मलाईदार विभाग चाहते हैं: संजय राउत

शिवसेना नेता संजय राउत ने महायुति सरकार की आलोचना की है। राज्य के नेता अच्छे खाते नहीं चाहते हैं, वे बेहतर खाते चाहते हैं। इसलिए कोई भी शिक्षा और कृषि जैसे अच्छे खाते लेने को तैयार नहीं है। शिवसेना नेता संजय राउत ने महायुति सरकार पर तीखा हमला बोला है। महागठबंधन सरकार में शिक्षा और कृषि जैसे अच्छे विभाग कोई नहीं चाहता। सभी की निगाहें मलाईदार खातों पर हैं। नेता शहरी विकास जैसे मंत्रालय चाहते हैं। देश कृषि प्रधान है। लेकिन मंत्री कृषि विभाग को गंभीरता से लेने को तैयार नहीं हैं। संजय राउत ने आरोप लगाया कि शिक्षा विभाग और कृषि विभाग को मंत्री द्वारा दंडित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और एकनाथ शिंदे के बारे में बात करते हुए, संजय राउत ने कहा, 'फडणवीस पर भरोसा न करें। वे मोदी फार्मूला महाराष्ट्र में भी लाए हैं। उन्होंने पीए और पीएस के लिए परीक्षण किया। लेकिन ये पीएसए और पीए सबसे भ्रष्ट हैं। अनिल गोटे ने धुले के सरकारी रेस्ट हाउस में मिली रकम के मामले में इस बात का खुलासा किया है। एकनाथ शिंदे को सभी ने रद्दी कर दिया। एक दिन पहले ही सुप्रीम कोर्ट में ३,००० करोड़ रुपये की रिश्वत का मामला सामने आया था। यह कचरे से लेकर कीचड़ तक सभी के पैसे खा रहा है। राउत ने आरोप लगाया कि यह सरकार बनी है।

एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री थे। अब देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री हैं। दोनों नेता सत्ता में आने के बाद से लोगों के मन में कानून का खौफ खत्म हो गया है। प्रदेश में अमानवीयता बढ़ी है। सरकार भी अमानवीय और क्रूर है। राउत ने पुणे में वैष्णवी हगवाने के मामले का जिक्र करते हुए कहा, 'हम यह सोचने लगे हैं कि हम लोगों को पैसे देकर कानून तोड़ सकते हैं।

संजय राउत ने गुवाहाटी में कामाख्या देवी के मंदिर जाने के अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने कहा, 'एकनाथ शिंदे के कामाख्या देवी के मंदिर जाने के बाद महाराष्ट्र से कई लोग जाने लगे। कई लोगों के हाथों में, मुर्गियां बकरियां हैं? मैं यह देखकर चौंक गया कि यह सब क्या था। यह अजीब है कि जानवरों की बलि दी जाती है, उन्हीं के सिर काट दिए जाते हैं और उनकी पूजा की जाती है।

हम संत गाडगे महाराज के राज्य में रहते हैं, ऐसी चीजें कैसे काम कर सकती हैं? मैंने पुजारियों से इसके बारे में पूछा, जिन्होंने कहा, 'कुछ साल पहले, शिवसेना के लोग आए थे। यही वह समय था जब सबसे अधिक पीड़ित मारे गए थे। हमें एक अच्छा दक्षिण भी मिला। उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जानवरों की बलि दी जाती है। लेकिन जानवरों की कुर्बानी देना अंधविश्वास है।

कोहली ने असफलता के डर से संन्यास लिया...

इंग्लैंड दौरे से पहले टीम इंडिया के दिग्गज खिलाड़ी रोहित शर्मा और विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट से रिटायरमेंट लेकर सबको चौंका दिया. शुभमन गिल की अगुवाई में एक युवा टीम को इंग्लैंड से पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलने के लिए भेजा जा रहा है. पहला टेस्ट मैच २० जून से खेला जाएगा. इस दौरान टीम इंडिया के कुछ खिलाड़ी इस समय इंग्लैंड में भारत-ए की ओर से अनऑफिशियल मैच खेल रहे हैं. इस दौरान इंग्लैंड के पूर्व दिज खिलाड़ी ने विराट कोहली के रिटायरमेंट पर अजीब सा दावा किया है. उनका कहना है कि विराट कोहली असफल होने के डर से इस फॉर्मेट से संन्यास ले लिया है.

इंग्लैंड के पूर्व स्पिनर मोंटी मों पनेसर का कहना है कि BCCI ने शायद विराट कोहली को अल्टीमेटम दिया होगा, जिसके बाद इस दिग्गज बल्लेबाज ने रिटायरमेंट का फैसला किया होगा, लेकिन मुझे लगता है कि वो असफल होने के डर से संन्यास लिए होंगे. इंग्लैंड के इस पूर्व स्पिनर ने कहा, 'हम विराट कोहली के इंग्लैंड में खेलने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने संन्यास लेकर सबको चौंका दिया. विराट इस तरह रिटायरमेंट ले लेंगे मुझे विश्वास नहीं था'. रिपोर्ट्स के मुताबिक मोटी पनेसर ने आगे कहा कि ऑफ स्टंप से बाहर जाती इस गेंदों को खेलना शायद विराट के लिए मुश्किल हो रहा था. ऑस्ट्रेलिया दौरे पर वो इस गेंदों पर आउट होते देखे गए थे. शायद यही वजह है कि वो इसे खत्म करना चाहते होंगे. इसके अलावा विराट युवाओं को मौका देना चाह रहे होंगे.इंग्लैंड के पूर्व स्पिनर ने कहा कि रोहित शर्मा और विराट कोहली के रिटायरमेंट के बाद युवाओं को खुद को साबित करने का अच्छा मौका है. उन्होंनें करूण नायर का जिक करते हुए कहा, 'यह इस बात पर निर्भर करेगा कि करूण नायर कैसा पदर्शन करते हैं, उन्होंने इंग्लैंड लायंस के खिलाफ दोहरा शतक बनाया था. उन्होंने कहा कि टीम इंडिया की इस युवा टीम में कई बेहतरीन खिलाड़ी हैं जो इंग्लैंड में कमाल कर सकते हैं. इसके अलावा शुभमन गिल के पास इंग्लिश धरती पर इतिहास रचने का भी मौका है.

कोलकाता रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ का रथ अब 'फाइटर जेट' टायरों पर

कोलकाता में भगवान जगनाथ के राथ को नई ताकत मिली है. (फोटो News१८)

२७ जून से शुरू हो रही इस भव्य रथयात्रा से पहले रथ में पुराने बोइंग ७४७ जंबो जेट के टायरों की जगह अब लगे हैं ४ फीट चौड़े मजबूत सुखोई के टायर. इसे MRF ने खास तौर पर बनाया है. दिलचस्प बात ये है कि इस टायर की खोज पिछले करीब २० सालों से चल रही थी.पिछले साल रथ की स्टीयरिंग में आई तकनीकी खामी के बाद इस्कॉन को नए टायरों की जरूरत महसूस हुई. पुराने बोइंग ७४७ के टायर जो ११० किलो वजनी थे. वो अब मिलना बंद हो गए थे क्योंकि विमान अब सर्विस में नहीं हैं. ऐसे में इस्कॉन की टीम ने ढूंढ निकाला सबसे नजदीकी विकल्प.. सुखोई Su-30 MKI के पहिए.

कोलकाता की सड़कों पर इस साल जब भगवान जगन्नाथ का रथ निकलेगा तो उसके पहिए सिर्फ आस्था नहीं बल्कि भारतीय वायुसेना की ताकत का भी प्रतीक होंगे. इस बार इस्कॉन की रथयात्रा में इस्तेमाल होने वाले रथ के नीचे लगे होंगे वही टायर जिन पर आसमान में गरजते हैं रूस में बने सुखोई फाइटर जेट.

२७ जून से शुरू हो रही इस भव्य रथयात्रा से पहले रथ में पुराने बोइंग ७४७ जंबो जेट के टायरों की जगह अब लगे हैं ४ फीट चौड़े मजबूत सुखोई के टायर. इसे MRF ने खास तौर पर बनाया है. दिलचस्प बात ये है कि इस टायर की खोज पिछले करीब २० सालों से चल रही थी.

पिछले साल रथ की स्टीयरिंग में आई तकनीकी खामी के बाद इस्कॉन को नए टायरों की जरूरत महसूस हुई. पुराने बोइंग ७४७ के टायर जो ११० किलो वजनी थे. वो अब मिलना बंद हो गए थे क्योंकि विमान अब सर्विस में नहीं हैं. ऐसे में इस्कॉन की टीम ने ढूंढ निकाला सबसे नजदीकी विकल्प.. सुखोई Su-30 MKI के पहिए.

इस्कॉन कोलकाता के उपाध्यक्ष राधारमण दास बताते हैं, 'जब हमने MRF से संपर्क कर सुखोई टायर मांगे तो वे पहले तो हैरान रह गए. फिर उनके सीनियर अधिकारी खुद कोलकाता आए और रथ को देखा. जब हमने बताया कि ४८ साल से बोइंग के टायर इस्तेमाल हो रहे हैं और अब सुखोई सबसे सटीक विकल्प है तो वे मान गए और टायर देने को तैयार हो गए.'

कोलकाता की तंग गलियों, ट्राम की पटरियों और भारी भीड़ के बीच यह रथ अब महज १.४ किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चलेगा. एकदम सधी हुई चाल में. नए टायर न सिर्फ रथ को बेहतर संतुलन देंगे बल्कि श्रद्धालुओं को रथ खींचने में भी कम थकान होगी. साथ ही तकनीकी गड़बड़ियों की आशंका भी कम होगी.

रथ में पारंपरिक लकड़ी और लोहे का ढांचा जस का तस रखा गया है. लेकिन पहियों के ढांचे में हल्के-फुल्के बदलाव किए गए हैं ताकि सुखोई टायरों को सही से फिट किया जा सके. गौरतलब है कि भगवान बलराम के रथ में पहले ही लोहे के नए पहिए लगाए जा चुके हैं. अब भगवान जगन्नाथ के रथ को भी नई ताकत मिल गई है. दिलचस्प बात यह है कि यह नई ताकत भारतीय रक्षा तकनीक से मिली है.

महाराष्ट्र सरकार ने ६८१ करोड़ रुपये की अहिल्यादेवी स्मारक उन्नयन योजना को दी मंजूरी

महाराष्ट्र सरकार ने बुधवार को १८वीं सदी की मालवा शासिका अहिल्यादेवी होल्कर के जन्मस्थान पर उनके स्मारक के संरक्षण और जीर्णोद्धार के लिए ६८१.३२ करोड़ रुपये की विकास योजना को प्रशासनिक मंजूरी दे दी। राज्य योजना विभाग ने मंजूरी के बारे में एक सरकारी आदेश जारी किया जो पश्चिमी महाराष्ट्र के अहिल्यानगर जिले (पूर्व में अहमदनगर) के जामखेड तालुका के अंतर्गत चौंडी में जन्मीं पराक्रमी रानी की ३००वीं जयंती (३१ मई) से पहले आया है।

विकास योजना के समन्वय और कार्यान्वयन की जिम्मेदारी अहिल्यानगर के जिलाधिकारी को सौंपी गई है। मार्च में पेश किए गए राज्य बजट में वित्त और योजना विभागों को संभालने वाले उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा था कि योजना विभाग के माध्यम से तीर्थ क्षेत्रों सहित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय महत्व के महत्वपूर्ण स्थलों को विकसित किया जाना है।

तदनुसार, स्थानीय हितधारकों और विशेषज्ञों के परामर्श के बाद अहिल्यानगर के जिलाधिकारी की अध्यक्षता वाली एक समिति द्वारा आवश्यक निधि सहित होल्कर के स्मारक स्थल के संरक्षण और विकास के लिए एक मसौदा योजना तैयार की गई थी। इस योजना को छह मई को चौंडी में हुई कैबिनेट बैठक में मंजूरी दी गई थी। बैठक के दो सप्ताह के भीतर ही पवार की अध्यक्षता वाले योजना विभाग ने संरक्षण और जीर्णोद्धार योजना के तहत ६८१.३२ करोड़ रुपये को प्रशासनिक मंजूरी देने का आदेश जारी किया था।

अब १५ जून को नहीं होगी परीक्षा नीट पीजी परीक्षा, जल्द जारी होगी नई डेट

नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंसेज (NBEMS) ने नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट पोस्टग्रेजुएट (NEET PG) २०२५ को स्थगित कर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, यह निर्णय सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुपालन में लिया गया है, जिसमें कहा गया था कि परीक्षा दो शिफ्टों के बजाय एक ही शिफ्ट में आयोजित की जानी चाहिए। जानकारी के मुताबिक राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परीक्षा बोर्ड NEET-PG २०२५ को एक ही पाली में आयोजित करेगा। १५.०६.२०२५ को होने वाली NEET-PG 2025 को स्थगित कर दिया गया है।

NEET PG 2025 को एक ही शिफ्ट में आयोजित करने के लिए अतिरिक्त परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था करने की आवश्यकता के कारण, जल्द ही नई परीक्षा तिथियों की घोषणा की जाएगी। NEET PG भारत में मेडिकल स्नातकों के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा है जो MD, MS और PG डिप्लोमा कार्यक्रमों जैसे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश चाहते हैं। यह राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान परीक्षा बोर्ड (NBEMS) द्वारा आयोजित की जाती है।

इससे पहले न्यायमूर्ति विक्रम नाथ की अध्यक्षता वाली पीठ ने संबंधित प्राधिकारियों को एक पाली में परीक्षा आयोजित कराने की व्यवस्था करने और पूर्ण पारदर्शिता व सुरक्षित केंद्र सुनिश्चित करने का निर्देश दिया और कहा कि दो पालियों में परीक्षा आयोजित करने से मनमानी होती है। पीठ में न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया भी शामिल थे। न्यायालय ने कहा, 'किसी भी दो प्रश्नपत्रों के कठिनाई या सरलता का स्तर एक समान नहीं कहा जा सकता।' न्यायालय ने कहा कि सामान्यीकरण को अपवादस्वरूप मामलों में लागू किया जा सकता है, लेकिन इसे हर साल नियमित रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

Wholesale Furniture Market

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

सबसे बड़ी रिश्वत!

ट्रम्प को मिलने वाला ४०० मिलियन डॉलर का 'फ्लाइंग महल'!

अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेग्सेथ ने बुधवार को बताया कि कतर सरकार ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के लिए एक बोइंग ७४७-८ जंबो जेट गिफ्ट में दिया है। इसे एयर फोर्स वन के तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा। ३४०० करोड़ रुपए की कीमत वाले इस लग्जरी प्लेन को 'फ्लाइंग पैलेस' या उड़ता महल कहा जाता है। यह किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति को मिलने वाला अब तक का सबसे महंगा गिफ्ट है। ट्रम्प को इस प्लेन का इस्तेमाल करने से पहले सिक्योरिटी क्लियरेंस का इंतजार करना होगा, जिसमें ३ से ४ साल लग सकते हैं। ऐसे में मुमकिन है कि ट्रम्प राष्ट्रपति रहते इसका इस्तेमाल नहीं कर पाएं। ट्रम्प हाल ही में १४ मई को अपने मिडिल ईस्ट दौरे के दूसरे दिन कतर पहुंचे थे। यहां उन्होंने कतर सरकार के साथ करीब १०० लाख करोड़ रुपए (१.२ ट्रिलियन डॉलर) की डील की थी।

ट्रम्प ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान दो बोइंग ७४७ को आधुनिक बनाने के लिए एक सौदा किया था, जिसका इस्तेमाल नए एयर फोर्स वन विमान के रूप में किया जाता। लेकिन बोइंग के साथ हुए सौदे में बार-बार देरी के कारण बजट २ अरब डॉलर (१७ हजार करोड़ रुपए) से ज्यादा हो गया है।

बोइंग ने कहा कि प्लेन की डिलीवरी में साल २०२७ तक का वक्त लग सकता है। ट्रम्प इससे नाराज हो गए थे। उन्होंने कहा था कि वह विकल्पों पर विचार कर रहे हैं। इसके बाद ट्रम्प फरवरी में कतर के ७४७-८ प्लेन को देखने गए थे। तब यह प्लेन फ्लोरिडा में पाम बीच एयरपोर्ट पर खड़ा था। इसके बाद ट्रम्प से पूछा गया था कि क्या वो बोइंग की जगह एयरबस का प्लेन खरीदने पर विचार कर रहे हैं। तब उन्होंने कहा था कि नहीं, मैं बोइंग की जगह एयरबस के बारे में नहीं सोच रहा हूं, लेकिन मैं एक इस्तेमाल किया हुआ विमान खरीद सकता हूं और उसमें बदलाव कर सकता हूं।

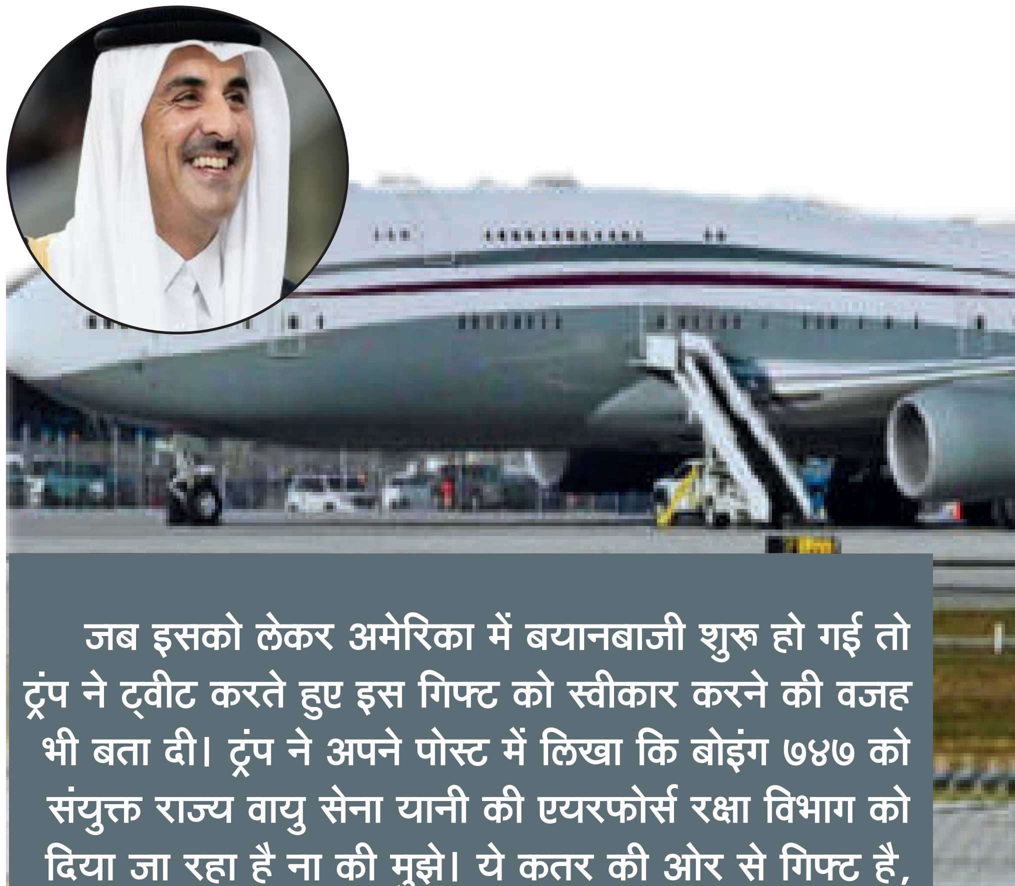

जब इसको लेकर अमेरिका में बयानबाजी शुरू हो गई तो ट्रंप ने ट्वीट करते हुए इस गिफ्ट को स्वीकार करने की वजह भी बता दी। ट्रंप ने अपने पोस्ट में लिखा कि बोइंग ७४७ को संयुक्त राज्य वायु सेना यानी की एयरफोर्स रक्षा विभाग को दिया जा रहा है ना की मुझे। ये कतर की ओर से गिफ्ट है, जिसकी हमने कई सालों तक रक्षा की है। इसका इस्तेमाल हमारी सरकार द्वारा अस्थायी रूप से एयरफोर्स वन के रूप में किया जाएगा। जब तक की हमारी नई बोइंग नहीं आ जाती। जब ये हमारे देश को मुफ्त में मिल रहा है तो क्यों इसके लिए करोड़ो डॉलर खर्च किए जाएं। बड़ी बचत को फिर से अमेरिका को महान बनाने के लिए खर्च किया जाएगा। कोई बेवकूफ ही इस गिफ्ट को देश की ओर से स्वीकार नहीं करेगा।

इस बोइंग ७४७-८ विमान में प्राइवेट बेडरूम स्यूट, लाउंज, बोर्डरूम, मार्बल बाथरूम, शाही सीढ़ियां, एलिवेटर, पांच गैलरी, मास्टर बेडरूम, मिनी हाईटेक हॉस्पिटल और मनोरंजन की शाही सुविधाएं हैं. इसमें ८९ यात्री सफर कर सकते हैं, जबकि सामान्य विमान में ६०५ यात्री बैठ सकते हैं. इसमें जीई का शक्तिशाली इंजन, १९१ टन ईंधन क्षमता और १९,४०० किलोमीटर तक बिना रुके उड़ान भरने की क्षमता है. साथ ही, LAIRCM मिसाइल डिफेंस सिस्टम भी है. वर्तमान में इस विमान की कीमत ४१८.४ मिलियन डॉलर (लगभग ३४७६ करोड़ रुपये) है, लेकिन शाही इंटीरियर और सैन्य तकनीकों के साथ इसकी कीमत और बढ़ जाती है. यह दुनिया का सबसे महंगा विमान है, जो कतर के शाही परिवार के बाद अब शायद अमेरिकी राष्ट्रपति की शान बढ़ाएगा.

बोइंग ७४७-८ की खास्यित...

१. बोइंग ७४७-८ जंबो जेट, जिसे 'फ्लाइंग पलेस' भी कहा जाता है, अपनी लग्जरी और उन्नत तकनीक के लिए फेमस है। यह बोइंग ७४७ सीरीज का लेटेस्ट और सबसे बड़ा वर्जन है।

२. बोइंग ७४७-८ को VIP कॉन्फिगरेशन के दौरान ४०-१०० पैसेंजर्स के लिए लग्जरी सुइट्स में बदला जा सकता है। इसमें मास्टर बेडरूम, कॉन्फ्रेंस रूम, डाइनिंग एरिया, लाउंज और बाथरूम जैसी फैसिलिटी है।

३. इस प्लेन में चार GEnx-2B टर्बोफैन इंजन हैं। इसके साथ ही आधुनिक ग्लास कॉकपिट और नेविगेशन सिस्टम है। मिसाइल से सुरक्षा के लिए काउंटरमेजर्स के तौर पर इंफ्रारेड जैमर जैसी सुविधाएं हैं।

४. लाउंज और डाइनिंग एरिया में बड़े डाइनिंग टेबल, हाई-टेक स्क्रीन, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ब्लू-रे प्लेयर और हाई क्वालिटी ऑडियो सिस्टम है।

५. यह प्लेन फुल स्पीड में ०.९२ मैक (लगभग १,१०० किमी/घंटा) से उड़ सकता है। इसके साथ ही ५१ हजार फीट की ऊंचाई पर उड़ान भरने में सक्षम हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा कॉमर्शियल प्लेन है।

इसको लेकर जब अमेरिका में बयानबाजी शुरू हो गई तो ट्रंप ने ट्वीट करते हुए इस गिफ्ट को स्वीकार करने की वजह भी बता दी। ट्रंप ने अपने पोस्ट में लिखा कि बोइंग ७४७ को संयुक्त राज्य वायु सेना यानी की एयरफोर्स रक्षा विभाग को दिया जा रहा है ना की मुझे।

१२ मई की तारीख को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप रोजाना की तरह व्हाइट हाउस में मीडिया को एड्रेस करने पहुंचे। उन्होंने कहा कि कतर हमें एक गिफ्ट दे रहा है। अगर हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे तो हम मूर्ख इंसान होंगे। फिर आता है १४ मई का दिन अपने मिडिल ईस्ट दौरे पर निकले ट्रंप कतर पहुंचते हैं। यहां उन्होंने

कतर का अल थानी परिवार दुनिया के तीसरे सबसे अमीर परिवारों में शुमार है, जिसकी संपत्ति ३५० अरब डॉलर से अधिक है. तेल और गैस क्षेत्र में उनका भारी निवेश है. ब्रिटेन में उनकी २६० एकड़ की संपत्ति है, जिसमें दो शाही होटल भी हैं, जिसे 'मिनी कतर' कहा जाता है. कतर ने २०१८ में तुर्की को भी ऐसा शाही विमान उपहार में दिया था.

कतर सरकार के साथ करीब १०० लाख करोड़ रुपए (१.२ ट्रिलियन डॉलर) की डील की थी। कतर सरकार ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के लिए एक बोइंग ७४७-८ जंबो जेट गिफ्ट में दिया है। ३४०० करोड़ रुपए की कीमत वाले इस लग्जरी प्लेन को 'फ्लाइंग पैलेस' या उड़ता महल कहा जाता है। यह किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति को मिलने वाला अब तक का सबसे महंगा गिफ्ट है।

कतर से मिला लग्जरी बोइंग ७४७ विमान अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के लिए नया विवाद बन गया है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक विमान की चमक-धमक के पीछे खुफिया एजेंसियां गंभीर सुरक्षा और जासूसी खतरे देख रही हैं। पूर्व सीआईए अधिकारी थैड ट्रॉय ने कहा कि अगर हमने यह विमान किसी विदेशी सरकार के लिए बनाया होता, तो शायद हम इसमें जासूसी उपकरण लगाते। उन्होंने चेताया कि विदेशी सरकार से मिला कोई भी विमान सुनने या ट्रैकिंग उपकरणों से लैस हो सकता है, जिन्हें पकड़ना बेहद मुश्किल होता है। सीनेट इंटेलिजेंस कमिटी के चेयरमैन मार्क वॉर्नर ने भी इसे बेहद गैर-जिम्मेदाराना फैसला बताया।

राष्ट्रीय सुरक्षा को हो सकता है खतरा?

विशेषज्ञों के अनुसार, १३ साल पुराने इस विमान को फिर से तैयार करने के लिए, जिसमें एक भव्य इंटीरियर है, विदेशी निगरानी को रोकने के लिए सुरक्षा प्रणालियों और संचार में व्यापक उन्नयन की आवश्यकता होगी, साथ ही संभावित मिसाइल हमलों के खिलाफ सुरक्षा भी होगी। विमानन विशेषज्ञों और उद्योग के सूत्रों ने पहले कहा था कि विमान को लड़ाकू जेट एस्कॉर्ट की आवश्यकता हो सकती है और जब तक ये महंगे संवर्द्धन नहीं किए जाते हैं, तब तक इसे संयुक्त राज्य के भीतर उड़ानों तक सीमित रखा जा सकता है। डेमोक्रेटिक सीनेटर माज़ी हिरोनो और टैमी डकवर्थ ने चेतावनी दी कि रेट्रोफिटिंग $1 बिलियन से अधिक हो सकती है, और इससे राष्ट्रीय सुरक्षा को महत्वपूर्ण जोखिम हो सकता है। डकवर्थ ने कहा कि अमेरिका के पास दो पूर्णतः कार्यशील एयरफोर्स वन जेट हैं, तथा उसे कतर के विमान को बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि वायुसेना को विमान में संशोधन करने की योजना बनाने के निर्देश दिए गए हैं। पेंटागन ने यह नहीं बताया है कि इसकी लागत कितनी होगी या इसमें कितना समय लगेगा।

डोनाल्ड ट्रम्प के नेतृत्व वाली अमेरिकी सरकार ने पुष्टि की है कि उसने राष्ट्रपति की खाड़ी अरब देशों की हालिया यात्रा के दौरान कतर से उपहार के रूप में एक आलीशान बोइंग ७४७ जेटलाइनर स्वीकार किया है। पेंटागन ने आगे कहा कि संशोधित किए जाने के बाद विमान का इस्तेमाल ट्रम्प के परिवहन के लिए किया जाएगा। मुख्य पेंटागन प्रवक्ता सीन पार्नेल ने एक बयान में कहा कि रक्षा सचिव ने सभी संघीय नियमों और विनियमों के अनुसार कतर से बोइंग ७४७ स्वीकार किया है। किया है कि मध्य पूर्वी देश से ४०० मिलियन डॉलर का विमान उपहार कानूनी है, लेकिन इस घोषणा ने हंगामा मचा दिया है, डेमोक्रेट्स ने इसे अमेरिकी इतिहास में सबसे बड़ी रिश्वत करार दिया है और इसे सौंपे जाने को रोकने की मांग की है। अमेरिकी संविधान में एक प्रावधान है जिसे पारिश्रमिक खंड के रूप में जाना जाता है, जो सार्वजनिक अधिकारियों को कांग्रेस की मंजूरी के बिना विदेशी सरकारों से उपहार या भुगतान स्वीकार करने से रोकता है। इस मामले में, ऐसी कोई मंजूरी नहीं दी गई है।

प्रोटोकॉल के तहत सरकारी खजाने में जमा होते हैं विदेशी गिफ्ट

दुनियाभर के ज्यादातर देशों में विदेशी गिफ्ट को सरकारी खजाने में जमा करने का प्रोटोकॉल है।

अमेरिका और भारत जैसे लोकतांत्रिक देशों में विदेशी गिफ्ट को राज्य की संपत्ति माना जाता है।

जब तक सरकारी नियमों के तहत छूट न दी जाए नेता और सरकारी अधिकारी इनका निजी इस्तेमाल नहीं कर सकते।

अमेरिका में ४१ हजार रुपए से ज्यादा मूल्य के गिफ्ट को नेशनल आर्काइव में जमा करने का नियम है।

US राष्ट्रपति का आधिकारिक विमान- एयर फोर्स वन कहलाता है

रिपोर्ट्स के मुताबिक ट्रम्प इस विमान को अस्थायी तौर पर एयर फोर्स वन के विकल्प के तौर पर इस्तेमाल करेंगे। एयर फोर्स वन अमेरिकी राष्ट्रपति का आधिकारिक विमान होता है। फिलहाल ट्रम्प का निजी विमान 'ट्रम्प फोर्स वन' एक पुराना ७५७ जेट है, जो १९९० के दशक का है। इसे २०११ में खरीदा गया था।

कतर का प्लेन अभी के फोर्स वन से कहीं ज्यादा आधुनिक और शानदार है। हालांकि, कतर ने अभी इसके बारे में खुलकर कुछ भी नहीं कहा है। CBS न्यूज की रिपोर्ट में बताया गया था कि ट्रम्प के कार्यकाल के अंत में यह प्लेन प्रेसिडेंट लाइब्रेरी को दान कर दिया जाएगा।

गिफ्ट में मिलने के बाद भी ट्रम्प सिक्योरिटी क्लियरेंस मिलने तक बोइंग ७४७-८ जंबो जेट विमान का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे। इसमें कुछ सालों का वक्त लग सकता है।

पहले बहुत गरीब था कतर, फिर बदल गई किस्मत!

दुनिया का पांचवां सबसे अमीर देश बन गया

आज से ६० साल पहले कतर की आर्थिक हालत बेहद खराब थी। कतर के रहने वाले समुद्र के अंदर से मछली पकडक़र बड़ी मुश्किल से अपना गुजारार करते थे। वही कतर आज दुनिया का पांचवां सबसे अमीर (धनवान) देश बन गया है। कतर के मूल निवासी तो खूब धन दौलत कमाकर मौज-मस्ती से जीवन जी रहे हैं। कतर में जाकर नौकरी करने वाले भारतीय, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी तथा श्रीलंकाई भी खूब धन कमा रहे हैं। कतर में प्रति व्यक्ति आमदनी की बात करें तो कतर वालों की प्रति व्यक्ति मासिक आमदनी ९८,८०० डॉलर है।

कतर के अमीर (राजा) के इतिहास की बात करें तो पिछले सवा सौ वर्षों से कतर पर अल-थानी परिवार ही राज कर रहा है। आपको यह जानकार जाज्जुब होगा कि कतर पर वर्ष १९०० के दशक से ही अल-थानी परिवार का शासन है। उस वक्त कतर आजाद देश नहीं बल्कि ब्रिटिश संरक्षित स्टेट था। जुलाई, १९१३ में शेख अब्दुल्ला बिन कासिम अल-थानी कतर के पहले शासक बने थे। उस समय कतर का मुख्य उद्योग समुद्र से मोती निकालना और मछली पकड़ना था। १९२० के दशक में मोती व्यापार खत्म हुआ तो देश भीषण गरीबी और कुपोषण की चपेट में आ गया। इसके बाद कतर के लि ए साल १९३९ राहत लेकर आया, जब दुखन शहर में तेल की खोज की गई। हालांकि द्वितीय विश्व युद्ध के कारण १९४९ तक इस क्षेत्र में खास प्रगति नहीं हुई।

कतर (Qatar) का हाल बदलना १९५० के दशक में शुरू हुआ जब १९५१ में कतर ने प्रतिदिन ४६,५०० बैरल तेल का उत्पादन शुरू किया। इससे कतरी सरकार का राजस्व अचानक बढ़ गया। जल्दी ही कतर का तेल उत्पादन बढ़कर २३३,००० बैरल प्रतिदिन हो गया। तेल निर्यात से प्राप्त नए राजस्व ने शासक परिवार

की जेबें भर दी और कतर ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरू की। १९५० के दशक में देश में

ट्रम्प को वर्ल्ड लीडर्स से मिले 5 महंगे गिफ्ट

शी जिनपिंग
चीन के राष्ट्रपति

साल 2017

डिनरवेयर सेट, कीमत- $16,250 **(लगभग ₹13,65,000)**

कैलिग्राफी, कीमत- $14,400 **(लगभग ₹12,09,600)**

गुयेन जुआन फुक
वियतनाम के PM

साल 2017

डोनाल्ड ट्रम्प की पेंटिंग, कीमत- $1,880 **(लगभग ₹1,57,920)**

सलमान बिन अब्दुलअज़ीज़
अल सऊद, सऊदी किंग

साल 2017

सोने का पेंडेंट, घड़ी, तस्वीरें, कपड़े $48,000 **(लगभग ₹40,32,000)**

इमैनुएल मैक्रों
फ्रांस के राष्ट्रपति

साल 2018

लुई वुइटन गोल्फ बैग और कुछ तस्वीरें, कीमत- $8,275 **(लगभग ₹6,95,100)**

शिंजो आबे
जापान के प्रधानमंत्री

साल 2020

गोल्फ ड्राइवर और पुटर, कीमत- $3,500 **(लगभग ₹2,94,000)**

स्कूल, अस्पताल, बिजली संयंत्र और टेलीफोन एक्सचेंज शुरू किए गए। इससे देखते ही देखते देश की दिशा बदल गई। कतर की तेल से कमाई में १९६० के दशक में और ज्यादा वृद्धि हुई। तब तक अल-थानी परिवार के लोग उच्च पदों पर बैठ गए थे और सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत की। इससे अल-थानी परिवार की दौलत में बेतहाशा बढ़ोत्तरी आई। कतर ने १९७१ में ब्रिटेन से आजादी हासिल की। फरवरी १९७२ में खलीफा बिन हमद ने सत्ता संभालने के बाद अहम उठाते हुए शाही परिवार के खर्चों में कटौती की और सामाजिक कार्यक्रमों, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और पेंशन पर खर्च बढ़ा दिया। इससे आम लोगों के जीवन में भी तेजी से बदलाव आया। १९९० के दशक के अंत में कतर ने कई अंतरराष्ट्रीय तेल कंपनियों के साथ उत्पादन साझा करने के समझौते किए। नई कंपनियों ने तेल उत्पादन में गिरावट को उलटने के लिए क्षैतिज ड्रिलिंग विधियों का उपयोग करना शुरू कर दिया। मेर्सक ऑयल के साथ कतर की साझेदारी के परिणामस्वरूप दुनिया का सबसे लंबा क्षैतिज कुआं बना। इसने दुनिया में कतर और थानी परिवार का दबदबा बनाकर रखा है।

रूस और ईरान के बाद कतर के पास दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार है। कतर की ज्यादातर गैस नॉर्थ फील्ड में है। इसका आकार कतर की मुख्य भूमि के आकार का करीब आधा है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि नॉर्थ फील्ड में २४० ट्रिलियन क्यूबिक फीट की अनुमानित अतिरिक्त गैस मात्रा है, जो कतर के गैस भंडार को १,७६० (ट्रिलियन क्यूबिक फीट) से बढ़ाकर २,००० ट्रिलियन क्यूबिक फीट से अधिक कर देती है। भारत कतर से बड़ी तादाद में गैस खरीदता है।

कतर के ऊर्जा मंत्री साद शेरिदा अल-काबी ने हाल ही में घोषणा की है कि नॉर्थ फील्ड वेस्ट नाम के नॉर्थ फील्ड विस्तार से मौजूदा विस्तार योजनाओं में प्रति वर्ष १६ मिलियन टन तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) और जुड़

जाएगी। ये कतर को नॉर्थ फील्ड के पश्चिमी क्षेत्र से लगभग १६ मिलियन टन प्रति वर्ष उत्पादन क्षमता वाली नई एलएनजी परियोजना विकसित करने में सक्षम बनाएंगे। ऐसे में इस दशक के अंत तक कतर की गैस उत्पादन क्षमता १४२ मिलियन टन हो जाएगी, जो वर्तमान उत्पादन स्तर से लगभग ८५ प्रतिशत अधिक है।

ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति हैं या बिजनेसमैन ?

२५ देशों में फैला है ट्रंप का कारोबार

ट्रम्प अमीर घराने से ताल्लुक रखते हैं। दुनियाभर में कामयाब बिजनेसमैन के तौर पर जाने जाते हैं। रियिलिटी टीवी स्टार बने। इसके बाद सियासत में कदम रखा और अमेरिका के राष्ट्रपति बने। डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बनने से पहले एक सफल कारोबारी रहे हैं, जिस वजह से वो राष्ट्रपति होते हुए भी अमेरिका के साथ अपना नफा-नुकसान दोनों देखकर चलते हैं. डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के पहले राष्ट्रपति हैं जो कारोबारी भी हैं. ट्रंप का दुनियाभर के २५ देशों में कारोबार फैला है और जिनमें उनकी १४४ कंपनियां कारोबार करती है. आपको बता दें भारत में ही ट्रंप की १६ कंपनियां बिजनेस करती हैं, जिसमें ट्रंप रियल एस्टेट प्रमुख है. दुनियाभर में फैले डोनाल्ड ट्रंप के बिजनेस की बात करें तो उसमें द ट्रंप ऑर्गेनाइजेशन मैनेजमेंट, रियल एस्टेट, एंटरटेनमेंट, हॉस्पिटैलिटी, रिटेल और ऑनलाइन शॉपिंग, ट्रंप मीडिया एंड टेक्नोलॉजी प्रमुख बिजनेस हैं.

डोनाल्ड ट्रंप रियल एस्टेट का भी बिजनेस करते हैं, ये बिजनेस उनके पिता से उन्हें विरासत में मिला था. डोनाल्ड ट्रंप के पिता फ्रेड ट्रंप ने १९२७ में अपनी पत्नी एलिजाबेथ के साथ मिल कर इसे शुरू किया था, जिसे १९७१ में डोनाल्ड ट्रंप ने संभाला और तेजी से इसे आगे बढ़ाया. अपनी कंपनी के तहत उन्होंने तमाम लग्जीरियस इमारतें बनवाईं, जिसमें ट्रंप पैलेस, ट्रंप वर्ल्ड टावर, ट्रंप इंटरनेशनल होटल एंड रिसोर्ट शामिल हैं. दुनिया के तमाम बड़े शहरों की तरह ही भारत के मुंबई, पुणे, गुरुग्राम में भी Trump Tower मौजूद है.

डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति के पहले टर्म के बाद फ्लोरिडा रहने चले गए थे, यहां उनका २० एकड़ में महलनुमा ट्रंप मेशन है जो कि १९२७ में बना था और इसे डोनाल्ड ट्रंप ने १९८५ में खरीदा. आपको बता दें डोनाल्ड ट्रंप के इस मेंशन की कीमत १ करोड़ डॉलर है और ये फ्लोरिडा के पाम बीच के किनारे बना हुआ है. इसके अलावा उनके पास न्यूयॉर्क, मैनहट्टन समेत सेंट मार्टिन, वर्जीनिया में भी आलीशान घर हैं. इसके अलावा ट्रंप के पास १९ गोल्फ कोर्स भी हैं.

ट्रंप के पास वैसे तो १४४ कंपनियां हैं, लेकिन ट्रंप की कमाई का सबसे बड़ा जरिया ट्रंप मीडिया एंड टेक्नोलॉजी ग्रुप है. इसकी नेट वैल्यू फोर्ब्स के अनुसार ५.६ अरब डॉलर है. अप्रैल २०२४ में ट्रंप के पास ट्रंप मीडिया एंड टेक्नोलॉजी के ११४.७५ मिलियन शेयर और अतिरिक्त ३६ मिलियन अर्नआउट शेयर मौजूद थे. ट्रंप के अर्नआउट शेयरों ती कुल कीमत अभी १.२ अरब डॉलर के आस-पास है. इसके अलावा उनके गोल्फ क्लब, रिसॉर्ट्स और बंगलों से होने वाली कमाई का भी नेटवर्थ में अहम रोल है.■

भारत में ही ट्रंप की १६ कंपनियां बिजनेस करती हैं, जिसमें ट्रंप रियल एस्टेट प्रमुख है. दुनियाभर में फैले डोनाल्ड ट्रंप के बिजनेस की बात करें तो उसमें द ट्रंप ऑर्गेनाइजेशन मैनेजमेंट, रियल एस्टेट, एंटरटेनमेंट, हॉस्पिटैलि टी, रिटेल और ऑनलाइन शॉपिंग, ट्रंप मीडिया एंड टेक्नोलॉजी प्रमुख बिजनेस हैं.

भिंडी नारियल मसाला

२५० ग्राम कटी हुई भिंडी
२ टमाटर
१ बड़ी प्याज
लहसुन की ५ कलियां
एक इंच छिला हुआ अदरक
आधा कप फ्रेश नारियल
आधा कप कद्दूकस किया हुआ नारियल
२ चम्मच नमक
एक चम्मच जीरा
आधा टीस्पून लाल मिर्च
आधा टीस्पून हल्दी
२ टेबलस्पून तेल

विधिः

प्याज, टमाटर, अदरक, लहसुन और आधा कप नारियल को मिक्सी में दरदरा पीस लें। पैन में तेल डालें और गरम होने पर उसमें जीरा डाल दें। इसके बाद मसाले को भूनने के लिए पैन में डालें और उसमें अन्य मसाले व नमक मिला दें।

मसाले का कलर ब्राउन हो जाए तो उसमें कटी हुई भिंडी डाल दें और मिक्स करने के बाद प्लेट से ढक दें। सब्जी को पकने दें, बीच-बीच में इसे हिलाते रहें ताकि भिंडी जल नहीं जाएं। १० मिनट बाद इसमें कद्दूकस किया हुआ नारियल डालें और फिर पांच मिनट तक इसे और पकने दें। सब्जी को चाहे तो धनिया डालकर या यूं ही गरम-गरम सर्व करें।

भरवां टिन्डा

सामग्री -
टिन्डा - ८ मध्यम आकार के (४०० ग्राम)
तेल - २ बड़े चम्मच
काजू - ६-७
किशमिश - १०-१२
पनीर - ५० ग्राम
हरा धनिया - २-३ बड़े चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
गरम मसाला पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
हींग - 1 पिंच
जीरा - ¼ छोटी चम्मच
अमचूर पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
हल्दी पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
हरी मिर्च - २ (बारीक कटी हुई)
अदरक का पेस्ट - १ छोटी चम्मच
नमक - १ छोटी चम्मच
धनिया पाउडर - १ छोटी चम्मच
सौंफ पाउडर - १ छोटी चम्मच

विधिः टिन्डे अच्छी तरह धो लीजिये, धोने के बाद इन्हें छीलकर डंठल काट कर हटा दीजिए, अब पीलर की मदद से टिन्डे के बीच में से गुदा निकाल लीजिए और गुदे को अलग प्याले में रख लीजिए. सभी टिन्डों को इसी तरह से बीच में से खोखला करके तैयार कर लीजिए.

पैन में दो छोटी चम्मच तेल डालकर गरम कीजिये, तेल के गरम होने पर इसमें हींग और जीरा डालिये, जीरा भूनने पर हल्दी पाउडर, धनियां पाउडर डालिये और मसाले को हल्का सा भून लीजिए. टिन्डे से निकला हुआ गुदा इस मसाले में डाल दीजिए, कटी हरी मिर्च, अदरक का पेस्ट, सौंफ पाउडर, अमचूर पाउडर, लाल मिर्च, गरम मसाला और नमक सभी चिजों को अच्छे से मिलाते हुए भून लीजिये, मसाले में क्रम्बल किया हुआ पनीर भी डाल कर मिला दीजिए, और अब कटे हुए काजू और किशमिश भी इसमें डाल दीजिए. सभी चीजों को मिक्स करते हुए १-२ मिनिट के लिए भून लीजिए.

स्टफिंग बनकर तैयार है। इसमें थोड़ा कटा हुआ हरा धनिया भी डाल दीजिए और मिक्स कर लीजिए. स्टफिंग को प्याले में निकाल लीजिए और इसे ठंडा होने दीजिए। स्टफिंग ठंडी होने के बाद इसे टिन्डों में भरना शुरू कीजिए एक टिन्डा लीजिए चम्मच की मदद से स्टफिंग को खोखले किये गये टिन्डों भर दीजिये. पैन में तेल डाल कर गरम कीजिए, तेल गरम होने पर टिन्डों को एक-एक करके पैन में रखते जाएं. टिन्डों को ढककर मध्यम आंच पर ३-४ मिनिट के लिए पकने दीजिए इसके बाद चैक कीजिए और पलट दीजिए ताकी यह चारों ओर से पक जाएं

पलटने के बाद इन्हें ३-४ मिनिट के लिये दुबारा ढककर पकायें. ढक्कन खोलकर फिर से चैक करते हुए टिन्डों को पलट-पलट कर चारों ओर से पकायें. भरवां टिन्डों को पकने में लगभग १५ मिनिट का समय लगता है, हर ३-४ मिनिट में टिन्डे को चैक करना है और थोड़ा थोड़ा घुमाते रहना है, भरवां टिन्डे बनकर तैयार हो गये हैं.

शाही भरवां टिन्डों को प्याले में निकाल लीजिये और परांठे , चपाती, नान, चावलों के साथ परोसिये और खाइये.

स्पाइसी छोले

सामग्रीः
काबुली चना - डेढ़ कप
टमाटर - २ बड़े (बड़े कटे हुए)
हरा धनिया - ३ टेबल स्पून (कटा हुआ)
अजवायन - ¼ छोटी चम्मच
जीरा - ¼ छोटी चम्मच
हरी मिर्च - ५ (बारीक कटी)
अदरक - आधा इंच टुकड़ा
लाल मिर्च पाउडर - आधा छोटा चम्मच
गरम मसाला पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
घी - २ टेबल स्पून
बेकिंग पाउडर - ⅛ छोटी चम्मच
धनिया पाउडर - १ छोटी चम्मच
अमचूर पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
नमक - स्वादानुसार
विधिः

काबुली चने को रात भर पानी में भिगोकर रख दें ताकि चने अच्छे से फूल जाएं. सुबह चने बनाने से पहले इसका सारा पानी गिराकर धो लें. छोले बनाने के लिए अब इन चनों को कूकर में डालें और इसमें आधा कप पानी, बेकिंग सोडा और नमक और टी बैग डालकर कूकर को बंद कर आंच पर चढ़ा दें. इसके बाद जब सीटी आए तो कूकर को आंच से उतार लें. एक कढ़ाई को आंच पर चढ़कर इसमें घी डालकर गर्म करें. इसके बाद इसमें जीरा डालें, जब जीरा चटकने लगे तो इसमें अजवाइन डालकर आंच बंद कर दें. अब इसमें कटी अदरक और मिर्च डालकर हल्का सा चलायें. फिर इसमें चनें डालें और इसमें लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, अमचूर पाउडर, कटे हुए टमाटर, बारीक कटा हरा धनिया और नमक डालकर अच्छे से चलाएं ताकि सारी सामग्री अच्छे से मिल जाए.

लीजिए बनकर तैयार हैं. इसे सर्विंग बाउल में निकाल लीजिए और नींबू से सजाकर सर्व करें.

मटर का निमोना

सामग्रीः
1 मध्यम आकार का प्याज, कटा हुआ
½ चम्मच अदरक कटा हुआ
1 चम्मच कटा लहसुन
2 हरी मिर्च, कटी हुई
1 कप ताजी हरी मटर या १५० ग्राम मटर
2 बड़े चम्मच सरसों का तेल
1 मध्यम आकार का आलू या १०० ग्राम आलू
1 तेज पत्ता, 3 लौंग ,½ चम्मच जीरा
1 मध्यम बारीक कटा टमाटर
1 चुटकी हींग
¼ चम्मच हल्दी पाउडर (हल्दी)
½ चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर
½ चम्मच धनिया पाउडर
3 बड़ा चम्मच कटा हरा धनिया
½ से ½ चम्मच गरम मसाला पाउडर
2 बड़े चम्मच कटा हरा धनिया

विधिः एक ब्लेंडर जार में ½ कप कटा हुआ प्याज, ½ चम्मच कटा अदरक, 1 चम्मच कटा हुआ लहसुन और 2 हरी मिर्च डाल कर पेस्ट बनाएं। अब इस पेस्ट को किनारे किसी बाउल में निकाल कर रख दें और उसी ग्राइंडर जार में 1 कप मटर डालें। मटर का एक मोटा पेस्ट बनाएं। इसमें पानी न मिलाएं। एक पैन में 2 बड़े चम्मच सरसों का तेल लें और इसे तब तक गर्म करें जब तक कि यह धुंआ न निकलने लगे। आंच को कम करें और आधा कप कटा हुआ आलू डालें। मध्यम आंच पर आलू को भूनें। उसी पैन में १ तेज पत्ता, ३ लौंग और जीरा डालें। मसालों को चटकने और फूटने दें। अब पिसी हुई प्याज का पेस्ट डालें। जब मसाला प्याज पक जाए तब ⅓ कप बारीक कटे टमाटर डालें।फिर इसमें हल्दी पाउडर, कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और एक चुटकी हींग डालें। प्याज-टमाटर के मिश्रण के साथ मसाला अच्छी तरह मिलाएं। मटर की प्यूरी को प्याज-टमाटर के बाकी मसाले के साथ मिलाएं। फिर ३ बड़ी चम्मच हरा धनिया डालें और मिलाएं। १.५ से २ कप पानी और स्वादअनुसार नमक डालें। पैन को कवर कर दें और गैस को धीमा कर दें। इसे बीच बीच में चेक करती रहें और जब निमोना गाढ़ा हो जाए तब गैस बंद कर दें। निमोना पक कर तैयार है। इसे गरमा गरम रोटी और चावल के साथ सर्व करें।

शादी में म्यूजिकल फेरे का ट्रेंड

पारंपरिक और मॉडर्न का सुंदर मेल...

म्यूजिकल फेरों की खास बातें:

☐ संगीत और भावना: हर फेरे के साथ एक थीम वाला गाना या श्लोक बजाया जाता है, जैसे: 'तेरे हाथों में मेरा हाथ हो' या 'ओम मंगलं भगवन्त विष्णु...'

☐ इमोशनल टच: पंडित मंत्र पढ़ते हैं और उसके बाद बैकग्राउंड में संगीत बजता है, जिससे माहौल भावुक और पवित्र बन जाता है।

☐ नरेशन / वॉयस ओवर कुछ लोग फेरों के दौरान हर फेरे का अर्थ कहानी के रूप में सुनाते हैं - जैसे कि 'पहला फेरा भोजन और पोषण के लिए है...'

☐ सिनेमैटिक एक्सपीरियंस: इसे फिल्मी अंदाज़ में पेश किया जाता है–लाइटिंग, लाइव म्यूजिक, फूलों की सजावट के साथ।

क्यों लोकप्रिय हो रहा है ये ट्रेंड?

हर मेहमान को फेरे का अर्थ समझ आता है

फोटो और वीडियो के लिए इमोशनल मोमेंट्स बनते हैं

जोड़े को अपनी शादी से जुड़ाव और यादें ज्यादा महसूस होती हैं

☐ म्यूजिकल फेरों में क्या होना चाहिए?

एक अच्छे वॉयस ओवर आर्टिस्ट या शायर जो फेरों के अर्थ बताए

लाइव म्यूजिक या डीजे जो भक्ति और रोमांटिक गानों का मिश्रण बजा सके

कोरियोग्राफ किया गया टाइमिंग - ताकि फेरों के साथ-साथ संगीत और बोल मेल खाएं

यह रही एक म्यूजिकल फेरे की सैंपल स्क्रिप्ट, जिसमें हर फेरे के साथ एक सुंदर शब्द-व्याख्या (voiceover) और पार्श्व संगीत (background song) का सुझाव दिया गया है। इसे आप पंडित जी के मंत्रों के बाद या उनके बीच-बीच में चलवा सकते हैं, ताकि हर फेरे का अर्थ भावनात्मक रूप से सभी को समझ में आए।

☐ म्यूजिकल फेरे - सैंपल स्क्रिप्ट (दूल्हा-दुल्हन की एंट्री के बाद)

☐ भूमिका (Intro Voiceover)

'शादी सिर्फ एक बंधन नहीं, आत्माओं का संगम है। आज ये सात फेरे सिर्फ परंपरा नहीं, बल्कि सात वचनों का वादा हैं - जीवन भर के लिए। आइए, हर फेरे के साथ इस सुंदर रिश्ते को संगीत और भावना से जोड़ते हैं...'

☐ Background Song: हल्की शहनाई, या 'ओम मंगलं भगवंत विष्णु' भजन softly चलता है।

☐ पहला फेरा - जीवन और आहार के लिए

☐ Voiceover:

'पहला फेरा है–जीवन की नींव के लिए। आप दोनों मिलकर एक-दूसरे के स्वास्थ्य और भोजन की ज़िम्मेदारी लेंगे।'

☐ Background Song: 'तेरे हाथों में मेरा हाथ हो, सारी जन्नतें साथ हो...' (सॉफ्ट वर्जन)

☐ दूसरा फेरा - शक्ति और सुरक्षा के लिए

☐ Voiceover:

'दूसरा फेरा है–शक्ति, हिम्मत और सुरक्षा का। आप एक-दूसरे की ढाल बनेंगे, हर तूफान में साथ चलेंगे।'

☐ Background Song: 'रब ने बना दी जोड़ी...' (Instrumental / slow version)

☐ तीसरा फेरा - समृद्धि और धन के लिए

☐ Voiceover:

'तीसरे फेरे में आप वादा करते हैं कि मिल कर परिवार की खुशहाली और समृद्धि के लिए मेहनत करेंगे।'

☐ Background Song: 'साथिया... ये तूने क्या किया...' (Background instrumental)

☐ चौथा फेरा - प्यार और समझ के लिए

☐ Voiceover:

'चौथा फेरा है–मन के मेल का। जहां प्यार में ego नहीं होगा, और समझ सबसे बड़ा आधार बनेगी।'

☐ Background Song: 'तेरे लिए ही जिया मैं...' (Slowed romantic version)

☐ पाँचवां फेरा - बच्चों और जिम्मेदारियों के लिए

☐ Voiceover:

'इस वचन में आप साथ मिलकर भविष्य को संवारने की कसम लेते हैं - जहां परिवार की नींव और परवरिश प्यार से होगी।'

☐ Background Song: 'मेरे जीवनसाथी...' (पुराना क्लासिक धीमा वर्जन)

☐ छठा फेरा - सुख-दुख की साझेदारी के लिए

☐ Voiceover:

'छठा फेरा है–हर खुशी और हर ग़म में बराबर के साथी बनने का। ज़िंदगी की हर शाम और हर सुबह साथ बिताने का।'

☐ Background Song: 'सुनो, ना संग मरा...' (Calm duet)

☐ सातवां फेरा - दोस्ती और वफादारी के लिए

☐ Voiceover:

'सातवां और अंतिम फेरा... जहां आप न सिर्फ जीवनसाथी, बल्कि सबसे अच्छे दोस्त और हमसफ़र बनने का वादा करते हैं... जीवन भर के लिए।'

'अब जब ये सात फेरे पूरे हुए, ये दो आत्माएं एक पवित्र बंधन में बंध गई हैं। यह रिश्ता सिर्फ जन्मों का नहीं, आत्मा से आत्मा तक का है।'

☐ Background Song: 'शुभ विवाह... मंगल विवाह...' - धीमा भक्ति संगीत

अगर लाइव म्यूजिक है, तो सिंगर धीमे सुर में ये गाने गा सकते हैं। ■

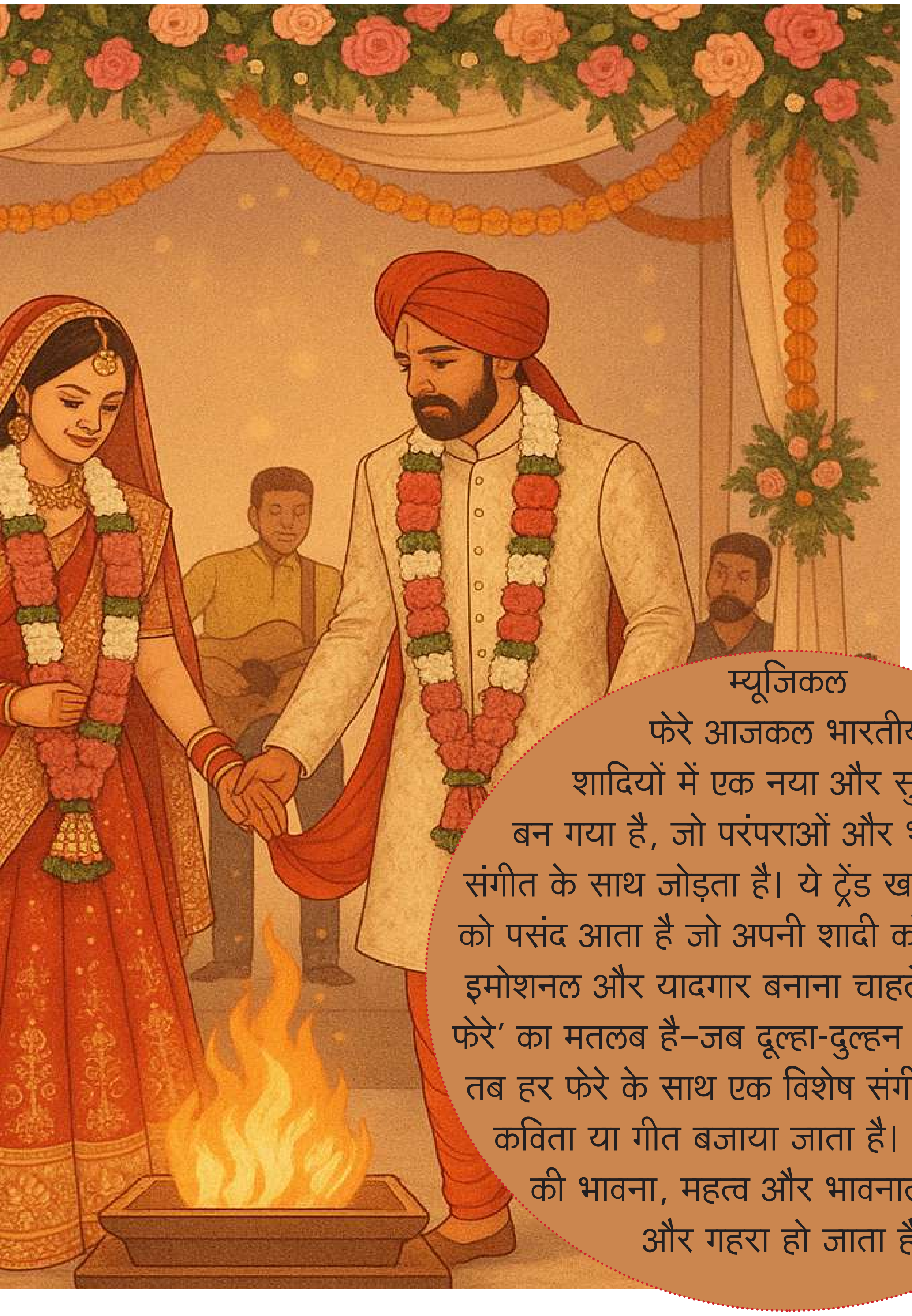

म्यूजिकल फेरे आजकल भारतीय शादियों में एक नया और सुंदर ट्रेंड बन गया है, जो परंपराओं और भावनाओं को संगीत के साथ जोड़ता है। ये ट्रेंड खासकर उन जोड़ों को पसंद आता है जो अपनी शादी को थोड़ी क्रिएटिव, इमोशनल और यादगार बनाना चाहते हैं। 'म्यूजिकल फेरे' का मतलब है–जब दूल्हा-दुल्हन सात फेरे लेते हैं, तब हर फेरे के साथ एक विशेष संगीत, भजन, मंत्र, कविता या गीत बजाया जाता है। इससे हर फेरे की भावना, महत्व और भावनात्मक जुड़ाव और गहरा हो जाता है।

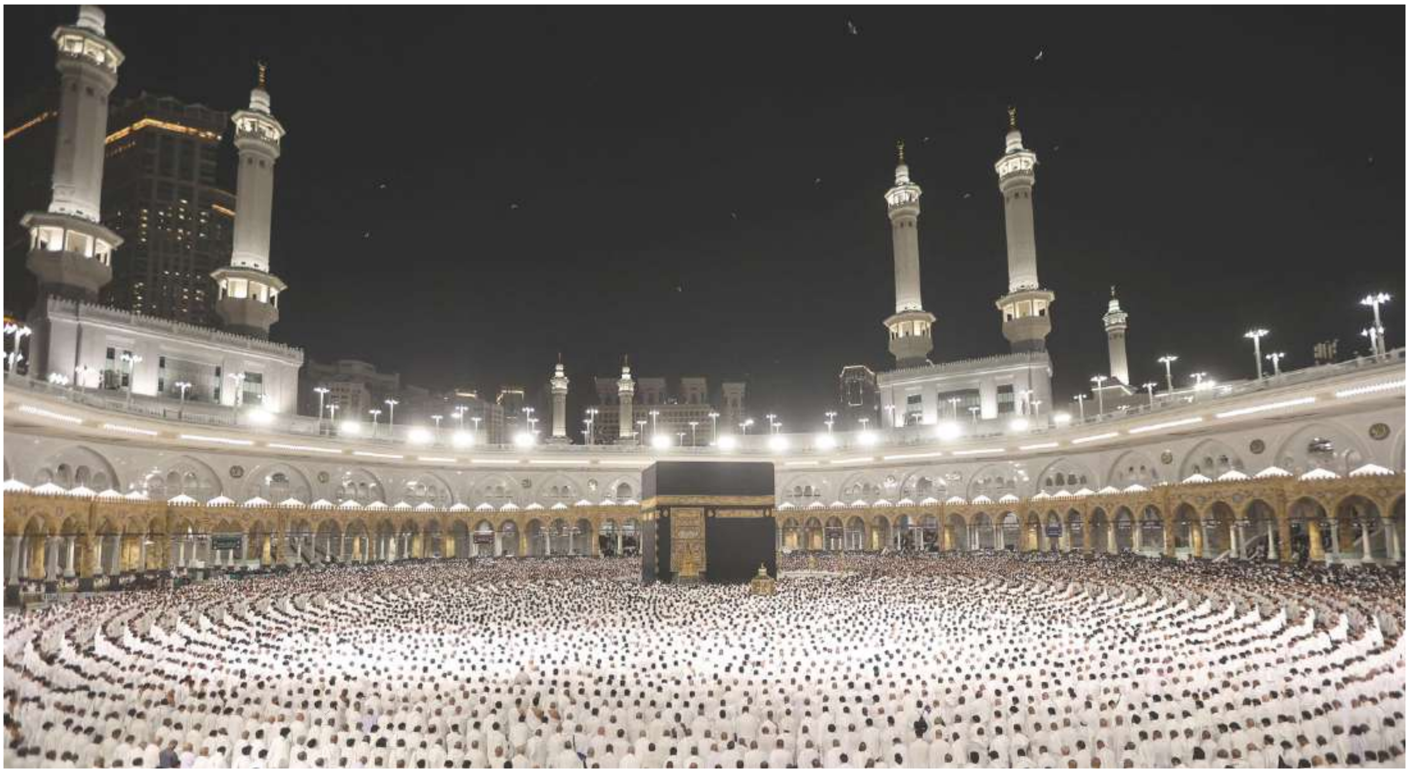

'हज' और 'ईद-उल-अजहा' का महत्व...

हज इस्लाम धर्म का एक बहुत ही पवित्र तीर्थ यात्रा है, जिसे हर मुसलमान को (अगर वह शारीरिक और आर्थिक रूप से सक्षम हो) जीवन में कम से कम एक बार करना अनिवार्य माना गया है। यह यात्रा सऊदी अरब के मक्का शहर में की जाती है। इस्लाम धर्म के पांच स्तंभों में से एक 'हज' है और 'ईद-उल-अजहा' जिसे 'बकरीद' भी कहा जाता है, एक प्रमुख इस्लामी त्योहार है। ये दोनों धार्मिक अवसर न केवल आध्यात्मिक महत्व रखते हैं, भाईचारे का संदेश भी देते हैं। इस बार 'बकरीद' ७ या ८ जून को मनाई जाएगी। 'बकरीद' का दिन हज यात्रा के समापन का प्रतीक है, जो इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है। तो वहीं

हज के मुख्य बिंदुः

१. यह हर साल इस्लामी कैलेंडर के १२वें महीने 'ज़िल-हिज्जा' में किया जाता है।
२. लाखों मुसलमान दुनिया भर से मक्का जाते हैं।
३. इसमें कुछ खास धार्मिक क्रियाएं होती हैं, जैसेः
४. काबा का तवाफ़ (घूमना)
५. मिना, अराफात, मुज़दलिफा में रुकना
६. शैतान को पत्थर मारना (रमी)
७. जानवर की कुर्बानी देना

दूसरी ओर हज इस्लाम धर्म की सबसे पवित्र यात्रा है, जो सऊदी अरब के मक्का शहर में स्थित काबा शरीफ की ओर की जाती है। यह हर साल इस्लामी कैलेंडर के १२वें महीने 'जिल-हिज्जा' में होती है। ये इस्लाम के विश्वास, प्रार्थना, दान और उपवास के संदेश का ही एक हिस्सा है। हर मुस्लिम की ख्वाहिश होती है कि वो

इस्लाम धर्म के पांच स्तंभों में से एक 'हज' है और 'ईद-उल-अजहा' जिसे 'बकरीद' भी कहा जाता है, एक प्रमुख इस्लामी त्योहार है। ये दोनों धार्मिक अवसर न केवल आध्यात्मिक महत्व रखते हैं, भाईचारे का संदेश भी देते हैं। इस बार 'बकरीद' ७ या ८ जून को मनाई जाएगी। 'बकरीद' का दिन हज यात्रा के समापन का प्रतीक है, जो इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है।

जिंदगी में एक बार हज यात्रा जरूर करे।

हजयात्रा हजयात्रा पर लोग एहराम पहनते हैं जो कि सफेद वस्त्र होता है, जो समानता और एकता का प्रतीक है। श्रद्धालु काबा शरीफ की सात बार परिक्रमा करते हैं। शैतान को कंकरी मारना (रमी) - यह बुराई पर विजय का प्रतीकात्मक कार्य है।

ईद-उल-अजहा हज यात्रा की समाप्ति पर मनाया जाने वाला त्योहार हजरत इब्राहीम (अब्राहम) द्वारा अल्लाह के आदेश पर अपने बेटे हजरत इस्माईल की कुर्बानी देने की तत्परता की याद में मनाया जाता है। हालांकि, अल्लाह ने उनके बेटे को बचा लिया और उसकी जगह एक जानवर की कुर्बानी देने का आदेश दिया था।

ईद-उल-अजहा के दिन क्या-क्या होता है? (Eid al-Adha) सुबह विशेष नमाज अदा की जाती है। कुर्बानी का मांस तीन हिस्सों में बांटा जाता है - एक हिस्सा गरीबों को, एक रिश्तेदारों को, और एक अपने लिए रखा जाता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय एक-दूसरे से मिलते हैं, दान करते हैं और जरुरतमंदों की मदद करते हैं।■ -रफिक खान

हज और ईद-उल-अजहा: तुलना चार्ट

	हज	ईद-उल-अजहा
क्या है?	इस्लाम की एक पवित्रतीर्थ यात्रा	त्याग और कुर्बानी का त्योहार
कब मनाया जाता है?	जिल-हिजग माह (इशाल्मी कैलेंडर)	जिल-हिज्ज़ा की 10वीं तारीख को
स्थान	केबल मुसलमान (शारीरिक +आर्थिक)	पूरी दुनिया में
मुख्य कियाएं	काबा की तवाफ, अराफात में ठहराव, जानवर की कुर्बानी	नमाज और जानवर की कुबानी
ऐतिहासिक संदर्भ	हजरत इब्राहीम और हज की पर्रपरा	हजरत इब्राहीम द्वारा बेटे की कुर्बानी की धटना
कुर्वानी	हज यात्रा में भी दी जाती है	विशेष रूप से इस दिन दी जाती है
अनिवाथता	जीवन में एक बार अनिवार्य (धदि सक्षम	हर साल त्योहार के रूप में

मेष राशि

मेष राशि के जातक के लिए ये माह संयम और समझदारी की परीक्षा ले सकता है। खर्च और कार्यभार दोनों ही बढ़ सकते हैं। परिवार और रिश्तों में सामंजस्य बनाए रखना इस माह की सबसे बड़ी चुनौती होगी। हालांकि माह का आखिरी सप्ताह मन को राहत देगा।इस दौरान भाई-बहनों के साथ किसी बात को लेकर वाद-विवाद होने की आशंका बनी रहेगी। इस माह सिंगल लोगों की लाइफ में मनचाहे व्यक्ति की इंट्री भी हो सकती है। वहीं पहले से चले आ रहे संबंध खट्टी-मीठी तकरार के साथ चलते रहेंगे। माह के उत्तरार्ध में आप पर माता से विशेष स्नेह और सहयोग प्राप्त होगा। दांपत्य जीवन सुखमय बना रहेगा।

वृषभ राशि-

वृषभ राशि के जातक के लिए इस महीने की शुरुआत शुभ संकेतों से होगी, लेकिन माह के बीच में आपको थोड़ी सावधानी बरतने की जरूरत है। खासतौर पर निवेश और संबंधों में। प्रेम जीवन में उतार-चढ़ाव रहेगा, परंतु माह का अंत शांति और समझदारी से भरा होगा।इस दौरान आपको लोगों के बहकावे में आने की बजाय अपने विवेक से काम लेना होगा। रिश्ते-नाते की दृष्टि से यह माह मिश्रित फलदायी कहा जाएगा। प्रेम संबंध में कभी खुशी कभी गम की स्थिति रहेगी। दांपत्य जीवन में भी कुछेक बातों को लेकर तनाव बना रहेगा। जीवनसाथी की उपेक्षा के कारण मन उदास रहेगा।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि के जातकों को इस माह किसी कमजोर या छोटे व्यक्ति की उपेक्षा करने से बचना चाहिए। आपको यह बात अच्छे से समझनी होगी कि जहां पर सुई काम आती है, वहां पर सूजा काम नहीं आता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की भावनाओं का आदर करें तथा लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। प्रेम-प्रसंग में जल्दबाजी से बचें और अपने पार्टनर की फीलिंग्स की कद्र करें। यदि आप लंबे समय से रोजी-रोजगार को लेकर प्रयासरत हैं तो इस दौरान आपकी बहुप्रतीक्षित मनोकामना पूरी हो सकती है। कामकाजी महिलाओं का घर और बाहर दोनों जगह मान-सम्मान बढ़ेगा।महीने की शुरुआत में ध्यान भटक सकता है, लेकिन दूसरे सप्ताह से कार्यक्षेत्र में अच्छा सुधार होगा। छात्रों और नौकरीपेशा लोगों के लिए यह समय अच्छा बन सकता है। रिश्तों में समझ और धैर्य की जरूरत है।

कर्क राशि-

माह के मध्य से एक बार फिर चीजें आपके अनुकूल होती हुई नजर आएंगी। इस दौरान आपको कारोबार में मनचाही प्रगति एवं लाभ होगा। इस दौरान आपको ऋण-रोग आदि से मुक्ति मिलेगी। यदि कोई मामला कोर्ट-कचहरी में चल रहा था तो उसमें सुलह समझौता हो सकता है या फिर फैसला आपके पक्ष में आ सकता है। महीने की शुरुआत शुभ है और अटके कार्य पूरे होंगे। कार्यक्षेत्र में नए अवसर मिलेंगे। माह का मध्य भाग थोड़ी सतर्कता मांगता है, विशेषकर स्वास्थ्य और विरोधियों को लेकर। प्रेम और दांपत्य जीवन में स्थिरता आएगी। रिश्ते-नाते को बेहतर बनाए रखने के लिए कर्क राशि के जातकों को पूरे माह विवाद से बचने और संवाद का रास्ता अपनाने की आवश्यकता रहेगी। जिन चीजों का हल बहुत प्रयास करने से भी न निकल रहा हो, उसके लिए सही समय आने का इंतजार करना बेहतर रहेगा।

सिंह राशि-

सिंह राशि के जातकों को इस माह किसी भी कार्य को जल्दबाजी में करने की बजाय धैर्य और विवेक के साथ करने की आवश्यकता रहेगी। यह महीना उतार-चढ़ाव भरा रह सकता है। करियर में शुरुआत अच्छी रहेगी लेकिन दूसरे सप्ताह से चुनौतियां बढ़ेंगी। पारिवारिक और प्रेम संबंधों में अहंकार आड़े आ सकता है। सावधानी और विनम्रता ही समाधान है। माह के मध्य में छात्रों का मन पढ़ाई-लिखाई से उचट सकता है। इस दौरान स्वजनों के साथ किसी बात को लेकर मतभेद हो सकता है। प्रेम संबंध में गलतफहमियां पैदा होने के कारण लव पार्टनर के साथ दूरियां बढ़ सकती हैं। माह के उत्तरार्ध में सत्ता-सरकार से जुड़े मामलों में बड़ी

कामयाबी मिल सकती है। इस दौरान आपके कार्य थोड़े कठिनाई के साथ लेकर अंततः बन जाएंगे।

कन्याः

माह के मध्य तक चीजें आपके अनुकूल होंगी और आपके करियर में मनचाही प्रगति होती नजर आएगी। यदि आप लंबे समय से अपनी नौकरी में बदलाव की सोच रहे थे तो इस माह आपकी यह मनोकामना पूरी हो जाएगी। यह महीना कन्या राशि के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। करियर और सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रेम संबंधों को लेकर पारिवारिक सहमति भी मिल सकती है। उत्तरार्ध में संपत्ति और घर से जुड़े शुभ समाचार संभव हैं। इस दौरान उन्हें विशिष्ट पद या अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। माह के उत्तरार्ध में आप अपने कुटुंब की खुशियों के लिए अधिक धन खर्च कर सकते हैं। इस दौरान अचानक से पिकनिक-पर्यटन के प्रोग्राम बन सकते हैं। माह के उत्तरार्ध में आपको कारोबार में खासा लाभ होने की संभावना है। **तुला राशि-**

यह महीना तुला राशि वालों के लिए मिला-जुला रहने वाला है। करियर की शुरुआत थोड़ी चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन जल्द ही काम बनते नजर आएंगे। सरकारी या कानूनी मामलों में सावधानी जरूरी है। दूसरे सप्ताह से सुधार शुरू होगा और यात्राएं लाभकारी बनेंगी। माह की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार से जुड़ी कुछ दिक्कतों से जूझना पड़ सकता है। इस दौरान आपको नियम-कानून की अवहेलना करने से बचना चाहिए अन्यथा आर्थिक नुकसान के साथ अपमान झेलना पड़ सकता है। इस दौरान दूसरों के बहकावे में आकर कोई भी गल त काम करने से बचें। माह के मध्य में एक बार फिर घर और बाहर आपको कुछेक समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। हालांकि किसी वरिष्ठ अथवा प्रभावी व्यक्ति की मदद से माह के उत्तरार्ध तक परिस्थितियों से तालमेल बिठाने में आप कामयाब हो जाएंगे। **वृश्चिक राशि-**

इस माह आपकी बात से ही बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ेगी। ऐसे में लोगों के साथ तालमेल बिठाकर चलना ही आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा। माह की शुरुआत में सूझबूझ के साथ कार्य करने पर अपेक्षा के अनुसार फलों की प्राप्ति संभव है। व्यवसाय में धन लाभ होने की संभावनाएं बढ़ेंगी। करियर-कारोबार के साथ घर-परिवार के सदस्यों के साथ प्रेम-व्यवहार बनाए रखने पर अनुकूल ता बनी रहेगी।जीवनसाथी के प्रति एक विशेष नजरिया बनाए रखेंगे और उसकी ख्वाहिशों को पूरी करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। इस माह वृश्चिक जातकों को वाणी और व्यवहार में संयम रखना होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और मध्य में धार्मिक गतिविधियां लाभ देंगी। प्रेम जीवन में मधुरता और घरेलू सुख बना रहेगा।

धनु राशि-

महीने की शुरुआत में चिंता हो सकती है ल`किन धीरे-धीरे भाग्य का साथ मिलेगा। स्वास्थ्य और दस्तावेज संबंधित कामों में सतर्कता रखें। प्रेम जीवन में नई शुरुआत और दांपत्य संबंधों में मधुरता आएगी। इस माह ऐसे लोगों से उचित दूरी बनाए रखें जो आपके आत्मविश्वास को डगमगाने और बहकाने की कोशिश करते हैं। माह की शुरुआत में किसी कार्य विशेष को ल`कर मन चिंतित रहेगा, लेकिन सुखद पहलू ये है कि आपको उसे पूरा करने में स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन भी मिलता रहेगा। माह के मध्य से एक बार फिर आपको सौभाग्य का साथ मिलना प्रारंभ हो जाएगा और चीजें आपके मन मुताबिक होने लगेंगी।

मकर राशि-

मकर राशि के जातकों के लिए जून का महीना मिश्रित फलदायी रहने वाला है। हालांकि माह की शुरुआत ठीक-ठाक रहेगी और आपके सोचे हुए कार्य भी मनमुताबिक तरीके से समय पर पूरे होते हुए नजर आएंगे। माह के दूसरे सप्ताह में अचानक से आई कोई बड़ी समस्या आपकी चिंता का बड़ा कारण बन सकती है। परिवार और कुटुंब के प्रति सकारात्मक भाव बनाए रखें। माह के उत्तरार्ध में माता-पिता का विशेष स्नेह और समर्थन प्राप्त होगा। महीने की शुरुआत में सुख-सुविधा की ओर रुझान रहेगा। लेकिन दूसरे सप्ताह से उलझनें सामने आ सकती हैं। काम में लापरवाही न करें।

कुंभ राशि-

माह की शुरुआत काफी आपाधापी भरी रहने वाली है। इस दौरान छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए आपको अधिक परिश्रम और प्रयास करने पड़ सकते हैं। अनावश्यक चीजों पर बड़ी धनराशि खर्च होने पर आपका मन उदास रहेगा। प्रेम प्रसंग की दृष्टि से भी यह समय आपके लिए प्रतिकूल रहने वाला है। कारोबार में आय के मुकाबले खर्च की अधिकता रहेगी। माह के दूसरे सप्ताह में कामकाज के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा के योग बनेंगे। माह के उत्तरार्ध में आप अपने करियर-कारोबार को नई दिशा में कामयाब होंगे।

मीन राशि-

मीन राशि के जातकों के लिए जून महीने की शुरुआत आपके लिए सुखद साबित होगी। इस दौरान आपके अटके हुए कार्य बनेंगे। नौकरीपेशा लोगों को अधीनस्थ लोगों से पूरा सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा। कार्यक्षेत्र में सीनियर आप पर मेहरबान रहेंगे। सोचे हुए कार्यों को पूरा करने में कुछेक दिक्कतें आ सकती हैं। इस दौरान करियर-कारोबार से जुड़े मामलों में फैसला लेते समय जल्दबाजी न करें। यह समय सेहत और संबंध की दृष्टि से भी थोड़ा प्रतिकूल रह सकता ■

विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा आगामी २७ जून को...

भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा :
विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव

प्रतिवर्ष आषाढ शुक्ल द्वितीया को श्रीजगन्नाथ धाम पुरी में भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा अनुष्ठित होती है जो विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव है।

वास्तव में भगवान जगन्नाथ विश्व के पालक हैं, पालनहार हैं। वे भक्तों के भाव के इष्टदेव हैं, गृहदेव हैं, ग्राम्यदेव हैं, ओड़िशा प्रदेश के राज्य देव हैं तथा पूरे विश्व की सभी संस्कृतियों के प्राण हैं। गौरतलब है कि हमारे १८ पुराणों में

वैसे भी भगवान जगन्नाथ जगत के नाथ हैं। वे विश्व मानवता के स्वामी हैं। वे विश्व मानवता के केन्द्र बिन्दु हैं। वे अपने दारुविग्रह रुप में तथा देवदारु विग्रह रुप में सौर हैं, वैष्णव हैं, शैव हैं, शाक्त हैं, गाणपत्य हैं, बौद्ध हैं और जैन हैं। वे सभी धर्मों और सम्प्रदायों के जीवंत विग्रह देव समाहार हैं। वे कलियुग के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म हैं। वे अवतार नहीं अवतारी हैं। वे १६ कलाओं से सुसज्जित हैं। वे अपने चतुर्धा देव विग्रह स्वरुप में चारों वेदों के जीवंत स्वरुप हैं। वे आस्था एवं विश्वास के देव हैं। वे अपनी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के द्वारा विश्व मानवता को शांति, एकता तथा मैत्री का पावन संदेश देते हैं। श्रीजगन्नाथ पुरी धाम वास्तव में एक धर्मकानन है जो देखने में शंख की आकृति के रुप में दिखाई देती है इसीलिए इसे शंखक्षेत्र भी कहते हैं।

सबसे बड़ा पुराण स्कन्द पुराण है जिसमें कुल ८१ हजार श्लोक हैं। उस सकन्द पुराण के वैष्णव खण्ड में श्री पुरुषोत्म महात्म्य का वर्णन है। भगवान जगन्नाथ महात्म्य की जानकारी सर्वप्रथम भगवान शिव स्कन्दजी को देते हैं, स्कन्दजी महर्षि जैमिनि को देते हैं और जैमिनि जी मंदराचल पर्वत पर समस्त मुनियों को देते हैं। वास्तव में श्रीजगन्नाथ संस्कृति की सात्विक और तात्विक जानकारियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री जगन्नाथ महात्म्य में नामगुण, रुप गुण, धाम गुण और लीला गुणों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा, यही नहीं, ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, मत्स्यपुराण, रामायण, महाभारत और गीता में भी भगवान जगन्नाथ महात्म्य का वर्णन है।

भगवान जगन्नाथ की लीलाभूमि है पुरुषोत्तम क्षेत्र और उनकी लौकिक -अलौकिक लीलाओं का यथार्थ प्रमाण है- भगवान जगन्नाथ की प्रतिवर्ष अनुष्ठित आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को अनुष्ठित होनेवाली विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा जो विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव है। जिस ओड़िशा को कभी उत्कृष्ट देश भगवान जगन्नाथ के लिए कहा गया। जिस ओड़िशा को उत्कृष्ट कलाओं का प्रदेश कहा गया उसी सांस्कृतिक प्रदेश के भगवान जगन्नाथ का श्रीमंदिर उत्कल स्थापत्य और मूर्तिकला का बजोड़ उदाहरण है जिसके रत्नवंदी पर विराजमान हैं महाप्रभु जगन्नाथ चचुर्धा दारुविग्रह रुप में चारों वेदों के जीवंत स्वरुप के रुप में। भगवान जगन्नाथ दारुब्रह्म के रुप में तथा ब्रह्मदारु के रुप में प्रतिदिन स्वरुचि से नये-नये परिधान धारण करते हैं। अपना श्रृंगार करते हैं। ५६ प्रकार के अन्न के भोग को ग्रहण करते हैं। ओडिशी गायन सुनते हैं। भक्तों की प्रार्थना सुनते हैं। अपने सालमेग जैसे भक्त की मनोकामना पूर्ण करते हैं। इस सृष्टि के पालक के रुप में तथा इस सृष्टि के पालनहार के रुप में विश्व संस्कृति के प्राण बनकर मानवता की रक्षा करते हैं उनकी मानवीय लीला रथयात्रा निर्विवाद रुप में विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृति महोत्सव है।

पद्मपुराण के अनुसार आषाढ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि सभी कार्यों के लिए सिद्धियात्री होती है। कहने के लिए तो यह महोत्सव मात्र एक दिन अर्थात् आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुरी धाम के बड़दाण्ड (चौड़ी सड़क)

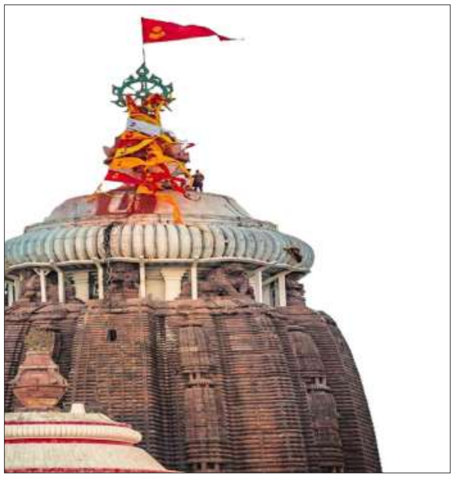

पर अनुष्ठित होता है लेकिन सच्चाई यह है कि प्रतिवर्ष वसंतपंचमी (सरस्वती पूजा) के दिन से ही नये रथों के निर्माण के लिए दारु (पवित्र काष्ठ य संग्रह कार्य आरंभ हो जाता है और रथयात्रा का वास्तव में समापन आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी के दिन होता है।

२०२५ की रथयात्रा के लिए ०३ फरवरी, वसंत पंचमी (सरस्वती पूजा) के दिन से रथ निर्माण हेतु काष्ठ्य संग्रह का पवित्र कार्य आरंभ हुआ। अक्षय तृतीया ३० अप्रैल को थी जिस दिन से नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ हुआ। रथ-निर्माण में कुल लगभग २०५ प्रकार के श्रीमंदिर के सेवायतगण सहयोग करते हैं। जिस प्रकार पांच तत्वों से मानव शरीर का निर्माण होता है ठीक उसी प्रकार पांच तत्वः काष्ठ, धातु, रंग, परिधान तथा सजावटी सामग्रियों से भगवान जगन्नाथ आदि देवों के रथों का निर्माण होता है।

अक्षय तृतीया के दिन से ही जलप्रिय भगवान जगन्नाथ की विजय प्रतिमा मदनमोहन की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी के चंदन तालाब में आरंभ हुई थी। आगामी १२ जून को देवस्नान पूर्णिमा है। उस दिन चतुर्धा देवविग्रहों को क्रमशः भगवान जगन्नाथ को ३५ स्वर्ण कलश पवित्र व शीतल जल से, ३३ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल से बलभद्रजी को, २२ स्वर्ण कलश पवित्र तथा शीतल जल से माता सुभद्राजी को तथा १८ स्वर्ण कलश पवित्र तथा शीतल जल से सुदर्शन भगवान को, कुल १०८ स्वर्ण कलश शीतल और पवित्र जल से श्रीमंदिर के देवस्नानमण्डप (जो सिंहद्वार के सटा हुआ है।) पर मलमलकर महास्नान कराया जाएगा। उन्हें गजानन वेष में सुसज्जित किया जाएगा।

अत्यधिक स्नान करने के कारण चतुर्धा देवविग्रह बीमार पड़ जाते हैं और उनको उनके बीमार कक्ष में अगले १५ दिनों तक रखकर उनका आयुर्वेद सम्मत उपचार होता है। उन १५ दिनों के दौरान जो भी देश-विदेश के जगन्नाथ भक्त पुरी धाम आते हैं वे श्रीमंदिर में भगवान जगन्नाथ के दर्शन नहीं कर पाते हैं क्योंकि श्रीमंदिर का पाट चतुर्धादेव विग्रह के बीमार होने के कारण बंद कर दिया जाता है। उस दौरान पुरी आने आनेवाले समस्त जगन्नाथ भक्त

> अत्यधिक स्नान करने के कारण चतुर्धा देवविग्रह बीमार पड़ जाते हैं और उनको उनके बीमार कक्ष में अगले १५ दिनों तक रखकर उनका आयुर्वेद सम्मत उपचार होता है। उन १५ दिनों के दौरान जो भी देश-विदेश के जगन्नाथ भक्त पुरी धाम आते हैं वे श्रीमंदिर में भगवान जगन्नाथ के दर्शन नहीं कर पाते हैं क्योंकि श्रीमंदिर का पाट चतुर्धादेव विग्रह के बीमार होने के कारण बंद कर दिया जाता है। उस दौरान पुरी आने आनेवाले समस्त जगन्नाथ भक्त पुरी से लगभग १८ किलोमीटर की दूरी पर ब्रह्मगिरि में जाकर भगवान अलारनाथ के दर्शन करते हैं जो भगवान जगन्नाथ के ही वास्तविक स्वरुप हैं। भक्तगण ब्रह्मगिरि के भगवान अलारनाथ को निवेदित किए जानेवाली खीरभोग को बड़े चाव से ग्रहण करते हैं।

पुरी से लगभग १८ किलोमीटर की दूरी पर ब्रह्मगिरि में जाकर भगवान अलारनाथ के दर्शन करते हैं जो भगवान जगन्नाथ के ही वास्तविक स्वरुप हैं। भक्तगण ब्रह्मगिरि के भगवान अलारनाथ को निवेदित किए जानेवाली खीरभोग को बड़े चाव से ग्रहण करते हैं। रथयात्रा के एक दिन पूर्व भगवान जगन्नाथ का नवयौवन दर्शन होता है। २०२५ वर्ष की भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा आगामी २७ जून को है। उस दिन श्रीमंदिर के रत्नवेदी से पहण्डी विजय कराकर चतुर्धा देवविग्रहों को रथारुढ़ करा दिया जाता है। पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा अपने राजमहल श्रीनाहर से सफेद वस्त्र धारणकर पालकी में आते हैं और तीनों ही रथों पर चंदनमिश्रित जल छिड़कर सोने की मूठवाली झाड़ू से रथों को पवित्र करते हैं। गजपति महाराजा के इस दायित्व को जगन्नाथ संस्कृति में छेरापहंरा कहते हैं। श्री पुरी गोवर्द्धन मठ के १४५वें पीठाधीश्वर पुरी के जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाभाग अपने परिकरों के संग आकर रथयात्रा की सुव्यवस्था देखते हैं तथा तीनों ही रथों पर जाकर अपना आत्मनिवेदन अर्पित करते हैं।

रथयात्रा में सबसे आगे चलता है तालध्वज रथ, उसके उपरांत चलता है देवदलन रथ और सबसे आखिरी में गुण्डीचा घर के लिए चलता है भगवान जगन्नाथ का रथ नंदिघोष रथ। २०२५ वर्ष की बाहुड़ा यात्रा (गुण्डीचा मंदिर से वापसी श्रीमंदिर यात्रा) आगामी ०५ जुलाई को है। सोनावेष आगामी ०६ जुलाई को है, अधरपणा आगामी ०७जुलाई को है तथा नीलाद्रि विजय आगामी ०८ जुलाई को है।

यह शास्वत सत्य है कि भगवान जगन्नाथ अपने जिस भक्त को अपने दर्शन के लिए बुलाते हैं वे ही भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी धाम आते हैं। कहते हैं कि रथारुढ़ भगवान के जो एकबार दर्शन कर लेता है उसे पुनः मोक्ष की कामना नहीं होती है और इसीलिए तो भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव माना जाता है जिसके आयोजन में पूरी ओड़िशा प्रदेश सरकार, पुरी श्रीमंदिर प्रशासन तथा स्थानीय प्रशासन के साथ-साथ स्थानीय पुलिस प्रशासन का भी पूर्ण सहयोग रहता है।

भगवान जगन्नाथ की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा को गुण्डीचा यात्रा, पतितपावन यात्रा, जनकपुरी यात्रा, घोष यात्रा, नव दिवसीय यात्रा तथा दशावतार यात्रा भी कहा जाता है। इन सभी नामों की सार्थकता ही भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा को विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक महोत्सव के रुप में करतीं हैं। वैसे भी भगवान जगन्नाथ जगत के नाथ हैं। वे विश्व मानवता के स्वामी हैं। वे विश्व मानवता के केन्द्र बिन्दु हैं। वे अपने दारुविग्रह रुप में तथा देवदारु विग्रह रुप में सौर हैं, वैष्णव हैं, शैव हैं, शाक्त हैं, गाणपत्य हैं, बौद्ध हैं और जैन हैं। वे सभी धर्मों और सम्प्रदायों के जीवंत विग्रह देव समाहार हैं। वे कलियुग के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म हैं। वे अवतार नहीं अवतारी हैं। वे १६ कलाओं से सुसज्जित हैं। वे अपने चतुर्धा देव विग्रह स्वरुप में चारों वेदों के जीवंत स्वरुप हैं। वे आस्था एवं विश्वास के देव हैं। वे अपनी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के द्वारा विश्व मानवता को शांति, एकता तथा मैत्री का पावन संदेश देते हैं। श्रीजगन्नाथ पुरी धाम वास्तव में एक धर्मकानन है जो देखने में शंख की आकृति के रुप में दिखाई देती है इसीलिए इसे शंखक्षेत्र भी कहते हैं।

यह पुरुषोत्तम क्षेत्र है जहां पर आदिशंकराचार्य महाभाग, चैतन्य, रामानुजाचार्य, जयदेव, नानक, कबीर और तुलसी जैसे अनेक कवि, संत-महात्मा और अनन्य जगन्नाथ भक्त महाप्रभु की इच्छा से आये और भगवान जगन्नाथ की लौकिक और अलौकिक महिमा को स्वीकार कर उनके आजीवन अनन्य भक्त बन गये। भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा वास्तविक श्रद्धा, भक्ति, आस्था, प्रेम, आत्मनिवेदन, करुणा, विश्वास का विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव है जो हमें समस्त अहंकारों के त्याग का संदेश देता है। इसप्रकार भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा पूरी तरह से विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव है जिसमें भगवान जगन्नाथ द्वारा अपने भक्तों के लिए सच्ची भक्ति, आस्था, विश्वास, दर्शन, ज्ञान, त्याग, समर्पण, दिव्य लौकिक-अलौकिक लीलाओं के दर्शन होते हैं। ■

-अशोक पाण्डेय

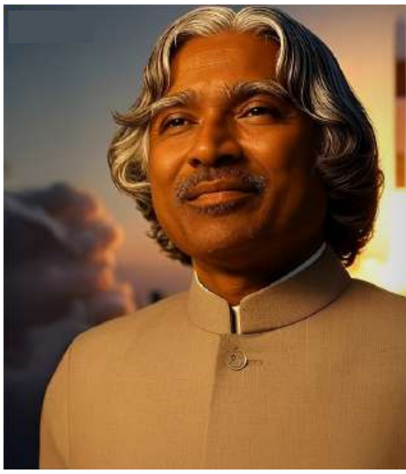

बड़े पर्दे पर भारत के 'मिसाइल मैन'

कान्स फिल्म फेस्टिवल २०२५ में एक बेहद खास फिल्म का ऐलान हुआ है। इस फिल्म में भारत के ११वें राष्ट्रपति और मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की जिंदगी को बड़े पर्दे पर उतारा जाएगा। इस फिल्म में नेशनल अवॉर्ड विनर और साउथ के सुपरस्टार धनुष डॉ. कलाम की भूमिका निभाते नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन ओम राउत करेंगे, फिल्म को अभिषेक अग्रवाल और टी-सीरीज के भूषण कुमार प्रोड्यूस करेंगे।

गौरतलब है कि डॉ. कलाम का जीवन एक प्रेरणा है। रामेश्वरम के एक सामान्य परिवार से निकलकर उन्होंने ISRO और DRDO जैसी संस्थाओं में बड़ा योगदान दिया। मिसाइल प्रोग्राम में अहम भूमिका निभाई और भारत को न्यूक्लियर ताकत बनाया। बाद में वे देश के राष्ट्रपति बने और हमेशा लोगों के बीच रहे।

फिल्म को लेकर ओम राउत का कहना है कि इस फिल्म को बनाना उनके लिए एक कलात्मक चुनौती और सांस्कृतिक जिम्मेदारी है।

इस फिल्म की स्क्रिप्ट साइविन क्वाड्रास ने लिखी है, बताया जा रहा है कि फिल्म की कहानी में सिर्फ राष्ट्रपति कलाम नहीं, बल्कि एक शायर, शिक्षक और सपने देखने वाले इंसान की झलक भी देखने को मिलेगी। अभिषेक अग्रवाल ने कहा, 'कलाम जी की कहानी को पर्दे पर लाना हमारे लिए सम्मान की बात है। ये फिल्म हर भारतीय के लिए गर्व का विषय होगी।' भूषण कुमार ने भी कहा, 'ये सिर्फ फिल्म नहीं, एक श्रद्धांजलि है।

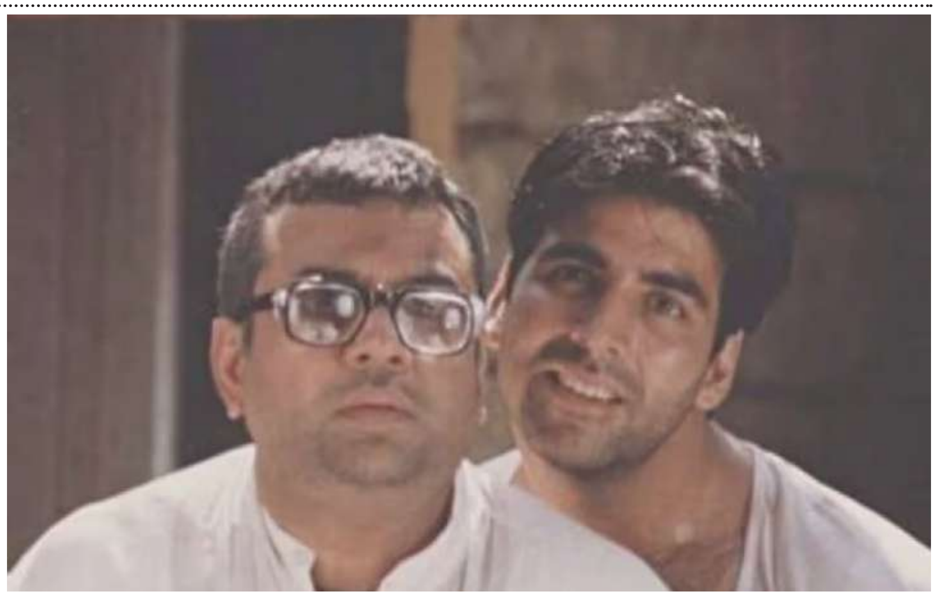

२५ करोड़ का लीगल नोटिस!

एक्टर परेश रावल इन दिनों फिल्म 'हेरा फेरी ३' को लेकर लगातार सुर्खियों में हैं। अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस केप ऑफ गुड फिल्म्स की तरफ से परेश रावल के अचानक फिल्म छोड़ने की वजह से २५ करोड़ रुपए की मांग करते हुए लीगल नोटिस भेजा गया है। अब प्रोडक्शन हाउस ने यह दावा किया है कि एक्टर को ११ लाख रुपए का भुगतान किया गया था। अब उनके अचानक फिल्म छोड़ने से काफी नुकसान हुआ है। अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस के वकील ने भी इस बात की पुष्टि की है कि परेश रावल को २५ करोड़ रुपए का मुकदमा किया गया है। अब मेकर्स की ओर से कहा गया कि परेश रावल ने खुद कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था। उन्होंने फिल्म शूटिंग तक शुरू कर दी थी और इसके लिए ११ लाख रुपए का पेमेंट भी किया जा चुका है। मेकर्स की तरफ से बयान में कहा गया है कि फिल्म 'हेरा फेरी ३ का टीजर ३ अप्रैल २०२५ को शूट हुआ था। जिसमें परेश रावल का ३ मिनट से ज्यादा फुटेज था।

केप ऑफ गुड फिल्म्स एलएलपी ने अपने वकील परिनम लॉ एसोसिएट्स के जरिए कहा है कि परेश रावल ने ३० जनवरी २०२५ को अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट के माध्यम से बताया था कि वो फिल्म का हिस्सा हैं। इसके बाद उन्होंने २७ मार्च २०२५ को एक अनौपचारिक एग्रीमेंट साइन करके फिल्म में काम करने की सहमति दी थी। मेकर्स का कहना है कि परेश रावल के यूं अचानक फिल्म छोड़ने से पैसे के साथ फिल्म की शूटिंग शेड्यूल पर भी फर्क पड़ा है। इसी वजह से प्रोडक्शन हाउस ने परेश रावल से २५ करोड़ रुपए का हर्जाना मांगा है। साथ ही लीगल नोटिस में यह भी जिक्र है कि अगर सात दिनों के भीतर मांग पूरी नहीं की गईं तो आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। अभी तक इस मामले पर परेश रावल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

हैप्पी हार्मोन्स को कैसे बढ़ाये...

हैप्पी हार्मोन्स बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है - संतुलित जीवनशैली अपनाना जिसमें शरीर, मन और रिश्तों का ख्याल रखा जाए। छोटी-छोटी आदतें, जैसे सुबह सूरज की रोशनी में टहलना, किसी की मदद करना, या दिल खोलकर हँसना – इन हार्मोन्स को प्राकृतिक रूप से बढ़ा सकते हैं।

☐ हैप्पी हार्मोन्स का आसान चार्ट से समझेः

हार्मोन का नाम	क्या करता है (भावना)	कैसे बढ़ाएं (उपाय)
डोपामिन	इनाम, मोटिवेशन, संतोष	टास्क पूरा करें, संगीत सुनें, नींद पूरी करें
सेरोटोनिन	मूड स्टेबल, शांति, सुकून	धूप में टहलें, ध्यान करें, हेल्दी खाएं
ऑक्सीटोसिन	प्यार, भरोसा, अपनापन	गले लगें, किसी से बात करें, मदद करें
एंडॉर्फिन्स	दर्द में राहत, ऊर्जा, हल्कापन	व्यायाम करें, हँसी-मज़ाक, डार्क चॉकलेट खाएं

'हैप्पी हार्मोन्स' वो रसायन (chemicals) होते हैं जो हमारे शरीर में बनते हैं और हमारे मूड, खुशी, प्यार, सुकून, और मोटिवेशन को प्रभावित करते हैं। ये हार्मोन्स हमारे दिमाग और शरीर के बीच संचार में मदद करते हैं और हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं। आप ज़्यादा खुश, शांत, और प्रेरित महसूस करते हो – ये सब हैप्पी हार्मोन्स की वजह से होता है।

☐ १. डोपामिन (Dopamine) - इनाम या खुशी का हार्मोन

क्या करता है? जब आप कोई काम पूरा करते हैं, कोई लक्ष्य हासिल करते हैं, या कोई चीज़ मिलती है जिससे आप खुश होते हैं - तब डोपामिन रिलीज़ होता है। कैसा महसूस होता है? संतुष्टि, गर्व, प्रेरणा

☐ २. सेरोटोनिन (Serotonin) - शांति और संतुलन का हार्मोन

क्या करता है? मूड को स्थिर रखता है, चिंता और डिप्रेशन को कम करता है। कैसा महसूस होता है? सुकून, संतुलन, खुशी

☐☐ ३. ऑक्सीटोसिन (Oxytocin) - प्यार और भरोसे का हार्मोन

क्या करता है? प्यार, गले लगना, किसी पर भरोसा करना – इन सब से जुड़ा होता है। कैसा महसूस होता है? अपनापन, जुड़ाव, भरोसा

☐ ४. एंडॉर्फिन्स (Endorphins) - प्राकृतिक दर्द निवारक और आनंद का हार्मोन

क्या करता है? दर्द को कम करता है और अच्छा फील कराता है। कैसा महसूस होता है? ऊर्जा, हल्कापन, ताजगी जब आपः किसी की मदद करते हो : ऑक्सीटोसिन बढ़ता है

कोई टास्क पूरा करते हो : डोपामिन रिलीज़ होता है

धूप में टहलते हो या ध्यान करते हो : सेरोटोनिन बढ़ता है

दौड़ते हो या हँसते हो : एंडॉर्फिन्स बढ़ते हैं ■

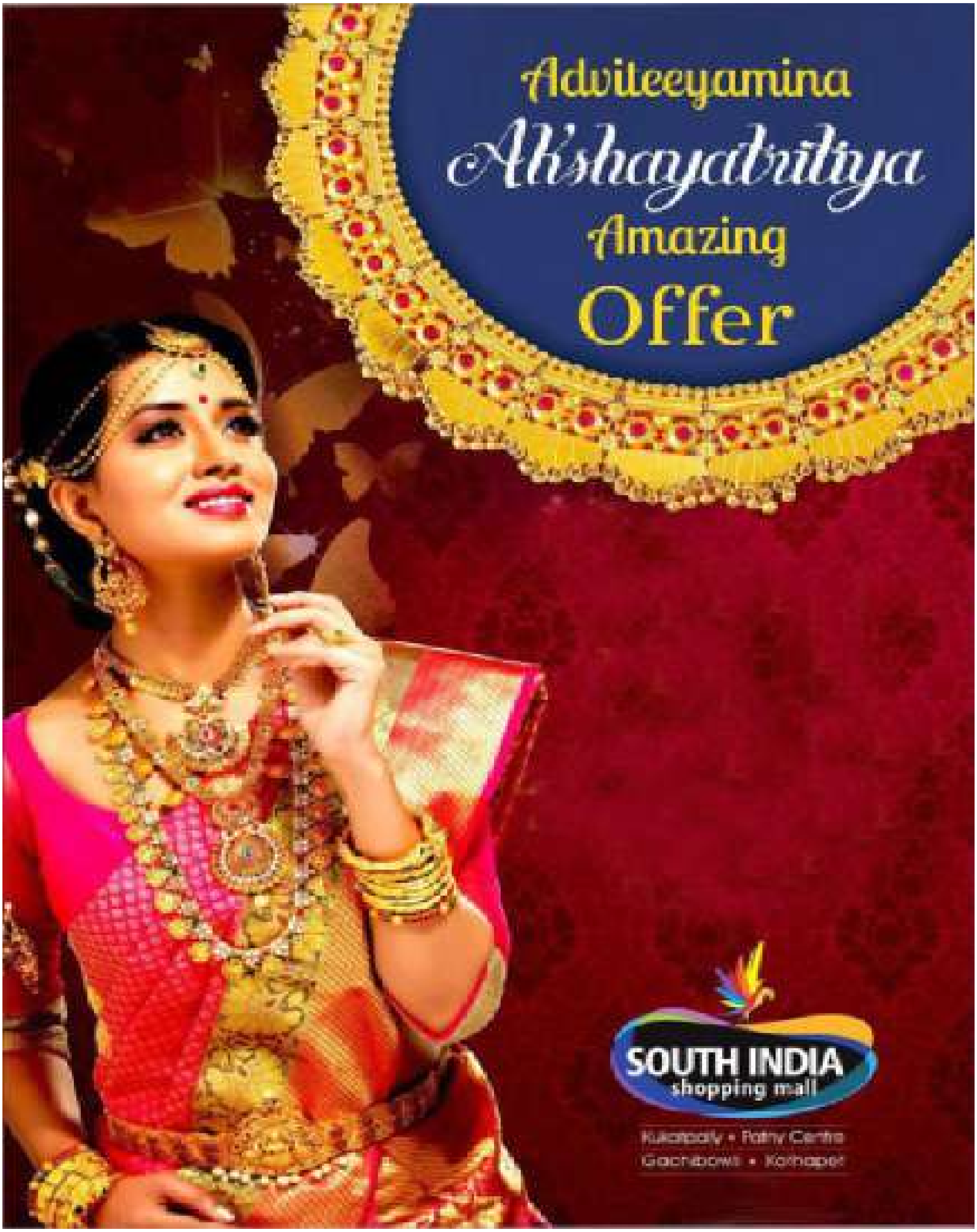
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

यह पहली बार है जब किसी भारतीय के नाम पर विशेषकर ओडिशा के व्यक्तित्व के नाम पर अमेरिका में एक अकादमिक शोध संस्थान स्थापित किया गया है। इस ऐतिहासिक पहल से न केवल भारत-अमेरिका शैक्षणिक संबंधों को सशक्त आधार मिलेगा अपितु ओडिशा की समृद्ध कला, संस्कृति और शिक्षा मॉडल को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान भी मिलेगी।

अमेरिका के प्रतिष्ठित नगर यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क (CUNY) ने प्रसिद्ध भारतीय शिक्षाविद, समाजसेवी एवं कीट और कीस के संस्थापक प्रोफेसर डॉ. अच्युत सामंत के सम्मान में एक शोध संस्थान का नामकरण किया है। यह संस्थान है "अच्युत सामंत इंडिया इनिशिएटिव क्यूनी क्रेस्ट इंस्टिट्यूट (ASIICCI)' – अमेरिकी छात्रों को भारत, विशेष रूप से ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत, आदिवासी विकास और शिक्षा के क्षेत्र में प्रोफेसर डॉ. सामंत के योगदान पर गहन शोध का अवसर प्रदान करेगा।

यह पहली बार है जब किसी भारतीय के नाम पर विशेषकर ओडिशा के व्यक्तित्व के नाम पर अमेरिका में एक अकादमिक शोध संस्थान

CUNY, न्यूयॉर्क ने महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत के नाम पर शोध संस्थान का किया नामकरण

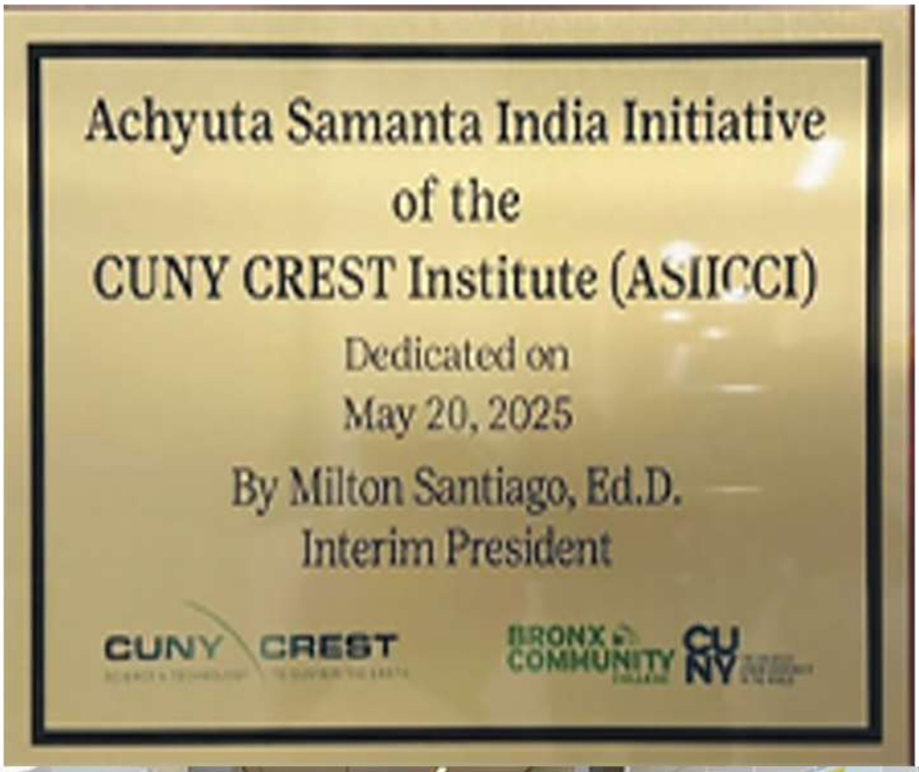

स्थापित किया गया है। इस ऐतिहासिक पहल से न केवल भारत-अमेरिका शैक्षणिक संबंधों को सशक्त आधार मिलेगा अपितु ओडिशा की समृद्ध कला, संस्कृति और शिक्षा मॉडल को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान भी मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में ब्रॉन्क्स कम्युनिटी कॉलेज (CUNY) के अध्यक्ष डॉ. मिल्टन सैंटियागो ने कीट और कीस का दौरा किया था, जहाँ वे प्रोफेसर डॉ.अच्युत सामंत के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए। परिणाम स्वरुप उन्होंने अमेरिका वापस लौटने के उपरांत प्रोफेसर डॉ. सामंत के नाम पर CUNY में एक शोध संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव रखा जिसे विश्वविद्यालय बोर्ड द्वारा अनुमोदित कर लिया गया। उद्घाटन समारोह के लिए प्रोफेसर डॉ. सामंत को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर उन्हें CUNY का सर्वोच्च सम्मान 'प्रेसिडेंशियल मेडल' भी प्रदान किया गया जो शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान का प्रतीक है।

इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. सामंत ने कहा, 'यह मेरे लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ओडिशा, कीट और कीस- परिवार के लिए एक अत्यंत गर्व और गौरव का क्षण है। अमेरिका जैसे देश में मेरे नाम पर शोध संस्थान का नामकरण होना भारतीय शिक्षा और सेवा क्षेत्र की एक बड़ी जीत है।' CUNY अमेरिका का एक प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालय है, जिसमें ३ लाख से अधिक छात्र अध्ययनरत हैं और यह १२२ देशों के विविध छात्र समुदायों को सेवा प्रदान करता है। ■

डॉ. अच्युत सामंत को मानद डॉक्टरेट की डिग्री

भुवनेश्वर, २६ मईः जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद् और केआईआईटी(कीट) और केआईएसएस(टीस() के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत को एपेक्स यूनिवर्सिटी, अचरोल, जयपुर द्वारा मानद डॉक्टरेट डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी.लिट.) की मानद डिग्री से सम्मानित किया गया। यह सम्मान औपचारिक रूप से राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े द्वारा २६ मई २०२५ को प्रदान किया गया। गौरतलब है कि यह ६६वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री डॉ अच्युत सामंत के नाम है। इस अवसर पर निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि को भी डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। अवसर पर अन्य विभूतियों में एपेक्स यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष और चांसलर डॉ. रवि जुनीवाल; इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर सोमदेव शतांशु और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

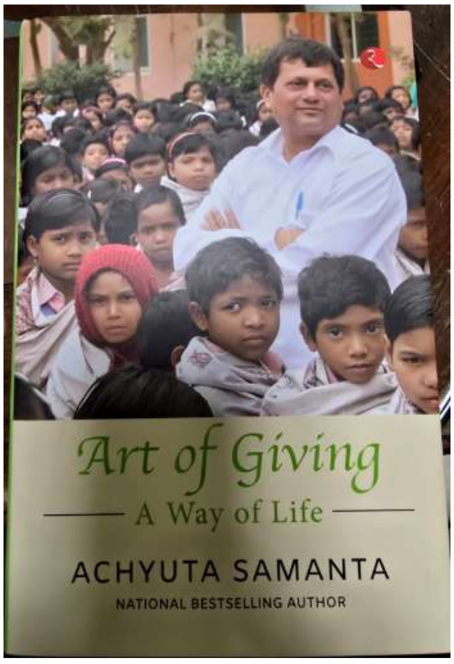

महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन-दर्शनः 'आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस का १२वां संस्करण पूरी दुनिया में १७ मई को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। साथ ही साथ यह यादगार दिवस उनके पैतृक प्रदेश ओडिशा के ३५ शहरों, के साथ-साथ भारत के विभिन्न शहरों और कई अन्तर्राष्ट्रीय स्थानों सहित लगभग १२० देशों में तथा ३५०० स्थानों पर भी मनाया गया। प्रोफेसर सामंत के हिन्दी सलाहकार अशोक पाण्डेय के पैतृक गांव बिहार के गोपभरवली, वक्सर में ही यह दिवस बड़े ही आनंदमय तरीके से मनाया गया। २०२५ वर्ष का इस का थिम थाः अच्छा पड़ोसी : सच्चा पड़ोसी। इस के आयोजन की खास बात ओड़िशा में यह रही कि यहां पर यह दिवस ३०० से अधिक ब्लॉकों और ५,००० से अधिक ग्राम पंचायतें में भी प्रोफेसर सामंत के शुभचिंतकों की ओर से मनाया गया।

शांति, एकता, मैत्री, भाईचारा तथा आपसी सद्भाव पर आधारित आर्ट ऑफ गिविंग के संदेश को एक सामाजिक आंदोलन के रुप में जन-जन तक पहुंचाने के लिए सार्वजनिक बैठकें और सामुदायिक समारोह जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

'आर्ट ऑफ गिविंग' पहल की शुरुआत १७ मई, २०१३ को प्रसिद्ध शिक्षाविद् , निःस्वार्थ समाजसेवी तथा आदिवासी समुदाय के जननायक प्रोफेसर अच्युत सामंत ने भारतीय समाज में आपसी सहयोग, प्रेम, शांति, मैत्री, सद्भाव और समानता लाने की भावना से आरंभ किया था। पिछले ११ वर्षों में यह सामाजिक आंदोलन वैश्विक स्तर पर फैल गया। हर साल यह आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस एक अनूठी और समयोचित थीम पर आधारित होता है। इस साल

'आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस का १२वां संस्करण पूरी दुनिया में मनाया गया

की थीम थी 'नेबरगुड' अर्थात् अच्छा पड़ोसीः सच्चा पड़ोसी। पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंधों को बढ़ावा देना। २०२५ में तो यह आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस मानव और मानवता की सेवा का प्रतीक बन गया है।

ऐसे में अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए ओड़िशा प्रदेश की राजधानी स्थित कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने अपने आभार संदेश में कहा कि १७ मई, २०१३ को उन्होंने जो बीज आर्ट ऑफ गिविंग' दिवस का बोया था वह अब एक जन आंदोलन बन चुका है। दुनिया के लोगों ने इसे पूरे दिल से अपनाया है। यह जन-जन में इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसे भारत और ओडिशा के लोग तो एक सामाजिक त्यौहार के रुप में मना रहे हैं। उन्होंने यह उम्मीद की कि यह सामाजिक आंदोलन पूरे विश्व में शांति, मैत्री, सद्भाव, सौहार्द और प्रेम को और अधिक मजबूती प्रदान करेगा। ■

-अशोक पाण्डेय

हिन्दी बोलने -पढ़ने के साथ-साथ लिखने का भी अवश्य अभ्यास करें!'

भारत की सबसे सरल और सशक्त जन सम्पर्क की भाषा हिन्दी ही है। लेकिन आज जिस तरह से सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ रहा है उसमें सबसे बड़ी चिंता हिन्दी भाषा कौशल को बचाने की है अर्थात् हिन्दी सुनने,बोलने, पढ़ने और लिखने की है। गांधी जी की लिखावट अच्छी नहीं थी जिससे वे आजीवन दुखी रहे। वहीं मास्को आदि महानगरों की लिखावट बहुत सुंदर आज भी है। यूरोपीय देशों के लोगों में बोलने की अच्छी कला में महारत प्राप्त है। मेरे देश-विदेश के शिक्षण का अनुभव कहता है कि हिन्दी लिखावट आज की सबसे बड़ी समस्या है। इसपर न केवल विचार करें अपितु हिन्दी लिखने की आदत स्वयं भी डालें और अपने बच्चों को भी डलवाएं!

कीट ने भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल के साथ किया समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

शैक्षिक सशक्तिकरण और समावेशी राष्ट्र निर्माण की दिशा में ऐतिहासिक कदम बढ़ाते हुए, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने भारतीय नौसेना और भारतीय तटरक्षक बल के साथ-साथ उनसे संबंधित कल्याण संघों जैसेः नौसेना पत्नी कल्याण संघ (एनडब्ल्यूडब्ल्यूए) और तटरक्षक कल्याण और कल्याण संघ (सीजीडब्ल्यूडब्ल्यूए) के साथ अलग-अलग समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य रक्षा कर्मियों के बच्चों और उनके आश्रितों के लिए छात्रवृत्ति, आरक्षित सीटें और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक बेहतर पहुँच प्रदान करना है।

समझौता ज्ञापन के तहत, कीट एमबीबीएस कार्यक्रम में मृत नौसेना कर्मियों के दो बच्चों के लिए १० प्रतिशत ट्यूशन फीस माफ करेगा। इसके अलावा, बीडीएस और बीएससी (नर्सिंग) में पांच-पांच सीटें और बीटेक (कंप्यूटर साइंस और संबद्ध शाखाओं) में चार सीटें आरक्षित की गई हैं। संस्थागत शुल्क पर ५० प्रतिशत छात्रवृत्ति के साथ नौसेना परिवारों के लिए अन्य सभी गैर-चिकित्सा कार्यक्रमों में असीमित संख्या में सीटें भी खोल दी गई हैं।

करारनामे पर कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सरनजीत सिंह, एनडब्ल्यूडब्ल्यूए के अध्यक्ष शशि त्रिपाठी और नौसेना शिक्षा अधिकारी कमोडोर एसएम उरोज अतहर ने हस्ताक्षर किए।

यह समझौता ज्ञापन नौसेना कर्मियों द्वारा दिए गए बलिदानों की एक महत्वपूर्ण मान्यता है और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुंच को आसान बनाकर उनके परिवारों का समर्थन करने के लिए बनाया गया एक सफल प्रयास है। इसी प्रकार एक समानांतर पहल में, कीट ने भारतीय तटरक्षक बल और सीजीडब्ल्यूडब्ल्यूए के साथ एक समान समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसका उद्देश्य शैक्षणिक सहयोग, अनुसंधान और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना है। इस समझौते के अनुसार, दो एमबीबीएस सीटें, पांच बीडीएस सीटें और पांच बीएससी नर्सिंग सीटें तटरक्षक

कर्मियों के बच्चों के लिए कीम्स में आरक्षित होंगी, जिसमें संस्थागत शुल्क पर १० प्रतिशत छात्रवृत्ति होगी।

प्रौद्योगिकी और संबद्ध क्षेत्रों के क्षेत्र में, कंप्यूटर विज्ञान और संबंधित शाखाओं में चार बीटेक सीटें निर्धारित की गई हैं। इसके अतिरिक्त, अन्य सभी गैर-चिकित्सा कार्यक्रम कोस्ट गार्ड परिवारों के लिए खुले रहेंगे, जिसमें संस्थागत शुल्क पर ५० प्रतिशत छात्रवृत्ति होगी। दोनों समझौता ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए कीट की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। अपनी प्रतिक्रिया में कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने इस पहल की उन्मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए इसे भारत के रक्षा कर्मियों की निस्वार्थ सेवा के लिए एक हार्दिक श्रद्धांजलि बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा सशक्तिकरण के लिए सबसे शक्तिशाली साधन है, और कीट को राष्ट्र के संरक्षकों को यह समर्थन देने पर गर्व है। ■

कुल ६७ मानद डॉक्टरेट की डिग्री पानेवाले भारत के प्रथम शिक्षाविद् बने प्रोफेसर अच्युत सामंत

ओड़िशा प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर स्थित विश्व स्तरीय शैक्षिक संस्थाओं- कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत को उनकी उल्लेखनीय व असाधारण शैक्षिक पहल तथा निःस्वार्थ

समाजसेवा के बदौलत हिमालयन यूनिवर्सिटी, ईटानगर की ओर से मानद ड़ॉक्टरेट की डिग्री प्रदान की है जो प्रोफेसर सामंत के व्यक्तिगत जीवन की ६७वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री है। इसप्रकार अब भारत के प्रथम शिक्षाविद् बन चुके हैं प्रोफेसर अच्युत सामंत जिन्हें इतनी अधिक मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिली है।

अवसर पर शिक्षा, ग्रामीण कार्य, संसदीय कार्य, पर्यटन और पुस्तकालय मंत्री पासंग दोरजी सोना,, यूनिवर्सिटी के चेयरमैन हेमंत गोयल, कुलपति प्रो. (डॉ.) प्रकाश दिवाकरन आदि सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ ही साथ अवसर पर हिमालयन यूनिवर्सिटी की अकादमी परिषद् तथा प्रबंधन बोर्ड के अनेक माननीय सदस्यगण तथा आमंत्रित गणमान्य मेहमानों के साथ अनेक विद्वान तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।अपनी प्रतिक्रिया में प्रोफेसर अच्युत सामंत ने हिमाल यन यूनिवर्सिटी, ईटानगर,अरुणाचलप्रदेश के सभी शीर्ष अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भगवान जगन्नाथ की असीम अनुकम्पा बताया। ■

श्रीजगन्नाथ धाम पुरी में देवस्नानपूर्णिमा आगामी १२जून को

श्रीजगन्नाथ धाम पुरी में २०२५ की देवस्नानपूर्णिमा आगामी १२जून, ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को है। इसे चतुर्धा देवविग्रहों की स्नानयात्रा भी कहा जाता है। इसे जगत के नाथ भगवान जगन्नाथ का जन्मोत्सव भी कहा जाता है। श्रीमंदिर के देव स्नानमण्डप पर चतुर्धा देवविग्रहों के देवस्नान पूर्णिमा मनाये जाने की परम्परा लगभग एक हजार वर्ष पुरानी तथा गौरवशाली परम्परा है। उस दिन भोर में ही श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर विराजमान चतुर्धा देवविग्रहों, जगन्नाथ जी, बलभद्रजी, सुभद्राजी और सुदर्शन जी को पहण्डी विजय कराकर सिंहद्वार के समीप निर्मित देवस्नानमण्डप पर लाया जाता है। श्रीमंदिर प्रांगण के विमला माता के स्वर्ण कूप से १०८ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल लाकर चतुर्धा देवविग्रहों को देव स्नानमण्डप पर मलमलकर नहलाया जाता है जिसे देवदारुविग्रहों का महास्नान भी कहा जाता है।

३५ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल से भगवान जगन्नाथ जी को, ३३ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल से बलभद्रजी को, २२ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल से सुभद्राजी को तथा १८ स्वर्ण कलश पवित्र और शीतल जल से सुदर्शन जी को महास्नान कराया जाता है। उसके उपरांत श्री जगन्नाथ जी के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेव जी अपने राजमहल श्रीनाहर से पालकी में आकर छेरापंहरा का दायित्व निभाते हैं। (देव स्नानमण्डप पर चंदनमिश्रित पवित्र जल डालकर सोने की मूठवाली झाडू से पंहरा (शुद्ध) करते हैं।)

भगवान जगन्नाथ को उनके एक महाराष्ट्र के एक गाणपत्य विनायक भट्ट नामक भक्त की इच्छानुसार भगवान जगन्नाथ को गजानन वेष में सुशोभित किया जाता है। महास्नान अर्थात् अत्यधिक स्नान करने के चलते चतुर्धादेवविग्रह बीमार पड़ जाते हैं और उन्हें एकांत उपचार के लिए उनके बीमार कक्ष में ले जाकर रखा जाता है जहां पर उन्हें लगतार १५ दिनों तक आयुर्वेदसम्मत उपचार होता है। उन १५दिनों तक श्रीमंदिर का कपाट भक्तों के दर्शन के लिए बन्द कर दिया जाता है। उन १५ दिनों के दौरान जितने भी जगन्नाथ भक्त पुरी धाम आते हैं वे भगवान जगन्नाथजी के दर्शन पुरी से लगभग १८ किलोमीटर की दूरी पर ब्रह्मगिरि में अवस्थित भगवान अलारनाथ के दर्शन के रूप में करते हैं।

ब्रह्मगिरि में भगवान अलारनाथ की काले प्रस्तर की भगवान विष्णु की अति मोहक मूर्ति है। वहां पर उन १५ दिनों तक भगवान अलारनाथ को खीर भोग निवेदित की जाती है जिसे वहां आगत समस्त जगन्नाथ भक्त बडे चाव से भगवान जगन्नाथ के महाप्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। ■

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-97

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

प्रश्न १ : हमारे शरीर में कितनी हड्डियां होती हैं?

प्रश्न २ : आपके दोनों हाथों में कितनी उगुलियां हैं?

प्रश्न ३ : संतरे का रंग क्या होता है?

प्रश्न ४ : सन्ता क्लॉज कब गिफ्ट लेकर आता है?

प्रश्न ५ : हम किस त्योहार में रात के समय दीप (दिया) जलाते हैं?

प्रश्न ६ : मिट्टी का बर्तन कौन बनाता है?

प्रश्न ७ : क्रिकेट के खेल में कितने खिलाड़ी खेलते हैं?

प्रश्न ८ : सूरज किस दिशा में उगता है?

प्रश्न ९ : सूरज किस दिशा में डूबता है?

प्रश्न १० : दिशाएं कितनी होती हैं?

प्रश्न ११ : सर्वाधिक कोयला उत्पादक राज्य कौन सा है ?

प्रश्न १२ : सहरिया जनजाति कहॉ पाई जाती है ?

प्रश्न १३: सार्स क्या है ?

प्रश्न १४ : सिल्क (रेशम) का सबसे बड़ा उत्पादक देश कौन सा है ?

प्रश्न १५: सीमांत गांधी के नाम से किसे जाना जाता है ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....

....

....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

मन्दी

चेयरिंग क्रास पर पहुँचकर मैंने देखा कि उस वक़्त वहाँ मेरे सिवा एक भी आदमी नहीं है। एक बच्चा, जो अपनी आया के साथ वहाँ खेल रहा था, अब उसके पीछे भागता हुआ ठंडी सडक़ पर चला गया था। घाटी में एक जली हुई इमारत का ज़ीना इस तरह शून्य की तरफ़ झाँक रहा था जैसे सारे विश्व को आत्महत्या की प्रेरणा और अपने ऊपर आकर कूद जाने का निमन्त्रण दे रहा हो। आसपास के विस्तार को देखते हुए उस निःस्तब्ध एकान्त में मुझे हार्डी के एक लैंडस्केप की याद हो आयी, जिसके कई पृष्ठों के वर्णन के बाद मानवता दृश्यपट पर प्रवेश करती है–अर्थात एक छकड़ा धीमी चाल से आता दिखाई देता है। मेरे सामने भी खुली घाटी थी, दूर तक फैली पहाड़ी शृंखलाएँ थीं, बादल थे, चेयरिंग क्रास का सुनसान मोड़ था–और यहाँ भी कुछ उसी तरह मानवता ने दृश्यपट पर प्रवेश किया–अर्थात एक पचास-पचपन साल का भला आदमी छड़ी टेकता दूर से आता दिखाई दिया। वह इस तरह इधर-उधर नज़र डालता चल रहा था जैसे देख रहा हो कि जो ढेले-पत्थर कल वहाँ पड़े थे, वे आज भी अपनी जगह पर हैं या नहीं। जब वह मुझसे कुछ ही फ़ासले पर रह गया, तो उसने आँखें तीन-चौथाई बन्द करके छोटी-छोटी लकीरों जैसी बना लीं और मेरे चेहरे का गौर से मुआइना करता हुआ आगे बढने लगा। मेरे पास आने तक उसकी नज़र ने जैसे फ़ैसला कर लिया, और उसने रुककर छड़ी पर भार डाले हुए पल-भर के वक्फे के बाद पूछा, 'यहाँ नए आये हो?'

'जी हाँ, 'मैंने उसकी मुरझाई हुई पुतलियों में अपने चेहरे का साया देखते हुए ज़रा संकोच के साथ कहा। 'मुझे लग रहा था कि नए ही आये हो,' वह बोला, 'पुराने लोग तो सब अपने पहचाने हुए हैं।' 'आप यहीं रहते हैं?' मैंने पूछा।

'हाँ यहीं रहते हैं,' उसने विरक्ति और शिकायत के स्वर में उत्तर दिया, 'जहाँ का अन्न-जल लिखाकर लाये थे, वहीं तो न रहेंगे...अन्न-जल मिले चाहे न मिले।' उसका स्वर कुछ ऐसा था जैसे मुझसे उसे कोई पुराना गिला हो। मुझे लगा कि या तो वह बेहद निराशावादी है, या उसे पेट का कोई संक्रामक रोग है। उसकी रस्सी की तरह बँधी टाई से यह अनुमान होता था कि वह एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी है जो अब अपनी कोठी में सेब का बग़ीचा लगाकर उसकी रखवाली किया करता है।

'आपकी यहाँ पर अपनी ज़मीन होगी?' मैंने उत्सुकता न रहते हुए भी पूछ लिया।

'ज़मीन?' उसके स्वर में और भी निराशा और शिकायत भर आयी, 'ज़मीन कहाँ जी?' और फिर जैसे कुछ खीझ और कुछ व्यंग्य के साथ सिर हिलाकर उसने कहा, 'ज़मीन!'

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब मुझे क्या कहना चाहिए। उसी तरह छड़ी पर भार दिये मेरी तरफ़ देख रहा था। कुछ क्षणों का वह ख़ामोश अन्तराल मुझे विचित्र-सा लगा। उस स्थिति से निकलने के लिए मैंने पूछ लिया, 'तो आप यहाँ कोई अपना निज का काम करते हैं?'

'काम क्या करना है जी?' उसने जवाब दिया, 'घर से खाना अगर काम है, तो वही काम करते हैं और आजकल काम रह क्या गये हैं? हर काम का बुरा हाल है!' मेरा ध्यान पल-भर के लिए जली हुई इमारत के ज़ीने की तरफ़ चला गया। उसके ऊपर एक बन्दर आ बैठा था और सिर खुजलाता हुआ शायद यह फ़ैसला करना चाह रहा था कि उसे कूद जाना चाहिए या नहीं।

'अकेले आये हो?' अब उस आदमी ने मुझसे पूछ लिया।

'जी हाँ, अकेला ही आया हूँ,' मैंने जवाब दिया।

'आजकल यहाँ आता ही कौन है?' वह बोला, 'यह तो बियाबान जगह है। सैर के लिए अच्छी जगहें हैं शिमला, मंसूरी वग़ैरह। वहाँ क्यों नहीं चले गये?'

मुझे फिर से उसकी पुतलियों में अपना साया नज़र आ गया। मगर मन होते हुए भी मैं उससे

'जी हाँ,' मैंने कहा, 'कथलक रोड पर एक कोठी ले ली है।' 'सभी कोठियाँ खाली पड़ी हैं,' वह बोला, 'हमारे पास भी एक कोठरी थी। अभी कल ही दो रुपये महीने पर चढ़ाई है। दो-तीन महीने लगी रहेगी। फिर दो-चार रुपये डालकर सफ़ेदी करा देंगे। और क्या!' फिर दो-एक क्षण के बाद उसने पूछा, 'खाने का क्या इन्तज़ाम किया है?' 'अभी कुछ नहीं किया। इस वक़्त इसी ख़्याल से बाहर आया था कि कोई अच्छा-सा होटल देख लूँ, जो ज़्यादा महँगा भी न हो।'

'नीचे बाज़ार में चले जाओ,' वह बोला, 'नत्थासिंह का होटल पूछ लेना। सस्ते होटलों में वही अच्छा है। वहीं खा लिया करना। पेट ही भरना है! और क्या!' और अपनी नहूसत मेरे अन्दर भरकर वह पहले की तरह छड़ी टेकता हुआ रास्ते पर चल दिया।

यह नहीं कह सका कि मुझे पहले पता होता कि वहाँ आकर मेरी उससे मुलाक़ात होगी, तो मैं ज़रूर किसी और पहाड़ पर चला जाता।

'ख़ैर, अब तो आ ही गये हो,' वह फिर बोला, 'कुछ दिन घूम-फिर लो। ठहरने का इन्तज़ाम कर लिया है?' 'जी हाँ,' मैंने कहा, 'कथलक रोड पर एक कोठी ले ली है।'

'सभी कोठियाँ खाली पड़ी हैं,' वह बोला, 'हमारे पास भी एक कोठरी थी। अभी कल ही दो रुपये महीने पर चढ़ाई है। दो-तीन महीने लगी रहेगी। फिर दो-चार रुपये डालकर सफ़ेदी करा देंगे। और क्या!' फिर दो-एक क्षण के बाद उसने पूछा, 'खाने का क्या इन्तज़ाम किया है?'

'अभी कुछ नहीं किया। इस वक़्त इसी ख़्याल से बाहर आया था कि कोई अच्छा-सा होटल देख लूँ, जो ज़्यादा महँगा भी न हो।' 'नीचे बाज़ार में चले जाओ,' वह बोला, 'नत्थासिंह का होटल पूछ लेना। सस्ते होटलों में वही अच्छा है। वहीं खा लिया करना। पेट ही भरना है! और क्या!'

और अपनी नहूसत मेरे अन्दर भरकर वह पहले की तरह छड़ी टेकता हुआ रास्ते पर चल दिया।

नत्थासिंह का होटल बाज़ार में बहुत नीचे जाकर था। जिस समय मैं वहाँ पहुँचा बुड्ढा सरदार नत्थासिंह और उसके दोनों बेटे अपनी दुकान के सामने हलवाई की दुकान में बैठे हलवाई के साथ ताश खेल रहे थे। मुझे देखते ही नत्थासिंह ने तपाक से अपने बड़े लडक़े से कहा, 'उठ बसन्ते, ग्राहक आया है।'

बसन्ते ने तुरन्त हाथ के पत्ते फेंक दिए और बाहर निकल आया। 'क्या चाहिए साब?' उसने आकर अपनी गद्दी पर बैठते हुए पूछा।

'एक प्याली चाय बना दो,' मैंने कहा।

'अभी लीजिए!' और वह केतली में पानी डालने लगा। 'अंडे-वंडे रखते हो?' मैंने पूछा।

'रखते तो नहीं, पर आपके लिए अभी मँगवा देता हूँ,' वह बोला, 'कैसे अंडे लेंगे? फ्राई या आमलेट?'

'आमलेट,' मैंने कहा।

'जा हरबंसे, भागकर ऊपर वाले लाला से दो अंडे ले आ,' उसने अपने छोटे भाई को आवाज़ दी। आवाज़ सुनकर हरबंसे ने भी झट से हाथ के पत्ते फेंक दिये और उठकर बाहर आ गया। बसन्ते से पैसे लेकर वह भागता हुआ बाज़ार की सीढ़ियाँ चढ़ गया। बसन्ता केतली भट्ठी पर रखकर नीचे से हवा करने लगा।

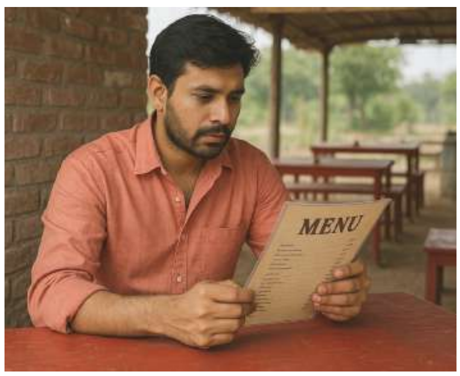

हलवाई और नत्थासिंह अपने-अपने पत्ते हाथ में लिये थे। हलवाई अपने पाजामे का कपड़ा उँगली और अँगूठे के बीच में लेकर जाँघ खुजलाता हुआ कह रहा था, 'अब चढ़ाई शुरू हो रही है नत्थासिंह!' 'हाँ, अब गर्मियाँ आयी हैं, तो चढ़ाई शुरू होगी ही,' नत्थासिंह अपनी सफ़ेद दाढ़ी में उँगलियों से कंघी करता हुआ बोला, 'चार पैसे कमाने के यही तो दिन हैं।'

'पर नत्थासिंह, अब वह पहले वाली बात नहीं है,' हलवाई ने कहा, 'पहले दिनों में हज़ार-बारह सौ आदमी इधर को आते थे, हज़ार-बारह सौ उधर को जाते थे, तो लगता था कि हाँ, लोग बाहर से आये हैं। अब भी आ गये सौ-पचास तो क्या है!' 'सौ-पचास की भी बड़ी बरकत है,' नत्थासिंह धार्मिकता के स्वर में बोला।

'कहते हैं आजकल किसी के पास पैसा ही नहीं रहा,' हलवाई ने जैसे चिन्तन करते हुए कहा, 'यह बात मेरी समझ में नहीं आती। दो-चार साल सबके पास पैसा हो जाता है, फिर एकदम सब के सब भूखे-नंगे हो जाते हैं! जैसे पैसों पर किसी ने बाँध बाँधकर रखा है। जब चाहता है छोड़ देता है, जब चाहता है रोक लेता है!'

'सब करनी कर्तार की है,' कहता हुआ नत्थासिंह भी पत्ते फेंककर उठ खड़ा हुआ।

'कर्तार की करनी कुछ नहीं है,' हलवाई बेमन से पत्ते रखता हुआ बोला, 'जब कर्तार पैदावार उसी तरह करता है, तो लोग क्यों भूखे-नंगे हो

'ये यहाँ आकर खाना खाते हैं, इन्हें कोयला नहीं चाहिए,' अब बैरे ने उसे झिड़क दिया। 'आपको खाना बनाने के लिए नौकर चाहिए?' लड़की बात करने से नहीं रुकी, 'मेरा छोटा भाई है। सब काम जानता है। पानी भी भरेगा, बरतन भी मलेगा...।' 'तू जाती है यहाँ से कि नहीं?' बैरे का स्वर अब दुतकारने का-सा हो गया। 'आठ रुपये महीने में सारा काम कर देगा,' लड़की उस स्वर को महत्त्व न देकर कहती रही, 'पहले एक डॉक्टर के घर में काम करता था। डॉक्टर अब यहाँ से चला गया है...।' बैरे ने अब उसे बाँह से पकड़ लिया और बाहर की तरफ़ ले जाता हुआ बोला, 'चल-चल, जाकर अपना काम कर। कह दिया है, उन्हें नौकर नहीं चाहिए, फिर भी बके जा रही है!' 'मैं कल इसी वक़्त उसे लेकर आऊँगी,' लड़की ने फिर भी चलते-चलते मुड़कर कह दिया। बैरा उसे दरवाज़े से बाहर पहुँचाकर पास आता हुआ बोला, 'कमीन जात! ऐसे गले पड़ जाती हैं कि बस...!'

'खाना अभी कितनी देर में लाओगे?' मैंने उससे पूछा।

जाते हैं? यह बात मेरी समझ में नहीं आती।'

नत्थासिंह ने दाढ़ी खुजलाते हुए आकाश की तरफ़ देखा, जैसे खीज रहा हो कि कर्तार के अलावा दूसरा कौन है जो लोगों को भूखे-नंगे बना सकता है।

'कर्तार को ही पता है,' पल-भर बाद उसने सिर हिलाकर कहा।

'कर्तार को कुछ पता नहीं है,' हलवाई ने ताश की गड्डी फटी हुई डब्बी में रखते हुए सिर हिलाकर कहा और अपनी गद्दी पर जा बैठा। मैं यह तय नहीं कर सका कि उसने कर्तार को निर्दोष बताने की कोशिश की है, या कर्तार की ज्ञानशक्ति पर सन्देह प्रकट किया है!

कुछ देर बाद मैं चाय पीकर वहाँ से चलने लगा, तो बसन्ते ने कुल छः आने माँगे। उसने हिसाब भी दिया–चार आने के अंडे, एक आने का घी और एक आने की चाय। मैं पैसे देकर बाहर निकला, तो नत्थासिंह ने पीछे से आवाज़ दी, 'भाई साहब, रात को खाना भी यहीं खाइएगा। आज आपके लिए स्पेशल चीज़ बनाएँगे! ज़रूर आइएगा।'

उसके स्वर में ऐसा अनुरोध था कि मैं मुस्कराए बिना नहीं रह सका। सोचा कि उसने छः आने में क्या कमा लिया है जो मुझसे रात को फिर आने का अनुरोध कर रहा है।

शाम को सैर से लौटते हुए मैंने बुक एजेंसी से अख़बार ख़रीदा और बैठकर पढ़ने के लिए एक बड़े से रेस्तराँ में चला गया। अन्दर पहुँचकर देखा कि कुर्सियाँ, मेज़ और सोफ़े करीने से सज़े हुए हैं, पर न तो हॉल में कोई बैरा है और न ही काउंटर पर कोई आदमी है। मैं एक सोफ़े पर बैठकर अख़बार पढ़ने लगा। एक कुत्ता जो उस सोफ़े से सटकर लेटा था, अब वहाँ से उठकर सामने के सोफ़े पर आ बैठा और मेरी तरफ़ देखकर जीभ लपलपाने लगा। मैंने एक बार हल्के से मेज़ को थपथपाया, बैरे को आवाज़ दी, पर कोई इन्सानी सूरत सामने नहीं आयी। अलबत्ता, कुत्ता सोफ़े से मेज़ पर आकर अब और भी पास से मेरी तरफ़ जीभ लपलपाने लगा। मैं अपने और उसके बीच अख़बार का परदा करके ख़बरें पढ़ता रहा।

उस तरह बैठे हुए मुझे पन्द्रह-बीस मिनट बीत गये। आख़िर जब मैं वहाँ से उठने को हुआ, तो बाहर का दरवाज़ा खुला और पाजामा-कमीज पहने एक आदमी अन्दर दाख़िल हुआ। मुझे देखकर उसने दूर से सलाम किया और पास आकर ज़रा संकोच के साथ कहा, 'माफ कीजिएगा, मैं एक बाबू का सामान मोटर-अड्डे तक छोड़ने चला गया था। आपको आए ज़्यादा देर तो नहीं हुई?'

मैंने उसके ढीले-ढाले जिस्म पर एक गहरी नज़र डाली और उससे पूछ लिया, 'तुम यहाँ अकेले ही काम करते हो?'

'जी, आजकल अकेला ही हूँ,' उसने जवाब दिया, 'दिन-भर मैं यहीं रहता हूँ, सिर्फ़ बस के वक़्त किसी बाबू का सामान मिल जाए तो अड्डे तक दौड़ने चला जाता हूँ।'

'यहाँ का कोई मैनेजर नहीं है?' मैंने पूछा।

'जी, मालिक आप ही मैनेजर हैं,' वह बोला, 'वह आजकल अमृतसर में रहता है। यहाँ का सारा काम मेरे ज़िम्मे है।'

'तुम यहाँ चाय-वाय कुछ बनाते हो?'

'चाय, कॉफ़ी–जिस चीज़ का ऑर्डर दें, वह बन सकती है!'

'अच्छा ज़रा अपना मेन्यू दिखाना।'

उसके चेहरे के भाव से मैंने अन्दाज़ा लगाया कि वह मेरी बात नहीं समझा। मैंने उसे समझाते हुए कहा, 'तुम्हारे पास खाने-पीने की चीज़ों की छपी हुई लिस्ट होगी, वह ले आओ।'

'अभी लाता हूँ जी,' कहकर वह सामने की दीवार की तरफ़ चला गया और वहाँ से एक गत्ता उतार लाया। देखने पर मुझे पता चला कि वह उस होटल का लाइसेंस है।

'यह तो यहाँ का लाइसेंस है,' मैंने कहा।

'जी, छपी हुई लिस्ट तो यहाँ पर यही है,' वह असमंजस में पड़ गया।

'अच्छा ठीक है, मेरे लिए चाय ले आओ,' मैंने कहा।

'अच्छा जी!' वह बोला, 'मगर साहब,' और उसके स्वर में काफ़ी आत्मीयता आ गयी, 'मैं कहता हूँ, खाने का टैम है, खाना ही खाओ। चाय का क्या पीना! साली अन्दर जाकर नाड़ियों को जलाती है।'

मैं उसकी बात पर मन-ही-मन मुस्कराया। मुझे सचमुच भूख लग रही थी, इसलिए मैंने पूछा, 'सब्जी-अब्जी क्या बनाई है?'

'आलू-मटर, आलू-टमाटर, भुर्ता, भिंडी, कोफ्ता, रायता...' वह जल्दी-जल्दी लम्बी सूची बोल गया।

'कितनी देर में ले आओगे?' मैंने पूछा।

'बस जी पाँच मिनट में।'

'तो आलू-मटर और रायता ले आओ। साथ खुश्क चपाती।'

'अच्छा जी!' वह बोला, 'पर साहब,' और फिर स्वर में वही आत्मीयता लाकर उसने कहा, 'बरसात का मौसम है। रात के वक़्त रायता नहीं

खाओ, तो अच्छा है। ठंडी चीज़ है। बाज़ वक़्त नुक़सान कर जाती है।'

उसकी आत्मीयता से प्रभावित होकर मैंने कहा, 'तो अच्छा, सिर्फ़ आलू-मटर ले आओ।'

'बस, अभी लो जी, अभी लाया,' कहता हुआ वह लकड़ी के ज़ीने से नीचे चला गया।

उसके जाने के बाद मैं कुत्ते से जी बहलाने लगा। कुत्ते को शायद बहुत दिनों से कोई चाहने वाला नहीं मिला था। वह मेरे साथ ज़रूरत से ज़्यादा प्यार दिखाने लगा। चार-पाँच मिनट के बाद बाहर का दरवाज़ा फिर खुला और एक पहाड़ी नवयुवती अन्दर आ गयी। उसके कपड़ों और पीठ पर बँधी टोकरी से ज़ाहिर था कि वह वहाँ की कोयला बेचनेवाली लड़कियों में से है। सुन्दरता का सम्बन्ध चेहरे की रेखाओं से ही हो, तो उसे सुन्दर कहा जा सकता था। वह सीधी मेरे पास आ गयी और छूटते ही बोली, 'बाबूजी, हमारे पैसे आज ज़रूर मिल जाएँ।'

कुत्ता मेरे पास था, इसलिए मैं उसकी बात से घबराया नहीं।

मेरे कुछ कहने से पहले ही वह फिर बोली, 'आपके आदमी ने एक किल्टा कोयला लिया था। आज छः-सात दिन हो गये। कहता था, दो दिन में पैसे मिल जाएँगे। मैं आज तीसरी बार माँगने आयी हूँ। आज मुझे पैसों की बहुत ज़रूरत है।'

मैंने कुत्ते को बाँहों से निकल जाने दिया। मेरी आँखें उसकी नीली पुतलियों को देख रही थीं। उसके कपड़े–पाजामा, कमीज़, वास्कट, चादर और पटका–सभी बहुत मैले थे। मुझे उसकी ठोड़ी की तराश बहुत सुन्दर लगी। सोचा कि उसकी ठोड़ी के सिरे पर अगर एक तिल भी होता...।

'मेरे चौदह आने पैसे हैं,' वह कह रही थी।

और मैं सोचने लगा कि उसे ठोड़ी के तिल और चौदह आने पैसे में से एक चीज़ चुनने को कहा जाए, तो वह क्या चुनेगी?

'मुझे आज जाते हुए बाज़ार से सौदा लेकर जाना है,' वह कह रही थी।

'कल सवेरे आना!' उसी समय बैरे ने ज़ीने से ऊपर आते हुए कहा। 'रोज़ मुझसे कल सवेरे बोल देता,' वह मुझे लक्ष्य करके ज़रा गुस्से के साथ बोली, 'इससे कहिए कल सवेरे मेरे पैसे ज़रूर दे दे।'

'इनसे क्या कह रही है, ये तो यहाँ खाना खाने आये हैं,' बैरा उसकी बात पर थोड़ा हँस दिया।

इससे लड़की की नीली आँखों में संकोच की हल्की लहर दौड़ गयी। वह अब बदले हुए स्वर में मुझसे बोली, 'आपको कोयला तो नहीं चाहिए?'

'नहीं,' मैंने कहा। 'चौदह आने का किल्टा दूँगी, कोयला देख लो,' कहते हुए उसने अपनी चादर की तह में से एक कोयला निकालकर मेरी तरफ़ बढ़ा दिया।

'ये यहाँ आकर खाना खाते हैं, इन्हें कोयला नहीं चाहिए,' अब बैरे ने उसे झिड़क दिया।

'आपको खाना बनाने के लिए नौकर चाहिए?' लड़की बात करने से नहीं रुकी, 'मेरा छोटा भाई है। सब काम जानता है। पानी भी भरेगा, बरतन भी मलेगा...।'

'तू जाती है यहाँ से कि नहीं?' बैरे का स्वर अब दुतकारने का-सा हो गया। 'आठ रुपये महीने में सारा काम कर देगा,' लड़की उस स्वर को महत्त्व न देकर कहती रही, 'पहले एक डॉक्टर के घर में काम करता था। डॉक्टर अब यहाँ से चला गया है...।'

बैरे ने अब उसे बाँह से पकड़ लिया और बाहर की तरफ़ ले जाता हुआ बोला, 'चल-चल, जाकर अपना काम कर। कह दिया है, उन्हें नौकर नहीं चाहिए, फिर भी बके जा रही है!'

'मैं कल इसी वक़्त उसे लेकर आऊँगी,' लड़की ने फिर भी चलते-चलते मुड़कर कह दिया।

बैरा उसे दरवाज़े से बाहर पहुँचाकर पास आता हुआ बोला, 'कमीन जात! ऐसे गले पड़ जाती हैं कि बस...!'

'खाना अभी कितनी देर में लाओगे?' मैंने उससे पूछा।

'बस जी पाँच मिनट में लेकर आ रहा हूँ,' वह बोला, 'आटा गूँथकर सब्जी चढ़ा आया हूँ। ज़रा नमक ले आऊँ–आकर चपातियाँ बनाता हूँ।'

ख़ैर, खाना मुझे काफ़ी देर से मिला। खाने के बाद मैं काफ़ी देर ठंडी-गरम सड़क पर टहलता रहा क्योंकि पहाड़ियों पर छिटकी चाँदनी बहुत अच्छी लग रही थी। लौटते वक़्त बाज़ार के पास से निकलते हुए मैंने सोचा कि नाश्ते के लिए सरदार नत्थासिंह से दो अंडे उबलवाकर लेता चलूँ। दस बज चुके थे, पर नत्थासिंह की दुकान अभी खुली थी। मैं वहाँ पहुँचा तो नत्थासिंह और उसके दोनों बेटे पैरों के भार बैठे खाना खा रहे थे। मुझे देखते ही बसन्ते ने कहा, 'वह लो, आ गये भाई साहब!'

'हम कितनी देर इन्तज़ार कर-करके अब खाना खाने बैठे हैं!' हरबंसा बोला।

'ख़ास आपके लिए मुर्गा बनाया था।' नत्थासिंह ने कहा, 'हमने सोचा था कि भाई साहब देख लें, हम कैसा खाना बनाते हैं। ख़याल था दो-एक प्लेटें और लग जाएँगी। पर न आप आये, और न किसी और ने ही मुर्गे की प्लेट ली। हम अब तीनों खुद खाने बैठे हैं। मैंने मुर्गा इतने चाव से, इतने प्रेम से बनाया था कि क्या कहूँ! क्या पता था कि ख़ुद ही खाना पड़ेगा। ज़िन्दगी में ऐसे भी दिन देखने थे! वे भी दिन थे कि जब अपने लिए मुर्गे का शोरबा तक नहीं बचता था! और एक दिन यह है। भरी हुई पतीली सामने रखकर बैठे हैं! गाँठ से साढ़े तीन रुपये लग गये, जो अब पेट में जाकर खनकते भी नहीं! जो तेरी करनी मालिक!'

'इसमें मालिक की क्या करनी है?' बसन्ता ज़रा तीख़ा होकर बोला, 'जो करनी है, सब अपनी ही है! आप ही को जोश आ रहा था कि चढ़ाई शुरू हो गयी है, लोग आने लगे हैं, कोई अच्छी चीज़ बनानी चाहिए। मैंने कहा था कि अभी आठ-दस दिन ठहर जाओ, ज़रा चढ़ाई का रुख देख लेने दो। पर नहीं माने! हठ करते रहे कि अच्छी चीज़ से मुहूरत करेंगे तो सीजन अच्छा गुज़रेगा। लो, हो गया मुहूरत!'

उसी समय वह आदमी, जो कुछ घंटे पहले मुझे चेयरिंग क्रास पर मिला था, मेरे पास आकर खड़ा हो गया। अँधेरे में उसने मुझे नहीं पहचाना और छड़ी पर भार देकर नत्थासिंह से पूछा, 'नत्थासिंह एक ग्राहक भेजा था, आया था?'

'कौन ग्राहक?' नत्थासिंह चिढ़े-मुरझाए हुए स्वर में बोला।

'घुँघराले बालों वाला नौजवान था–मोटे शीशे का चश्मा लगाए हुए...?'

'ये भाई साहब खड़े हैं!' इससे पहले कि वह मेरा और वर्णन करता, नत्थासिंह ने उसे होशियार कर दिया।

'अच्छा आ गये हैं!" उसने मुझे लक्ष्य करके कहा और फिर नत्थासिंह की तरफ़ देखकर बोला, 'तो ला नत्थासिंह, चाय की प्याली पिला।'

कहता हुआ वह सन्तुष्ट भाव से अन्दर टीन की कुरसी पर जा बैठा। बसन्ता भट्ठी पर केतली रखते हुए जिस तरह से बुदबुदाया उससे जाहिर था कि वह आदमी चाय की प्याली ग्राहक भेजने के बदले में पीने जा रहा है! ■

-मोहन राकेश संचयन
संपादक- रवींद्र कालिया

मेला

तम्बू की कई औरतों की मिली जुली बातों से पता चला कि रात साढे तीन बजे तारा डूबने से पहले स्नान का मुहूर्त था। मासी और चार साथिने शिविर से स्नान के लिए निकलीं। उन जैसी उत्साही श्रद्धालुओं की खासी भीड थी। इसी समय शाही स्नान के लिए अखाड़े का जुलूस भी वहाँ पहुँचा। हालांकि पुलिस आम तौर पर अखाड़ों के स्नान के समय, मामूली स्नानार्थियों को जल में उतरने की इजाजत नहीं देती पर जो पहले से ही बीच धारा में स्नान कर रहे थे उनका क्या किया जाय। अखाडे के सवा सौ साधुओं ने आते ही प्रशासन के इन्तजाम की आलोचना आरम्भ कर दी। पुलिस ने माइक पर निवेदन किया कि सब स्नानार्थी गंगाजी से निकल आएँ पर इतनी जनता को निकालने में कम समय नहीं लगा। ऊपर से अखाडा प्रबन्धकों के हेकड़ तेवर। एक तरह से बीच धार से घाट तक भगदड सी मच गई। अधिकांश स्नानार्थी बूढे और अशक्त, गीले कपडे में लटपट न उनसे जल्दी धारा काट कर चला जाए न अपने कपड़े ढूंढे जायं। सैकडों बालू के बोरों के बावजूद यात्रियों के पैरों के दबाव से किनारे-किनारे खूब रपटन और कीचड़ तो थी ही। औरतें फिसल-फिसल कर वापस नदी में गिरीं। मासी उसी भगदड़ में फंस गयीं। किसी की कोहनी से चश्मे की कमानी टूट गई और लेन्स चटक गया...

मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व पहुँच गईं चरनी मासी। पहले कभी उसके घर आई नहीं थीं। पर उन्होंने पता ठिकाना ढूँढ निकाला। अंकल चिप्स की छोटी-सी डायरी में उनके पोते के हाथ की टेढी-मेढी लिखावट में दर्ज था 'सत्य प्रकाश' २२७ मालवीय नगर इलाहाबाद। उनके साथ चमडे का एक बडा-सा थैला, बिस्तरबंद और कनस्तर उतरा। और उतरीं उन जैसी ही गोल मटोल उनकी सत्संगिन, प्रसन्नी।

स्टेशन से चौक के, रिक्शे वाले ने माँगे चार, मासी ने दे डाले पाँच रुपए। तीरथ पर आई हैं, किसी का दिल दुखी न हो। पुन्न कमा लें। इतनी ठंड में दो सवारी खींच कर लाया है रिक्शेवाला।

चाय पानी के बाद उनके लिए कमरे का एक कोना ठीक किया गया तो बोली 'रहने दे घन्टे भर बाद स्वामी जी के आश्रम में जाना है।'

सत्य ने कहा, "थोडे दिन घर में रह लो मासी, वहाँ बड़ी ठंड है।"

"तीरथ करने निकली हैं, गृहस्थ विच नहीं रहना।"

"अच्छा मासी यह बताओ आप तीरथ पर क्यों निकली हो?'

"ले मैं क्या पहली बार निकली हूँ। सारे तीरथ कर डाले मैंने-हरद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, पुष्करजी, गयाजी, नासिक, उज्जैन। बस प्रयाग का यह कुम्भ रह गया था, वह भी पूरन हो जाएगा।"

"मासी आप इतने तीरथ क्यों करतीं हो?"

"ले पाप जो धोने हुए।"

भानजे की आँखों में शरारत चमकी, "कौन से पाप आपने किए हैं?' सत्ते (सत्य प्रकाश) मासी से सिर्फ़ छह साल छोटा था। नानके में उसका बचपन इसी मासी को छकाते, खिझाते बीता था।

चरनी मासी हँस पडीं, एकदम स्वच्छ दाँतों वाली भोली-भाली निष्पाप हँसी। जब वे निरुत्तर होने लगती हैं तो स्वामी जी की भाषा बोलने लगती

MONAD
UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

हैं, ''पाप सिर्फ़ वही नहीं होता जो जानकर किया जाय। अनजाने भी पाप हो जाता है, उसी को धोने।'' अनजाने पाप में उनके स्वामी जी के अनुसार बुरा बोलना, बुरा देखना, बुरा सुनना जैसे गांधीवादी निषेध हैं। सत्ते की पत्नी चारू साइंस की टीचर है। उसने कहा, ''मासी आप से भी तो लोग अनजाने में कभी बुरा बोले होंगे। जैसे जीरो से जीरो कट जाता है, पाप से पाप नहीं कट सकता क्या?''

''पाप से पाप और मैल ने मैल नहीं कटता। पाप की काट पुण्य है, जैसे मैल की काट साबुन।''

''मलमल धोऊँ दाग नहीं छूटे'' जैसे भजन के बारे में आप क्या सोचती हैं?''

''छोटे मोटे तीरथ पर यह मुश्किल आती होगी, प्रयाग का महाकुम्भ तो संसार में अनोखा है। तुम गरम पानी से नहाने वाले क्या जानो।'' मासी ने आर्या दी हट्टी के लड्डुओं का पैकेट पीपे में से निकाला और चारू के हाथ में दिया और कहा,

''तीरथ अमित कोटि सम पावन।

नाम अखिल अध नसावन।''

चारु सोचने लगी 'दसियों बरस तो मैं इन्हें जानती हूँ, जगत मासी हैं ये। हर एक के दुख में कातर, सुख में शामिल! न किसी से बैर न द्वेष, पडोस में सबसे बोलचाल, रिश्तेदारों में मिलनसार, परिवार में आदरणीय, यहाँ तक कि बहुएँ भी कभी इनकी आलोचना नहीं करतीं। ऐसी प्यारी चरनी मासी कुम्भ पर कौन से पाप धोने आई हैं कि घर की सुविधा छोड वहाँ खुले में रहेंगी।''

पर मासी नहीं मानी। सूरज डूबने से पहले चली गईं। पेशे से पत्रकार है सत्ते मगर दोस्तियाँ उसकी हर महकमें में है। इसलिए जब एस.पी. कुम्भ ने कहा, ''कवरेज'' आपके रिपोर्टर करते रहेंगे, एक दिन खुद आकर छटा तो देख जाएँ तो सबकी बाँछें खिल गईं। अभी मेला क्षेत्र में प्रवेश भी नहीं किया था सत्या और चारू ने कि मेले का समां नजर आने लगा। सोहबतिया बाग से संगम जाने वाले मार्ग पर भगवे रंग की एम्बैसडर गाडियाँ दौड रहीं थीं। पाँच सितारा आध्यात्म पेश करने वाले, विशाल जटाजूट धारण किए साधू संत, फकीर रंग बिरंगे यात्रियों के रेले में अलग नज़र आ रहे थे। दूर से संगम तट पर असंख्य बाँस बल्ली के चंदोवे तने हुए थे। कहीं रजाई में बैठे हुए भी ठिठुर रहे थे लोग, कहीं मेले में ठंडे कपडो में बूढे, जवान, अधेड स्त्री पुरुष और बच्चे एक धुन में चले जा रहे थे। सबसे अच्छा दृश्य था किसी टोले का सड़क पार करने का उपक्रम। सब एक दूसरे की धोती कुरते का छोर पकड़ कर रेलगाडी के डिब्बों की तरह चल रहे थे। ठीक ११ साल ८६ दिन बाद पड़ा है यह महाकुम्भ। शहर इलाहाबाद। अनेकानेक यज्ञ की पावन भूमि पूर्ण कुम्भ के माहाम्य से महिमा मंडित है। इस अवधि का हर दिन भक्ति, ध्यान और स्नान के लिए शुभ है। यों तो यात्री पूरे साल आते हैं पर इस माह यहाँ रिकार्ड तोड़ भीड़ है। सर्वाधिक चहल-पहल के स्थल हैं संगम-तट, भारद्वाज आश्रम, अमृतवट और अक्षयवट। लगता है वेद, पुराण, आख्यान, तीनों आप चलकर समीप आए हैं। अदभुत मेला है यह। इतने वर्ष बाद आता है। न जाने कहाँ-कहाँ से इसमें भीड़ जुट जाती है। न कोई किसी को निमन्त्रण भेजता है न बुलावा। बस लोग हैं कि उमड़े चले आते हैं।

स्नान करना हो तो बाजरा मँगवाया जाय, कप्तान साहब ने पूछा। सत्य हँस दिया। उसकी इन बातों में कोई आस्था नहीं।

''हमारा इरादा तो आज घर पर भी नहाने का नहीं था।'' उसने कहा।

''मैं सुबह ही नहा चुकी हूँ।'' चारू ने सफाई दी। मेले में मकर संक्रान्ति पर कितने नहाए इस बात पर अधिकारियों में बहस है। प्रेस और पुलिस के अलग-अलग आँकड़े हैं। अखबार में छपा है तेरह लाख तो पुलिस का दावा है छब्बीस लाख। शाम को रेडियो ने कहा दस लाख के ऊपर नहाए हैं। प्रशासन के अफसर कूद-कूद कर आँकडे सप्लाई कर रहे हैं। पत्रकार नाम का जीव देखते ही पत्रकारिता वाला गंगाजल मँगवाते हैं, ''अरे द्विवेदी जी आप अब आ रहे हो, भीड तो भोर से नहा रही है। क्या कहा, पच्चीस, अजी पैंतीस तो दुई घन्टे पहले नहा चुके थे।''

दरअसल स्नानार्थियों की घोषित संख्या से ही सरकारी बजट में डाइव मारने की गुंजाइश निकलेगी। द्विवेदीजी अपनी बंदर टोपी में से सवाल फेंकते हैं 'डूबे कितने?' कप्तान साहब के पीछे कई मातहत खडे हैं, ''एक भी नहीं। एक भी नहीं।'' सब कोरस में कहते हैं।

''ऐसा कैसे हो सकता है?''

''चार केस हुए थे, चारों को बचा लिया। एक को भी डूबने नहीं दिया गया।''

'कौमी एकता' के रिपोर्टर ने कहा, ''दीन मुहम्मद तो कह रहा था, वहाँ झूंसी के कटान के पास सात लाशें निकाली गईं आज।''

''जब आप मूँगफली वाले से डिटेल लेंगे तो यही होगा। वह तैराक को लाश बताएगा और लाश को कंकाल।''

कुल मिलाकर प्रेस को आभास मिल जाता है कि प्रशासन के अधिकारियों में अद्भुत तालमेल है। प्रशासन मुदित है। ऐसा मलाई-बजट प्रस्तुत किया है केन्द्र और प्रदेश सरकार ने कि कई पीढ़ियों का महाकुम्भ हो गया, तार दिया गंगा मैया ने। बीवी-बच्चे, रिश्तेदार, पड़ोसी सबको खुश कर दिया। मातहतों के मुँह भी हरे हो गए। बरसों के सूखे पेड़ों की सिंचाई हुई है इस बरस। गाड़ियों का काफिला पुलिस और प्रशासन की छोलदारियों में झूम रहा है सफेद हाथियों सा। जब गाड़ी सरकारी हो, ड्राइवर सरकारी हो, पेट्रोल सरकारी हो और सवारी निजी हो फिर न पूछिए मस्ती, सर्दी में भी गरमी लगती है, दिल से एक ही आवाज़ निकलती है जय माँ गंगे, जय माँ गंगे।

संगम-स्थल आज वहाँ नहीं है जहाँ पहल था। गंगा ने विशाल भू क्षेत्र को छोड दिया है। आजकल संगम पर जल टकराने की वह ध्वनि तो सुनाई नहीं देती जो भगवान राम ने प्रयाग आने पर सुनी थी, 'सरिता द्वय जल टकराने का नाद सुनो, दे रहा सुनाई।' लेकिन श्वेत-श्याम धारा का मिलन एक रोमांचकारी अनुभूति देता है। जितनी देर जल की ओर देखें मन, जीवन के रहस्यवाद का अन्वेषण करता है। नदी के विस्फारित नेत्रों जैसी नावें चली जा रहीं हैं, यात्रियों को लाती, ले जाती। कभी उनकी मचान या लकडी के फ्रेम पर खिरगल बैठ जाती है, जल पाखी। यात्री पानी में आटे की गोलियाँ और लाई डालते हैं। खिरगल कई बार हवा में लाई लपक लेती है। उनकी भगवा चोंच और पंजे देखकर लगता है या तो वे सन्यासी हो गई है या भाजपा की सदस्य।

कुम्भ क्षेत्र में साधुओं की भी त्रिपथगा है, सच्चे, पाखंडी और मक्कार। यहाँ धर्म, आस्था और आडम्बर का संगम चल रहा है। हर चीज यहाँ तीन के पहाडे में है जैसे त्रिवेणी से ही सीखा है यह। होमगार्ड, पुलिस, पी ए सी, गुरू, गोविन्द और शिव भक्त, बगुलाभक्त, और अंधभक्त।

मासी की ऐनक टूट गई। सत्ते ने कहा, 'चल कर मासी को ले आते हैं। ऐनक बनने के साथ साथ वे दो दिन घर में रिलैक्स भी कर लेंगी।' गलन, हवा और धूल को चुनौती देता मेला पहले से भी ज्यादा गुलजार हो गया था। मौनी अमावस्या दो रोज बाद थी पर यात्रियों के रेले अभी से आने

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

शुरू हो गए थे। ज्यादा स्त्रियाँ, बूढ़ी, अधेड़ और जवान। अनुपात में पुरुष कुछ कम। वे सारे के सारे महीनें टिकते भी नहीं हैं, एक दो प्रमुख स्नान दिनों का लाभ उठाकर लौट जाते हैं, वापस दुनिया की ठेकेदारी में। अपने निजी पाप पुण्य का गठ्टर अपनी स्त्रियों को थमा कर वे चल देते हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि एक दो डुबकी लगाने से उनके समस्त पाप धुल गए।

काली सड़क के किनारे-किनारे यात्री एकदम खुले आसमान के नीचे पड़े थे, अपने कम्बलों में गुड़ी-मुड़ी हुए। सामान के नाम पर एक बोरा, एक-एक कम्बल। जगह-जगह शिविरों में कीर्तन, प्रवचन चल रहा था। पंडालों में भारी भीड। जिनको ज्यादा ठंड लग रही थी वे जहाँ बैठे थे वहीं बुदबुदा रहे थे 'श्री राम जै राम जै राम।'

महामंडलेश्वर मार्ग पर पंजाब से आए संतो की धूम थी। भक्त भी सलवार सूट वाले। हर शिविर के सामने कार और वैन। कहीं-कहीं अपनी ट्रक भी। गोया एक छोटा मोटा पंजाब। सभी स्वामियों के चोंगे मंहगे टेरीकाट के दिखाई दे रहे थे। स्वामी अरूपानन्द, सरूपानन्द, केवल ानन्द, विनोदानन्द। सत्य और चारू स्वामी जी के शिविर में पहुँचे।

मासी तम्बू में नहीं थी। उन जैसी कुछ और महिलाएँ थीं। एक महिला अपनी मोटी सी रजाई में मुँह छिपाए लेटी थी। भनक पाकर उसने सिर्फ अपनी आँखें निकाली, 'अरे मेरास काका तो नहीं आया है।'

कत्थई कॉट्सबूल का सूट पहने हुई वृद्धा ने सत्य से कहा।

'तू पटेल चौक वाले दा मुंडा, ना। मास्टर जी दे घर दा।'

सत्य के हाँ करने पर वह प्रसन्न हो गई। उसने अपनी साथिन से कहा, 'मैं एस दे सारे टब्बर नूं जाणदी।'

चरनी मासी थीं नहीं। स्वामीजी का एक शिष्य पंडाल में उन्हें ढूंढ कर आया।

'वह अपनी सत्संगिन के साथ पास ही कहीं गयी हैं, आप लोग बैठो, आती ही होंगी।'

स्वामीजी की कुटी वाकई में पर्णकुटी थी। फूस के ऊपर मिट्टी की मजबूत परत लिपी थी, शामियाना प्रिन्ट के तम्बू के चारों ओर सफेद और भगवा कपडा लपेट उसे आश्रमी शक्ल दे दी गई। वहाँ गुदगुदे गद्दे, भगवा चादरें लाल और सफेद साटन की गद्दियाँ और गद्दियों पर मखमल के बने स्वास्तिक चिह्न थे। शिष्य की देह देखकर गुरू के स्वास्थ्य का अन्दाजा मिलता था।

अभी वे प्रस्तावित चाय के लिए ना ना ही कर रहे थे कि मासी वापस आ गईं।

'लै तू ऐत्थे बैठा है। मैं तैनू फोन करण पी सी ओ गई सी।'

'मुझे खबर मिल गई थी। कैसे टूटी ऐनक।'

अब तक मासी प्रसन्नी के कन्धे का सहारा लेकर मजे से काम चला लेती थीं। ऐनक का जिक्र आते ही उनके चेहरे पर उत्तेजना खिंच गई, 'मत पूछ की हो गया। मै तो मर चली सी। भला हो खाकी वर्दी वालां दा, मैनू खींच कर बाहर निकाला।'

तम्बू की कई औरतों की मिली जुली बातों से पता चला कि रात साढे तीन बजे तारा डूबने से पहले स्नान का मुहूर्त था। मासी और चार साथिने शिविर से स्नान के लिए निकलीं। उन जैसी उत्साही श्रद्धालुओं की खासी भीड थी। इसी समय शाही स्नान के लिए अखाड़े का जुलूस भी वहाँ पहुँचा।

हालांकि पुलिस आम तौर पर अखाड़ों के स्नान के समय, मामूली स्नानार्थियों को जल में उतरने की इजाजत नहीं देती पर जो पहले से ही बीच धारा में स्नान कर रहे थे उनका क्या किया जाय। अखाडे के सवा सौ साधुओं ने आते ही प्रशासन के इन्तजाम की आलोचना आरम्भ कर दी। पुलिस ने माइक पर निवेदन किया कि सब स्नानार्थी गंगाजी से निकल आएँ पर इतनी जनता को निकालने में कम समय नहीं लगा। ऊपर से अखाडा प्रबन्धकों के हेकड़ तेवर। एक तरह से बीच धार से घाट तक भगदड सी मच गई। अधिकांश स्नानार्थी बूढे और अशक्त, गीले कपडे में लटपट न उनसे जल्दी धारा काट कर चल ा जाए न अपने कपड़े ढूंढे जायं। सैकडों बाल ू के बोरों के बावजूद यात्रियों के पैरों के दबाव से किनारे-किनारे खूब रपटन और कीचड़ तो थी ही। औरतें फिसल-फिसल कर वापस नदी में गिरीं। मासी उसी भगदड़ में फंस गयीं। किसी की कोहनी से चश्मे की कमानी टूट गई और लेन्स चटक गया।

मासी को वह सारा अनुभव फिर से याद आया। सत्य घबरा गया, 'मासी तुम घर चलो, यहाँ नहीं रहना। दो दिन घर में आराम कर लो, बहुत हो गया गंगा स्नान।'

'लै दो दिन तो मौनी मस्या है। वह तो मैं जरूर नहाना।'

'ठीक है उस दिन आ जाना।'

'उस दिन आणा नहीं होना, बहुत भीड आएगी। स्वामीजी ने कहा है कोई कैम्प से जाए ना।'

सत्य तिलमिलाता रहा सन्यासियों का भी शाही स्नान हो रहा है। शाही कोरमा, शाही पुलाव तो सुना था। शाही स्नान कभी नहीं सुना। काफी देर की निष्फल बहस के बाद यह सोचा गया कि सत्य एक ऐनक बनवा कर लाए और चारू यहीं कैम्प में रुके, मासी की देखभाल के लिए। मासी ने लाख समझाया कि इसकी कोई जरूरत नहीं पर वे लोग नहीं माने। 'तुम्हारे कपड़े भी मैं ला दूंगा' सत्य ने चारू से कहा।

चारू के लिए यह एकदम नया अनुभव था। दुलर्भ और जीवंत दृष्य। मनुष्य के आचार व्यावहार, श्रद्धा-भक्ति, दिनचर्या और कैम्प अनुशासन के बीच हिचकोले लेते अनेक सवाल और बवाल। पर इन सब में भी एक अद्भुत सह-अस्तित्व की भावना।

खूब घूमी चारू। कभी किसी कैम्प में तो कभी किसी कैम्प में। माइक पर मंत्रोच्चार, भजन और उद्घोषणाओं की त्रिवेणी प्रवाहित थी। 'काली सडक पर ठहरे मनमोहन वैश्य, भूले भटके शिविर में आ कर अपने मामाजी से मिलें जो गाजीपुर से आए हैं। रामघाट के पास तीन साल की एक बच्ची मिली है जो अपना नाम बेबी बताती है। उसके माता-पिता लाल सड़क पुलिस चौकी से उसे ले जाएँ।

'कुम्भ के शुभ अवसर पर पंडाल नंबर ११ में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन है। आप सब महानुभाव पधार कर कविता का आनन्द लें।'

'सांस्कृतिक पंडाल में आज साम ऊसा नारायण का नाच होगा सभी आमंत्रित हैं, सब का स्वागत है।'

हर भाषा का भजन सुनने को मिल रहा था। मासी के कैम्प में भजनों के साथ-साथ भक्त और भक्तिनें नाच भी उठतीं 'मेरे श्याम नूँ रास विच नच लेन दे। नी, मेरे श्याम रात में भोजन के बाद अपनी-अपनी रजाइयों में समर्पित होने के बाद सत्संगिनें आध्यात्मिक गीतों की ओर उन्मुख हो जातीं 'मैं भूल गई दाता, मैं भूल गइयाँ, धर्म दा राह छड ओझड पइयाँ।

आज दी न भूली मैं कल दी न भूली। जनम-जनम दी आई हा रूदली।

सोच समझ कर देख ले मनुआ। सब नाल

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

किसी दे न जइयाँ।'

कभी कोई देवी माता का मनचला गा उठता 'ट्रिं ट्रिं, मन्दिरों से मां ने टेलीफोन किया है।'

जिसे राम की धुन लागी वह राम नाम में लगा है। यानी हर एक के लिए वहां कार्यक्रम था। चुनाव की विशाल स्वतन्त्रता। चारू को लगा बूढों के लिए रिलैक्स करने का इससे अच्छा स्थल हो ही नहीं सकता। सिर पर थी स्वामी जी की दी हुई सुरक्षा, पेट में भंडारियों का बनाया भोजन, स्नान को गंगातट और अंटी में रूपये जो परिवार ने पुण्य कमाने के नाम पर जी खोल कर दे रखे हैं। सबके चमकते चेहरे देखकर लगता था इनके लिए धर्म एक पिकनिक है और पुण्य एक गंगाजली जो ये अब अपने साथ ले जाएँगे, यादगार की तरह।

लेकिन सामान्य तीर्थयात्रियों का जीवन इतना सुखद नहीं बीत रहा था। मौनी अमावस्या की पूर्व साँझ से ही आकाश में बादल घिर आए थे। गलन बढती जा रही थी। शाम चार बजे से ही अँधेरा हो चला। लेकिन बिगडते मौसम और ठंड को धता बताते जनसमूह अभी भी उमडे चले आ रहे थे। कभी-कभी कोई यात्री दिखाई देता, पीठ पर अपनी वृद्ध, जर्जर दादी को लाद कर लगता श्रवण कुमार का छोटा भाई। कहीं कोई औरत अपने नन्हें से शिशु को आँचल की गर्मी में छिपाए पैदल चली आ रही थी। सबके मन में एक ही आस थी, मौनी अमावस्या पर बस एक डुबकी लगा लें, इन्हें पूर्ण विश्वास था कि अब तक के इनके जीवन में जो कुछ अधम-विश्राम हुआ है वह संगम की धारा में सुबह धुल-पुंछ कर उन्हें एक नया जीवन प्रदान करेगा और वे स्वर्ग में एक सीट आरक्षित करवा लेंगे।

चारू भारतीय जनमानस की आस्था के स्पर्श पाकर अभीभूत थी तो दूसरी तरफ साधू महात्माओं द्वारा परोसी जा रही पाप-पुण्य की इतनी तुरत-फुरत भुगतान पद्धति की स्थापना पर विस्मित। हर अखाडे का अपना सरंजाम। हर संत की अपनी पताका। बहुत से स्वामियों ने अपने-अपने बिल्ले जारी कर रखे थे। व्यवस्था पक्की। उनके मैनेजर चुस्त घूम रहे थे। बिना बिल्लेवाला आदमी घुस नहीं सकता था। सबके अपने चौकीदार। अखाड़े के पहरेदार हनुमान मुद्रा में गदा हाथ में लिए हुए खडे थे। नागा साधुओं के प्रहरी बरछे लिए हुए।

महंतों के शरीर पर चर्बी के टायर चढे हैं, सन्यासी कृशकाय हैं। स्त्री साधुओं के चेहरे पर पुरुषों से ज्यादा तेज है। ब्रह्मकुमारी आश्रम में खूबसूरत कमसिन लड़कियों को योगिनी वेश में देखकर चारू को पीड़ा और जिज्ञासा दोनों हुई, बिना गहरे आघात के इस उम्र में कोई सन्यास नहीं लेता। पर यह सब पहली मुलाकात में पूछा भी नहीं जा सकता।

सबसे ज्यादा ग्लानि अपने ऊपर हो रही थी चारू को। उसी के नगर में इतना जन-समुद्र उमड पडा है और वह इन सब से अनभिज्ञ रही है। मासी न आई होती तो वह यहां झांकती भी नहीं। शायद उसके अन्दर पाप और पुण्य के सवाल अभी वैसी आँधी नहीं उठाते। उसे हैरानी थी कैसे जीवन के सबसे सूक्ष्म सवालों का इतना सरल और सार्थक कारोबार चलाया जा रहा था। अच्छे से अच्छा सैनिटरी एक्सपर्ट इस स्नान अभियान के आगे निरुत्तर हो जाता कि संगम में एक डुबकी न केवल इस जन्म के वरन जन्म-जन्मान्तर के पापों का मज्जन करती है। मानो एक बार आप नहा लें तो प्रतिदिन अपने आप पाप फ्लश आउट होते रहेंगे-पापों का 'सुलभ' इन्टरनेशनल इत्यादि।

मेले में विदेशी भक्तों की भी कमी नहीं। इस्कॉन का कलात्मक शिविर तो कृष्ण भक्तों से भरा पडा है। जब सूर के भजनों का कैसेट बजता है तो वे विभोर हो कर नाचने लगते लड़खड़ाने लगते हैं।

ठंड शॉल को लगातार परास्त कर रही थी। चारू ने एक जगह रुक कर ठेले वाले से एक कप चाय ली। उसके हाथ ठंड से इस कदर काँप रहे थे कि आधा कप चाय छलक कर फैल गई। अपने पर थोडा काबू पा उसने आश्चर्य से चाय की तरफ देखा। तभी किसी ने कहा, 'मे आय हैव द प्लेजर।'

एक विदेशी युवक था। उसने अपनी तरफ ऊंगली दिखाई, 'मी हैरी जॉन' गेरूए कुर्ते और जीन्स में वह कुछ-कुछ भव्य लग रहा था।

'यहाँ आकर कैसा लगा रहा है?'

'अच्या, बोत अच्या। शांति।'

'पर यहां मेले का शोर है।'

'बट देयर्स नो वायलेंस। आई फील हैप्पी हियर।'

सबका अनुभव हैरी जैसा सुखद नहीं था। उस दिन कप्तान साहब के कैम्प में चर्चा थी उस फ्रांसीसी लडकी अनातोले की जो चरस और मोक्ष के लालच में नागाओं के शिविर में चली गयी थी। एक बाबा जो काफी देर से दम लगाए बैठा था उसके पीछे पड गया। अनातोले वहाँ से बदहवास भागी तो सीधी पुलिस कैम्प में पहुँची। दो सिपाहियों के संरक्षण में उसे उमेश तांत्रिक के शिविर में पहुँचाया गया। वह वहीं ठहरी हुई थी। गुरूजी ने उसे तत्काल कम्पोज की गोली दी, समझाया और सोने भेज दिया। दरअसल यह सारा मेला गुरू-परंपरा की स्थापना और पब्लिसिटी करता प्रतीत होता है। हर भक्त की अपने अपने गुरू में गहन आस्था। स्त्री भक्त तो गुरूओं की कृपा के लिए जान लुटाने को आतुर। मासी अपने गुरू के पास ले गईं चारू को मत्था टेकने, 'गुरूजी महराज इसे आर्शीवाद दो, बहू है आपकी।'

मासी ने पहले से समझा रखा था, चारु ने ५१ रुपये से मत्था टेका। स्वामीजी का चेहरा तरबूज की तरह लाल था। अपने सिंहासन पर असीन वे एक बडा सा तरबूज लग हरे थे। चारू को लगा यह एक दिव्य नहीं दम्भी गुरू का स्पर्श है। लेकिन वे लगातार मुस्करा रहे थे। 'पूछो, पूछो कोई जिज्ञासा हो तो पूछो' स्वामीजी ने कहा। चारू ने साहस किया, 'ये लाखों लोग अपने पाप धोने आए हैं, क्या यह एक निगेटिव एक्ट नहीं है।'

'ये पुण्य की भावना से आए हैं, इनकी भावना शुद्ध है। साधारण लोग धर्म की परिभाषा नहीं जानते लेकिन पुण्य पहचानते हैं। श्रद्धा का रूप सत्कर्म है। सत्कर्म पाजिटिव एक्ट है।' मासी असीम आदर से स्वामी जी की बात सुन रही थीं। बीच-बीच में चारू की ओर इशारा करतीं 'देख लिया मेरे गुरू महराज कितने विद्वान हैं।'

चारू ने कहा 'आपकी समस्त भक्तिनें बुजुर्ग हैं, इन्हें आप यह क्यों नही समझाते कि बेटों का विवाह करते समय ये दहेज न लें, यह भी पाप है।'

'क्या तुम्हारे विवाह में दहेज लिया गया?' स्वामी ने प्रति प्रश्न किया। 'नहीं किन्तु, किन्तु परन्तु कुछ नहीं। परिवर्तन आ रहा है, पर धीरे-धीरे आएगा। तुम्हारी यह बात गलत है कि सिर्फ बूढियाँ ही हमारे कैम्प में आती हैं। हमारे पास विचार दर्शन है। आपकी पीढी के पास धीरज की कमी है। विप्पन इनको ११ नम्बर में ले जाओ।'

११ नम्बर में स्त्री साधुओं का कैम्प था। यहां गद्दे गुदगुदे और रजाइयाँ मखमली थीं। हर स्वामिनी ने फूस की दीवार में टूथपेस्ट और टूथब्रश खोंसा हुआ और कंघा और अखबार। स्वामिनी जम्मू और पंजाब की खबरें ढूंढ कर पढ रही थीं। दो एक महिला साधू शक्ल से नई और जूनियर लग रही थीं।

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

चारू चुपचाप नमस्कार कर बाहर निकली। एक साधुनी उसके साथ आई। पूछने पर उसने नाम बताया 'प्रेमदासी।'

'असली नाम?'

'यही'

'आश्रमी नाम?'

'यही'

तब दो युवा साधू दौडे-दौडे आए, 'मैनेजर साहब ने बुलाया है। देशी घी का कनस्तर खोलना है।'

'खोल रहे हैं, कोई भागे नहीं जा रहे।' साधुनी ने कहा।

'जल्दी चलो, यज्ञ की तैयारी करो जा कर।' साधू डपट कर चले गए।

साधू स्त्री ने दाँत पीसे, सब काम हमारे मत्थे डाला हुआ है। इनको तो चिलम चढ़ाकर गरमी आ जाती है, हमारा पूरा मरन है यहाँ। हम तो टेन्ट नं० ६ में हैं। रात में बालू की ठंडक से हड्डी, हड्डी जम गई है। घर से दूर आकर मिट्टी खराब किया हमने। पता चला ये स्त्रियाँ सारा दिन सेवा में लगी रहती हैं। इनकी दिनचर्या जो प्रयाग मे है वही हरिद्वार में, वही ऋषिकेष में। तारा डूबने से पहले स्नान करती हैं। स्वामी जी देर से उठते हैं। उनके उठने तक पूरे आश्रम की सफाइयाँ, हवन की तैयारियाँ, दूध चाय का इन्तजाम।

'कितना दूध पी लेते हैं स्वामी जी?' चारू ने शरारत से पूछा।

'पाँच सेर। एक बार में सेर पक्का पीते हैं।'

'कहां से आता है?'

'भगत लोग दे जाते हैं।'

'रोज?'

'किसी दिन कम आए तो राम घाट पे घोसी है।'

'बाजार की तरफ घूमी हो बडी रौनक है?'

'नहीं सेवा से फुर्सत नहीं।'

'रामलीला देखी? मुरारी बाबू का प्रवचन सुना?'

'नहीं सेवा जो करनी हुई।'

'इतनी सेवा करनी पडे तो शादी क्या बुरी थी?' चारू ने कहा।

'आदमी किसी काम का होता तो यहां क्यो आती?'

'पति-सेवा और संत सेवा में कोई फर्क दिखता है?'

'बिल्कुल। स्वामीजी कभी हाथ नहीं उठाते, मीठा बोलते हैं। आदमी बात-बात पर लडता था। कौन जनम भर मार खाता। यहां चैन है।'

'घर कब छोडा?'

'ग्यारह साल पहले।' तभी अन्दर से स्वामी जी की आवाज आई 'प्रेमदासी।'

कंपकपाती ठंड के बावजूद मेला क्षेत्र में ठंड कुछ कम लगती थी। इतने इंसानों की एक दूसरे से निकटता, उनकी सांसो की गर्मी और असंख्य बल्बों की रोशन-गर्माहट।

इस बीच शिविर में एक भव्य सी युवती आई स्वामी मौन सुन्दरी। उसने ३१ साल की ही उम्र में संसार से विरक्त हो कर सन्यास ले लिया। लेकिन अभी वह पूरी तरह से सम्प्रदाय में समायी नहीं है। बीच-बीच में विदेश चली जाती है। उसका गेटअप प्रभावशाली था। नौ मीटर का गेरुए पालियेस्टर का गाउन देखने में ड्रेसिंग गाउन ज्यादा लग रहा था। बालों में लाल मेंहदी। होंठों पर नेचूरल शाइन कलर। नाम के विपरीत वह मुखर सुन्दरी निकली। चारू से बहुत जल्द खुल गई। उसके बोलने का अंदाज बडा आकर्षक था हालांकि बातों में परिपक्वता की कमी। आपका ध्यान जरा भी भटका कि वह कहती 'यू आर नॉट वाइब्रेटिंग विद मी।'

उसने बताया 'आय एम स्टिल सर्चिंग ए परफेक्ट गुरु। आय हैवन्ट फाउंड।'

'आप अपना समय नष्ट कर रही हैं।' चारू ने कहा। उसे अफसोस हो रहा था कि इतनी अच्छी महिला एक व्यर्थ तलाश में तल्लीन है। इसे तो जिन्दगी के बीचोंबीच होना चाहिए।'

मौन सुन्दरी ने कहा 'कल मौनी अमावस्या है। हम सब को मौन रहना है। आज सारी रात मैं बोलूँगी। तुम सुनोगी।'

'एज लांग एज आय वाइब्रेट।'

'अच्छे हैं, पर अहंकारी।'

'इससे पहले कहाँ थी?'

'स्वामी रामानन्द की साथ। वे भी अच्छे थे पर उन्हें भी देह की दानवी भूख थी। टेल यू। एक रात मैं उन्हें जे कृष्णमूर्ति की फिलासफी समझा रही थी। मुश्किल से नौ बजे थे। उन्होंने मेरे चोंगे में हाथ डाल दिया। बाय गॉड। मैने प्रोटेस्ट किया तो बोले 'कौन देखेगा। किसी को पता नहीं चलेगा।' मैंने उन्हें बदनामी का डर दिलाया। वे हंसे, 'कैम्प में सब बुढिया भक्तिन हैं, खा पी कर सोई हैं।' मै विरक्त हो गई 'मेरा शरीर मेरा है, मै इसका बदइस्तेमाल नहीं होने दूँगी।'

'क्या फर्क पडता है, जब तुम कुंवारी नहीं हो' कह कर वे मुझ पर हावी हो गए।'

'उस अनुभव के बाद तो मैं सिनिक हो गई। कनखल में उन्हें ढूंढती मैं गाती रहती 'कहाँ गिराई चढ्डी मैंने, कहाँ गिराई चोली मैं तो राम नाम मय होली।' चारू विस्मित श्रोता बनी रही, स्वामी मौन सुन्दरी ने कहा, 'जानती हो, एक मिनट को यहाँ बत्ती चली जाती है तो कितने बल ात्कार हो जाते हैं इस बीच।'

'यू आर ऑब्सेड' चारू ने कहा। उसे यह मौन नहीं मुखर सुन्दरी लगी।

'यू आर कैलस' स्वामी मौन सुन्दरी ने कहा।

मौनी अमावस्या पर भीड उमड़ी और घटाएं घुमड़ीं। आठ बजते तक बारिश शुरू हो गई। जो बारिश से पहले नहा लिए, वे तो सकुशल अपने कैम्प लौट आए। मुश्किल बाद में जाने वालों की हुई। चारू सुबह कैम्प के नल पर नहा ली। वह भी गंगा जल ही था आखिर। पर तट घूमने का मोह व नहीं छोड सकी। एक की जगह दो-दो शॉल बदन पर लपेट कर वह जाने लगी तो चरनी मासी ने टोका, 'इकल्ली कहाँ जा रही है, गँवा जाएगी।'

'मैं सुई नहीं मासी।'

'मैं चलां नाल।' 'ना बाबा, आपसे चला जाता नहीं, गिर जाएँगी।' मौन सुन्दरी ने साटन की रजाई से अपना सिल्की चेहरा निकाला, 'मैं चल ती हूँ ठहरो।' उसने झटपट गाउन पहना, लम्बे बालों की ऊँची नॉट बनाई, गेरुए रंग की चप्पलें पैर में डाली और तैयार हो गई। सन्यास में भी वह विन्यास के प्रति सचेत थी।

भक्तों के उमडते रेले देख कर वह प्रफुल्ल हो गई, 'देखो चारू मैं इस प्रोफेशन को क्यों पसंद करती हूँ। इस करोड की भीड़ में अगर पांच लाख भी मेरे अनुयायी बन जायं तो मैं दूसरी रजनीश मानी जाऊँ। है इतनी सम्भावना और किसी पेशे में ?'

'अध्यात्म को पेशे के रूप में लेना गलत है।' चारू ने आहत हो कर कहा, 'यह तो अन्दर की आस्था से विकसित होने वाली वैचारिक, आत्मिक सामर्थ्य है।'

'शिट, इट्स ए प्रोफेशन। तुम यहाँ रहती हो और तुम्हें खबर ही नहीं। यह इस समय मिलियन डॉलर प्रोफेशन है।'

ज्यादा बात करना सम्भव नहीं था। भीड़ उन्हें कभी आगे तो कभी बगल में धकेल रही थी। लोग जैसे एक धुन में बढ़े चले जा रहे थे।

रास्ते में पुलिस के पथ-प्रदर्शकों की मदद से वे काफी आगे सही दिशा में पहुँच गई। अद्भुत दृश्य उपस्थित था, एक पसारा-स्नान- ध्यान- अर्पण- तर्पण- दान- पुण्य का। एक नाववाले से पूछा। उसने किराया बताया पन्द्रह रुपये सवारी। चारू

ने कहा, 'नगरपालिका ने तो तीन रुपये सवारी रेट बनाया है।'

'तीन रुपये तो सिपाही ले लेते हैं।' नाव वाले ने कहा।

नाव यात्रियों से खचाखच भरी थी। वे दोनों भी सवार हो गईं। बारिश अब भी हो रही थी। एक तरह से सबका स्नान हो रहा था फिर भी संगम की धारा का स्पर्श पाने को आतुर थे स्नानार्थी।

नहा कर गीले कपडों में ही सब नाव पर सवार हो गईं। सबने अपनी गंगाजली भी संगम जल से भर ली। कृशकाय मल्लाह पूरी ताकत से नाव खे रहा था लेकिन नाव का संतुलन गड़बड़ा रहा था।

उन्होंने देखा स्त्रियाँ मौन भाव से बैठी थी, सबकी मुख मुद्रा शान्त, अविचलित।

अभी तट दूर ही था कि नाव एक ओर बिल्कुल ही झुक आई। लगा कि जल समाधि मिलने में बस क्षणांश का ही विलम्ब है।

मौन सुन्दरी और चारू के मुँह से चीख निकली 'बचाओ, नाव डूब जायगी भैया।' मल्लाह अपने दोनों पैरों की बीच वृहत्तर अंतराल दे दोनों ओर के चप्पू चला रहा था। शेष स्त्रियाँ कैसे बोलें, उन्होंने मौनव्रत धार रखा था इस घड़ी। पर उनकी आँखों में दहशत उतर रही थी।

मौन सुन्दरी नाव में खडी हो गई, 'अरे कोई है, नाव डूब रही है, मर जाएँगे हम सब लोग।'

स्त्रियों ने त्योरी चढ़ा कर इन दोनों महिलाओं की ओर देखा। शोर मचा कर ये अपने प्रति पाप का प्रयोजन जुटा रही थीं। साथ ही उनके व्रत में भी विघ्न डाल रही थीं। जो स्त्रियाँ उठंग छोर पर आसीन थीं, आग्नेय दृष्टि से उन्हें देख रही थीं।

तभी संकट पहचान कर रिजर्व पुलिस की मोटर बोट उनकी नाव के साथ आ सटी। सिपाहियों ने सहारा दे कर उभी सवारियों को मोटर बोट में पहुँचाया। दो वृद्धाएं पानी में फिसल गई थीं। उन्हें भी बचा लिया गया।

रिजर्व पुलिस की मोटर बोट बिना रोक टोक किनारे पहुँच गयी।

चारू ने देखा सभी सवारियाँ एक दूसरी के गले लग कर रो रही थीं, मौन रोदन, जिसमें शब्द की जगह सिसकियाँ थीं, अश्रु की जगह आँखों में भय। चारू ने खैर मनाई कि मासी बारिश के पहले आधी रात के मुहूर्त में ही स्नान कर आईं। वे साथ होतीं तो दहशत से अधमरी हो जातीं।

मौन सुन्दरी रास्ते भर वापसी में स्त्री स्नानार्थियों की मूढ़ता और निरीहिता पर खीझती रही।

'हैरानी तो यह है कि यह इन स्त्रियों का स्थायी भाव नहीं है। अपने घरों में ये अपने बेटे-बहुओं को खूब डपटती होंगी, पातों-पोतियों को घुड़कती होंगी पर इतनी सारी अग्निमुखी, उग्रमुखी औरतें, संतो के आदेश पर होंठ सिल लेंगी, जान निकल जाय पर बोलेंगी नहीं।

लौट कर शिविर का भोजन रोज से स्वादिष्ट लगा। चार-पाँच घन्टों की कवायद जो हो गई। राजमा, गोभी मटर की सब्जी और गाजर का हलवा बना था।

चारू से अलथी-पलथी मर कर नहीं बैठा जाता। जैसे ही उसने कौर तोडा, खाना परोसने वाले सेवादार ने डाँटा, 'उल्टे पांव पंगत में बैठी हो, कहाँ से आई हो। भोजन का कायदा नहीं मालूम।'

'पैरो में दर्द है, पलथी नहीं लगती।'

पास बैठी बलिष्ठ औरत ने झट उसके पांव खोल पालथी लगा दी, 'नहीं उलटे पांव पंगत में नहीं बैठ सकते।'

इस मौनी अमावस्या का महात्म्य और भी बढ गया क्योंकि यह सोमवार को पडी, सोमवती मौनी अमावस्या।

अगले दिन का तुमुल नाद पिछले दिन के मौन का उपहास करने लगा।

गौरां ने सवेरे ही विलाप करना शुरू कर दिया, 'हाय नी मैं मर जावां, कल नहां दे वेले कोई मेरी कलाई से कड़ा उतार कर ले गया। पूरे चार तोले दा सी।'

सत्या और गौरां का दिन रात का साथ था। दोनों होशियारपुर की थीं।

'तेरे हाथ में तो स्र्माल बंधा था। कडा कदौं पाया सी।'

'लै मैं झूठ बोल दी हां।' पानी गंदला था। रेत की दलदल में कमर तक धंस गई थी गौरां। दो आदमियों ने पकड कर निकाला उसे। कैम्प में लौट कर टोटी के नीचे नहाई।

'कल तो तूने बताया नहीं?'

'संतो ने कहा था चुप रहना, किद्दा दसदीं।'

सबने हिसाब मिलाया। सबके चेहरे पर बदहवासी। पन्डे से लेकर नाव वाले तक ने लूटा, बचा खुचा गंगा मैया ने। डुबकी लगाई, गले से कंठी गायब। कहाँ गई, कुछ खबर नहीं। कोई अचानक से उतार ले गया। हवा से भी हलका हाथ रहा उसका। रपट क्या लिखाएँ। कुछ पता हो तब न। कहाँ गिरी, किसने छीनी। करमां दियाँ गल्लां। लाल सड़क पर स्वामी सुरेशानन्द के शिविर के बाहर एक औरत बिलख-बिलख कर रो रही हे। नाम अमरो, जिला जालौन। पति साथ आया था। कल की धकापेल में बिछुड गया। जमां पूंजी उस उसी के पास है।

एक सिपाही उसे भूले भटके शिविर में बैठा आया। लाउडस्पीकर पर उसके पति के लिए मुनादी करवानी थी। 'एनाउन्सर ने पूछा, 'आदमी का नाम?'

'हाय दैया कैसे बोलें।'

'नाम नहीं बोलोगी तो बाजे पर क्या बोलेंगे हम, कौय आय।' अमरो धोती का सिरा दाँतो से दबा लेती है।

'अच्छा नाम नहीं ले सकती तो कुछ अता-पता दो।'

अमरो आसमान की ओर इशारा करती है।

'सूरज'

'ना'

'चाँद'

'उई दैया।'

नाम बोला जाता है चंदादीन।

दो दिन बीत गये। अमरो का पति नहीं आया। प्रशासन का कारिन्दा कहता है 'रेल का किराया देंगे, घर चली जाओ।'

'नाहीं। जब तक बुलाने नहीं आएँगे वह नहीं जायेगी, सात फेरे वाली हैं हम, कोई नचनी पतुरिया नहीं। गंगा मैया हमार भतार भेजें नहिं हम ऐहि मां कूद कर पिरान दे दैवे।'

न जाने कितनी अबोध लडकियाँ पाई गइ हैं कल। गंगा स्नान के बहाने घरवाले लाये थे घर से, और छोड गए मंझधार। जल पुलिस ने बताया- 'बाइस'।

ये सब पीड़ा के प्रसंग हैं। इनके सही आंकडे और ब्योरे प्रशासन की फाइलों में हैं।

मासी की ऐनक बन कर आ गयी है। सत्य के स्कूटर पर वापस घर जाते समय चारू सोच रही है, इतना विशाल मेला क्या कुछ भी कलातीत सिखा पायेगा या सब वैसे के वैसे अपने संकीर्ण सरोकारों में वापस हो जाएँगे। जो झूठ बोलता था, बोलता रहेगा, जो घूस लेता था, लेता रहेगा, जो मिलावट करता था, करता रहेगा, जो चोरी करता था, करता रहेगा, और जो कामचोरी करता था करता रहेगा। औरतों की जीवन में इस एक डुबकी से क्या हो जायेगा। उनकी हालत बदलेगी? गंगामाई में पाप सचमुच धुले या यह भी एक सरलीकरण है जिसकी स्वीकृति में ही फिलहाल निष्कृति है।■

- ममता कालिया

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

30% off
Enriched With
Vitamin E
Keeps eyes nourished
E
Almond Oil
Gives a smooth glide for an intense black color in one stroke
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

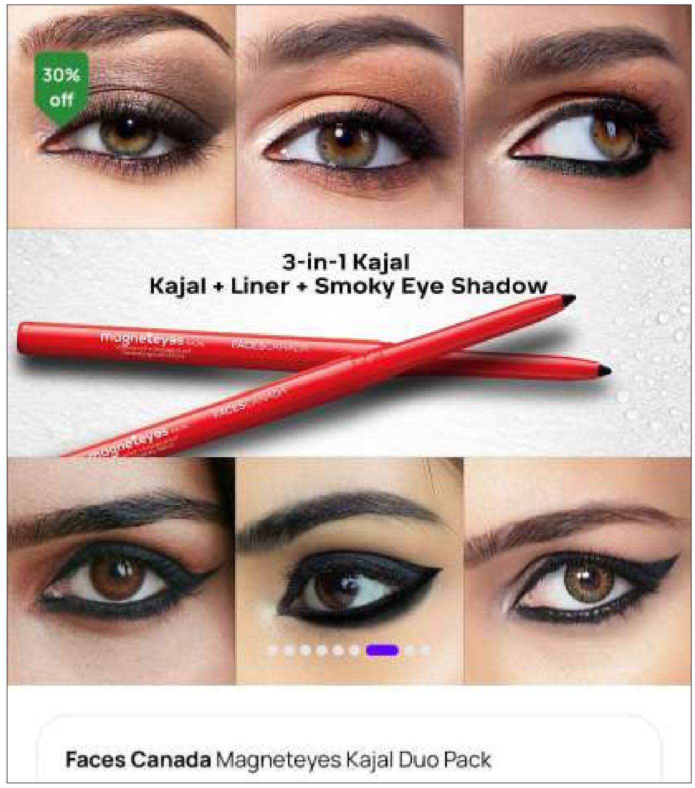
30% off
3-in-1 Kajal
Kajal + Liner + Smoky Eye Shadow
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

17% off
GOOD VIBES
GET INSTANT
GLOWING SKIN
WITH
UBTAN RANGE
UBTAN RANGE
CTSM

30% off
SUPER SAVER
DEEP CLEANSING
CHARCOAL COMBO
DEEP CLEANSING
GOOD VIBES
SKIN PURIFYING FACE WASH
Activated Charcoal
DEEP CLEANSING FACE SCRUB
PEEL OFF MASK
DEEP CLEANSING SHEET MASK
Activated Charcoal

सुप्रीम कोर्ट बोला- भारत धर्मशाला नहीं, जो सबको शरण दे: श्रीलंकाई नागरिक की याचिका खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने श्रीलंकाई शरणार्थी से जुड़े एक मामले में सोमवार को कहा कि भारत कोई धर्मशाला नहीं है। दुनियाभर से आए शरणार्थियों को भारत में शरण क्यों दें? हम १४० करोड़ लोगों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। हम हर जगह से आए शरणार्थियों को शरण नहीं दे सकते। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की बेंच ने यह टिप्पणी श्रीलंकाई तमिल नागरिक की शरण याचिका खारिज करते हुए की। दरअसल, मद्रास हाईकोर्ट ने श्रीलंकाई नागरिक को UAPA मामले में ७ साल की सजा पूरी होते ही तुरंत भारत छोड़ देने का आदेश दिया था। इसके खिलाफ उसने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर हस्तक्षेप करने की मांग की थी। याचिकाकर्ता की तरफ से आर. सुधाकरन, एस. प्रभु रामसुब्रमण्यम और वैरावन एएस ने कोर्ट में दलील दी।

यह केस एक श्रीलंकाई तमिल नागरिक का है, जिसे २०१५ में लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (LTTE) से जुड़े होने के शक में तमिलनाडु पुलिस की Q ब्रांच ने दो अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार किया था। LTTE पहले श्रीलंका में सक्रिय एक आतंकी संगठन था। २०१८ में एक निचली अदालत ने याचिकाकर्ता को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (UAPA) के तहत १० साल की सजा सुनाई थी। २०२२ में मद्रास हाई कोर्ट ने सजा को सात साल कर दिया और कहा कि सजा पूरी होने के बाद उसे देश छोड़ना होगा और निर्वासन से पहले शरणार्थी कैंप में रहना होगा याचिकाकर्ता ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि वह वीजा लेकर भारत आया है। श्रीलंका में उसकी जान को खतरा है। उसकी पत्नी और बच्चे भारत में बसे हैं, और वह तीन साल से हिरासत में है, लेकिन निर्वासन की प्रक्रिया शुरू नहीं हुई।

याचिकाकर्ता ने बताया कि वह २००९ में श्रीलंकाई युद्ध में LTTE के सदस्य के रूप में लड़ा था, इसलिए श्रीलंका में उसे 'ब्लैक-गजटेड' (वांटेड) घोषित किया गया है। अगर उसे वापस भेजा गया, तो उसे गिरफ्तारी और यातना का सामना करना पड़ सकता है। उसने यह भी कहा कि उसकी पत्नी कई बीमारियों से पीड़ित है और उसका बेटा जन्मजात हृदय रोग से जूझ रहा है।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने रोहिंग्या शरणार्थियों के डिपोर्टेशन में भी हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया था।

सुप्रीम कोर्टः 'क्या भारत को दुनिया भर के शरणार्थियों को रखना चाहिए? हमारे पास १४० करोड़ लोग हैं, यह कोई धर्मशाला नहीं है कि हम हर विदेशी को जगह दें।' याचिकाकर्ताः 'संविधान के अनुच्छेद २१ (जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा) और अनुच्छेद १९ (मौलिक अधिकार, जैसे बोलने और घूमने की आजादी) के तहत दलील दी।' जस्टिस दत्ता, 'उसकी हिरासत अनुच्छेद २१ का उल्लंघन नहीं करती, क्योंकि उसे कानून के तहत हिरासत में लिया गया। कोर्ट ने कहा कि अनुच्छेद १९ केवल भारतीय नागरिकों के लिए है।' सुप्रीम कोर्टः 'आपका यहां बसने का क्या अधिकार है?' जब वकील ने कहा कि वह शरणार्थी है और श्रीलंका में उसकी जान को खतरा है, तो कोर्ट ने सुझाव दिया कि वह किसी और देश में जाए।'

असम में बाढ़ से १० हजार लोग प्रभावित; घर-होटल ढहे, कई लोगों की मौत की आशंका

मानसून नॉर्थ ईस्ट राज्यों में पहुंच चुका है। असम, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम में भारी बारिश हो रही है। असम में पिछले २४ घंटों में कामरूप जिले में लैंडस्लाइड के चलते पांच लोगों की मौत हो गई। बाढ़ से १० हजार लोग प्रभावित हुए हैं। मिजोरम के लॉन्टलाई शहर में लैंडस्लाइड के कारण पांच घर और एक होटल ढहने से कई लोगों के मारे जाने की आशंका है। उधर सिक्किम में भारी बारिश के कारण थेंग और चुंगथांग इलाकों में भूस्खलन से कई घर मलबे में दब गए।

मेघालय में शुक्रवार को तेज बारिश से पूर्वी खासी हिल्स जिले में भी लैंडस्लाइड हुई। एक महिला की मौत हो गई। एक व्यक्ति पानी में डूब गया। मावकिनरू ब्लॉक में पेड़ के नीचे दबने से १५ साल के लड़के की जान चली गई।

जम्मू-कश्मीर में शनिवार को बर्फबारी हुई। इसके चलते गुरेज-बांदीपुरा रोड और मुगल रोड पर ट्रैफिक रोक दिया गया है। हिमाचल प्रदेश में तेज आंधी-बारिश का अलर्ट है। इसे देखते हुए स्थानीय लोगों और टूरिस्ट को एडवाइजरी जारी की गई है।

मई में मानसून की दस्तक ने बारिश का नया रिकॉर्ड बना दिया है। देश में ३० मई तक ११६.६ मिमी बारिश दर्ज हुई है जो मई में सबसे अधिक बारिश का रिकॉर्ड है। पिछला रिकॉर्ड १९९० का था, तब ११०.७ मिमी बारिश हुई थी। सामान्य रूप से मई में औसतन ६१.४ मिमी बारिश होती है।

IMF ने पाकिस्तान को ७ दिन में दूसरा कर्ज दिया:₹८४०० करोड़ की किश्त जारी

इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड (IMF) ने पाकिस्तान को १.०२ अरब डॉलर (करीब ८४०० करोड़ रुपये) की दूसरी किश्त बुधवार को जारी कर दी है। IMF ने इससे पहले ९ मई को पाकिस्तान को १ बिलियन डॉलर का कर्ज दिया था। पाकिस्तान को यह फंड एक्सटेंडेड फंड फैसिलिटी (EFF) प्रोग्राम के तहत दी गई है।

पाकिस्तान को सितंबर २०२४ में ७ बिलियन डॉलर का ३७-महीने का EFF मंजूर हुआ था, जिसमें १ बिलियन डॉलर तुरंत जारी किया गया था। आज की रकम जोड़ दें तो IMF से पाकिस्तान को EFF प्रोग्राम के तहत ३.१ बिलियन डॉलर की रकम मिल चुकी है। पाकिस्तान के केंद्रीय बैंक ने कहा कि दूसरी किश्त की राशि १६ मई तक आ जाएगी।

वहीं, पाकिस्तान में भारतीय हमले में मरने वालों की संख्या १३ हो गई है। पाकिस्तान ने मंगलवार को कबूल किया था कि भारत की ओर से लॉन्च किए गए ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तानी सेना के ११ जवान मारे गए हैं। इसके अलावा ७८ सैनिक घायल भी हुए थे। इन्हीं घायलों में से आज २ की मौत हुई है।

UCO Bank के पूर्व चेयरमैन की हुई गिरफ्तारी, ED ने ६२०० करोड़ के बैंक फ्रॉड में उठाया कदम

प्रवर्तन निदेशालय की मानें तो सुबोध कुमार गोयल ने जिन पैसों और सुविधाओं का लाभ उठाया है वो शेल कंपनियों व फर्जी लोगों के नाम से ही ट्रांसफर की गई थी। इसका मकसद पैसे की असली पहचान को छिपाना था। शेल कंपनियों के जरिए प्रॉपर्टीज को खरीदा गया। इन प्रॉपर्टीज का मालिकाना हक भी गोयल व उनके परिवार के सदस्यों के पास ही है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से कोलकाता तक प्रवर्तन निदेशाल ने बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। इस के तहत यूको बैंक के पूर्व चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर सुबोध कुमार गोयल की गिरफ्तारी हुई है। सुबोध पर आरोप है कि उन्होंने एक कंपनी को लोन दिलाने में मदद की थी। ये लोन हजारों करोड़ की कीमत का था, जिसमें धांधली कर सुबोध ने अपनी जेब भरी थी।

प्रवर्तन निदेशालय के अनुसार सुबोध कुमार गोयल पर आरोप लगा है कि यूको बैंक के सीएमडी रहने के दौरान उन्होंने कॉनकास्ट स्टील और पॉवर लिमिटेड नामक कंपनी को लोन पास करवाया था। कोलकाता स्थित इस कंपनी का लोन पास करवाने के लिए सुबोध ने मोटी रकम वसूली थी। सिर्फ कागजों तक ही नहीं बल्कि लोन की रकम जो लगभग ६,२१० करोड़ रुपये की थी उसको भी हेर फेर करके घुमा दिया गया है। वहीं मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अब प्रवर्तन निदेशालय ने दावा किया है कि इस लोन को पास कराने के लिए सुबोध कुमार गोयल ने बड़ा कमीशन हासिल किया। उन्हें ये कमीशन अलग अलग माध्यमों जैसे कैश, प्रॉपर्टी, लग्ज़री चीजें, होटल बुकिंग्स के जरिए पहुंचाया गया था। विभिन्न तरीकों से ये कमीशन इसलिए दिया गया था ताकि किसी को इसकी भनक ना लगे।

जानकारी के मुताबिक सबसे पहले सीबीआई ने इस मामले में एफआईआर दर्ज की थी। सीबीआई की कार्रवाई के बाद ईडी की जांच शुरू हुई थी। अप्रैल २०२५ में सुबोध कुमार गोयल व अन्य लोगों के ठिकानों पर छापेमारी की गई थी। इसके बाद १६ मई को ईडी की टीम ने दिल्ली से सुबोध को गिरफ्तार किया। १७ मई को उनकी पेशी कोलकाता स्थित पीएमएलए कोर्ट में की गई। कोर्ट ने २१ मई तक उन्हें प्रवर्तन निदेशालय की कस्टडी में भेजा है।

प्रवर्तन निदेशालय की मानें तो सुबोध कुमार गोयल ने जिन पैसों और सुविधाओं का लाभ उठाया है वो शेल कंपनियों व फर्जी लोगों के नाम से ही ट्रांसफर की गई थी।

सोना व्यापार योजना का लालच देकर बुजुर्ग से १.४ करोड़ की ठगी, दो लोगों पर मामला दर्ज

महाराष्ट्र के ठाणे शहर में सोना व्यापार योजना का लालच देकर दो लोगों ने एक बुजुर्ग से कथित तौर पर १.४ करोड़ रुपये से अधिक की ठगी कर ली। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी।

वागले एस्टेट प्रभाग के एक अधिकारी ने बताया कि शिकायत के आधार पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा ३१८(४) (धोखाधड़ी) और सूचना प्रौद्योगिकी (आईओ) अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि कथित धोखाधड़ी ११ अप्रैल से १९ मई के बीच हुई।

अधिकारी के अनुसार, ६२ वर्षीय शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि आरोपियों ने उसे सोने के खनन और व्यापार योजना में निवेश करने के लिए फुसलाया और खनन से एक निश्चित मासिक आय तथा सोने के व्यापार से १५ प्रतिशत रिटर्न का वादा किया। उन्होंने कहा कि शिकायतकर्ता ने दोनों आरोपियों के कहने पर विभिन्न बैंक खातों में १.४ करोड़ रुपये से अधिक धनराशि हस्तांतरित की, लेकिन उसे कोई रिटर्न नहीं मिला। अधिकारी ने बताया कि जब शिकायतकर्ता ने अपने निवेश के बारे में जानकारी लेने के लिए दोनों से संपर्क किया तो आरोपियों ने उसका फोन उठाना बंद कर दिया। अधिकारी ने कहा, "हम वित्तीय जांच कर रहे हैं। डिजिटल और बैंक लेनदेन रिकॉर्ड के जरिए आरोपियों का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

हींग की खेती...

देश में खेती को लेकर पहले कई प्रयोग किए जा चुके हैं और कई प्रयोगों में भारत को सफलता हासिल हो चुकी है. इसी के साथ देश को खेती की क्षेत्र में एक और सफलता हासिल हुई है. देश में पहली बार हिंग की खेती में सफलता दिखाई दे रही है. भारत में अभी तक हिंग की खेती संभव नहीं हो सकी थी या फीर यूं कहें की यहां एक ग्राम भी हिंग की उत्पादन नहीं हो सकी थी. हींग की खपत हमारे देश में लगभग ४० प्रतिशत है. यह शायद थोड़ी अजीब भी है की जिस देश में हींग की खपत इतनी ज्यादा है उस देश में इसकी खेती नहीं होती और इसे दूसरे देश से आयात करना पड़ता है. वहीं हींग का बाजार भाव ३५००० रुपए प्रति किलो ग्राम है.

हिंग एक सौंफ प्रजाति का पौधा है और इसकी लम्बाई १ से १.५ मीटर तक होती है. इसकी खेती जिन देशों में प्रमुख तौर पर होती हैं वो है अफगानिस्तान, ईरान, तुर्किस्तान और ब्लूचिस्तान.

हींग की खेती के लिए २० से ३० डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त होता है. भारत में यह तापमान पहाड़ी क्षेत्रों में होता है और इन क्षेत्रों में

हर सब्जी में थोड़ी सी मात्रा में पड़ कर ज्यादा असर देने वाली हींग के इस्तेमाल में भारत पहले नंबर है. मसालों से लेकर दवाइयों में हींग का इस्तेमाल किया जाता है. आप को जान कर हैरानी होगी कि हमारी रसोई की पहचान बन गई हींग का उत्पादन भारत में नहीं होता है.हींग के आयात पर हर साल करोड़ों रुपए की विदेशी करंसी बर्बाद होती है. अभी तक न ही किसी सरकार ने और न ही किसी कृषि विश्वविद्यालय ने हींग के उत्पादन की शुरुआत करने का सोचा. इस हालत से उबरने और भारत के किसानों को आय का नया विकल्प देने के लिए इंडियन कॉफी बोर्ड के सदस्य डॉ. विक्रम शर्मा ने अपनी ओर से पहल की है. डॉ. शर्मा को इसके लिए न तो सरकार की ओर से कोई मदद मिल रही है और न ही किसी निजी संगठन की ओर से. वह अपने दम पर इस मुहिम में जुटे हैं.

इसकी खेती आसानी से की जा सकती है. अन्य शब्दों में कहें तो इसकी खेती के लिए न ज्यादा ठण्ड और न ही ज्यादा गर्मी की आवश्यक्ता होती है.

सबसे मुश्किल काम है हींग का बीज हासिल करना। हींग आमतौर पर अफगानिस्तान, ईरान, इराक, तुर्किस्तान और बलूचिस्तान में उगाया जाता है। वहां के कानून के अनुसार किसी भी विदेशी को हींग का बीज बेचने पर मौत की सज़ा सुनाई जा सकती है। हींग की खेती के लिए ऐसी जमीन उपयुक्त मानी जाती है जिसमें रेत, मिट्ठी के ठेले व चिकनी अधिक हो. इसके साथ ही सूरज की धूप सीधे उस जगह पड़नी चाहिए जहां इसकी खेती की जा रही है. जहां छाया पड़ती हो वहां पर इसे नहीं उगाया जा सकता है. पौधों के बीच में ५ फीट की दूरी का होना आवश्यक है.

हींग की खेती की प्रकिया

हींग के बीज को पहले ग्रीन हाऊस में २-२ फीट की दूरी से बोया जाता है. पौध निकल ने पर इसे फिर ५-५ फीट की दूरी पर लगाया

जाता है. हाथ लगाकर जमीन की नमी को देख कर ही इसमें पानी का छिड़काव किया जा सकता है, अधिक पानी पौधे को नुकसान पहुंचा सकता है. पौधों को नमी के लिए गीली घास का भी प्रयोग किया जा सकता है, एक खास बात यह है कि हींग पौधे को पेड़ बनने के लिए ५ वर्ष का समय लगता है. इसकी जड़ों व सीधे तनों से गौंद निकाला जाता है.

हींग के प्रकार और कुछ अन्य जानकारी

हींग मुख्यः दो प्रकार की होती हैं दुधिया सफेद जिसे काबूली सुफाइद बोला जाता है और दूसरी लाल हींग. सल्फर के मौजूद होने के कारण इसकी गंध बहुत तीखी होती है. इसके भी तीन रूप होते है टिमर्स, मास और पेस्ट. यह गोल, पतला राल शुद्ध रूप में होता है जोकि ३० मि. मि. का होता है यह भूरा और फीका पीला होता है. सफेद व पीला पानी में घुलनशील है. जबकि गहरे व काले रंग वाला तेल में ही घुलता है, स्टार्च व गोंद मिला कर ईट के रूप में बेचा जाता है.

भारत में कहां हो रही है हींग की खेती?

भारत में हिंग की खेती की शुरुआत हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति से हुई है. इंडियन कॉफी बोर्ड के सदस्य डॉ.विक्रम शर्मा और हिमाचल सरकार के वजह से संभव हो पाया है. डॉ. शर्मा

ने इसके बीज को इरान और तुर्की से मंगाकर यहां इसकी बीज तैयार की है. इसके साथ ही पहांड़ी इलाकों में रह रहे किसानों के लिए अच्छी खबर यह है की वहां के किसान आसानी से हींग की खेती कर सकते हैं.

व्यसायिक हींग कैसे बनाते हैं?

हमे बाजार मे दो प्रकार की हींग मिलती है, एक डले वाली व दूसरी पाउडर वाली जो बान्धानी हींग भी कहलाती है। डले वाली हींग बनाने हेतु कच्ची हींग मे ७/८ गुना या उससे अधिक गोंद व चावल का आटा मिलाया जाता है, व उसे सुखा कर डले बनाकर पैक कर दिया जाता है। यह काफी तेज होती है व ८०/१०० रू प्रति १० ग्राम उपलब्ध है। यह अधिकतर खुल ी ही बिकती है। पाउडर वाला हींग भी कच्चे हींग मे चावल का आटा मिला कर सुखा कर पीस कर पाउडर बना कर पैक कर देते है। वास्तव मे शुद्ध हींग का फ़्लेवर इतना अधिक तेज होता है कि आप १० लोगों की दाल/सब्जी मे राई बराबर भी डालें तो तेज हो जावे। इसलिए उस हींग का सुरक्षित उपयोग करने हेतु यह मिलावट करना आवश्यक होता है। वर्तमान मे हींग की सीमित खेती हिमांचल व पंजाब में शुरू हो गई है।■

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़-पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट